Hadaaiqe Bakhshish (Hindi)

हदाइक़े बख़्शिश

आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे
दीनो मिल्लत परवानए शम्ए रिसालत शाह

इमाम अहमद रज़ा ख़ान

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब

"ह़दाइके़ बख़्शिश"

आ'ला ह़ज़रत **इमाम अह़मद रज़ा** ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के **उर्दू** और दीगर ज़बानों में तह़रीर कर्दा कलामों का मजमूआ़ है। जिसे मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने पेश किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"हुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت،اِستِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल वग़ैरा)।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या sms) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = ڦ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409
E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

एक वलिय्ये कामिल का रूह़ परवर और
ईमान अफ़्रोज़ कलाम

ह़दाइक़े बख़्शिश

1325 हि.

ह़स्सानुल हिन्द मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

नाम किताब : हृदाइके बख़्शिश
कलाम : आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना इमाम **अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن
साले इशाअत : स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 सि.हि.
नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुहम्मद अली सराय रोड (C/0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपूर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली - 580024. फ़ोन : 09343268414

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ''نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ o'' मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

''क्लामे रज़ा'' के 7 हुरूफ़ की निस्बत से किताब पढ़ने की सात निय्यतें

۞ हर बार ह़म्द व ۞ सलात और ۞ तअ़व्वुज़ व ۞ तस्मिया से किताब का आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई अ़-रबी इबारत पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व ۞ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये इस किताब का मुत़ा-लआ़ करूंगा ۞ दूसरों को येह किताब ख़रीदने की तरग़ीब दिलाऊंगा।

"तसव्वुरे मदीना कीजिये" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से ना'त पढ़ने की चौदह निय्यतें

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और ۞ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ۞ की रिज़ा के लिये ۞ हत्तल वस्अ़ बा वुज़ू ۞ क़िब्ला रू ۞ आंखें बन्द किये ۞ सर झुकाए ۞ गुम्बदे ख़ज़रा ۞ बल्कि मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर बांध कर ना'त शरीफ़ पढ़ूं ۞ सुनूंगा ۞ किसी की आवाज़ भली न लगी तो उस को ह़क़ीर जानने से बचूंगा ۞ मज़ाक़न किसी कम सुरीली आवाज़ वाले की नक़्ल नहीं उतारूंगा ۞ ना'त ख़्वां ज़ियादा और वक़्त कम हुवा तो मुख़्तसर कलाम पढ़ूंगा ۞ दूसरा सलातो सलाम पढ़ रहा होगा तो बीच में पढ़ने की जल्दी मचा कर ख़ुद शुरूअ़ न कर के उस की ईज़ा रसानी से बचूंगा ۞ इन्फ़िरादी कोशिश या माईक के ज़रीए दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, म-दनी क़ाफ़िले, म-दनी इन्आ़मात वग़ैरा की तरग़ीब दूंगा।

अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मु-तअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** और **पेम्फ़लेट** **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं।

"ना'ते रसूले पाक" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से ना'त सुनने की दस निय्यतें

۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये ۞ हत्तल वस्अ़ बा वुज़ू ۞ क़िब्ला रू ۞ आंखें बन्द किये ۞ सर झुकाए ۞ दो ज़ानू बैठ कर ۞ गुम्बदे ख़ज़रा ۞ बल्कि मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर बांध कर ना'त शरीफ़ सुनूंगा ۞ रोना आया और रियाकारी का ख़दशा महसूस हुवा तो रोना बन्द करने के बजाए रियाकारी से बचने की कोशिश करूंगा ۞ किसी को रोता तड़पता देख कर बद गुमानी नहीं करूंगा।

"ना'त ख़्वानी"

ना'त ख़्वानी हुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी और महब्बत की निशानी है और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी और महब्बत आ'ला द-रजे की इबादत और ईमान की हिफ़ाज़त का बेहतरीन ज़रीआ़ है लिहाज़ा जब भी इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में हाज़िरी हो तो बा अदब रहना चाहिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

الحمد للّٰہ علٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ⁶ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही़ कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को दिन

ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

रसूले अकरम, शहन्शाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मेरे लिये दुन्या को उठा कर इस त़रह़ मेरे सामने पेश फ़रमा दिया कि मैं तमाम दुन्या को और इस में क़ियामत तक जो कुछ भी होने वाला है उन सब को इस त़रह़ देख रहा हूं जिस त़रह़ मैं अपनी हथेली को देख रहा हूं।

(حلیة الاولیاء،حدیر بن کریب،الحدیث:۷۹۷۹،ج٦،ص۱۰۷)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

पेश लफ़्ज़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ज़ाते बा ब-रकात को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बे अन्दाज़ा उ़लूमे जलीला और अन गिनत सिफ़ाते ह़मीदा से नवाज़ा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर कमो बेश एक हज़ार कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं जिन से आप की फ़क़ाहत और तबह़्हुरे इ़ल्मी का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल नहीं, जिस फ़न और जिस मौज़ूअ़ पर लिखा तह़क़ीक़ व तदक़ीक़ के दरिया बहाए। अगर फ़न्ने शाइ़री की बात की जाए तो इस में भी आप कमाले महारत रखते थे, शरीअ़त व अदब के दाएरे में रह कर और इ़श्क़ो मस्ती में डूब कर ना'त गोई आप ही का तु़र्रए इम्तियाज़ है बड़े बड़े नामवर शु-अ़रा इस मैदान में लग़्ज़िशें खा गए, शरीअ़त की पासदारी और बारगाहे रिसालत का अदब न कर सके लेकिन आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कलाम सरासर अदब और पासदारिये शर-अ़ का नमूना है चुनान्चे आप अपने ना'तिया दीवान "**ह़दाइक़े बख़्शिश**" में फ़रमाते हैं :

जो कहे शे'रो पासे शर-अ़ दोनों का हुस्न क्यूंकर आए
ला उसे पेशे जल्वए ज़म्ज़मए रज़ा कि यूं

एक जगह यूं फ़रमाते हैं :

हूं अपने कलाम से निहायत महज़ूज़ बीजा से है اَلْمِنَّۃُ لِلّٰہ महफ़ूज़
कुरआन से मैं ने ना'त गोई सीखी या'नी रहे अहकामे शरीअत मल्हूज़

मल्फ़ूज़ात शरीफ़ में है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हक़ीक़तन ना'त शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल है जिस को लोग आसान समझते हैं, इस में तलवार की धार पर चलना है, अगर बढ़ता है तो उलूहिय्यत में पहुंचा जाता है और कमी करता है तो तन्क़ीस (या'नी शान में कमी व गुस्ताख़ी) होती है, अलबत्ता "हम्द" आसान है कि इस में रास्ता साफ़ है जितना चाहे बढ़ सकता है। ग़रज़ "हम्द" में एक जानिब अस्लन हद नहीं और "ना'त शरीफ़" में दोनों जानिब सख़्त हद बन्दी है।"

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 227, मक-त-बतुल मदीना)

मा'लूम हुवा ना'त गोई हर एक के बस की बात नहीं और येह भी समझ लेना चाहिये कि हर किसी का कलाम उठा कर पढ़ लेना भी दुरुस्त नहीं जब तक कि येह यक़ीन न हो कि येह कलाम शर-ई ग़-लती से पाक है लिहाज़ा हो सके तो उ-लमा व बुज़ुर्गों का ही कलाम पढ़ा जाए कि इसी में आफ़िय्यत है, इस ज़िम्न में शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने एक मौक़अ़ पर ना'त ख़्वां इस्लामी भाइयों को म-दनी फूल अता फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "उर्दू

कलाम सुनने के लिये मश्वरतन "ना'ते रसूल" के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात अस्माए गिरामी ह़ाज़िर हैं ﴾1﴿ इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (ह़दाइक़े बख़्शिश) ﴾2﴿ उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان (ज़ौक़े ना'त) ﴾3﴿ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मद्दाहुल ह़बीब ह़ज़रत मौलाना जमीलुर्रह़मान र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (क़बालए बख़्शिश) ﴾4﴿ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان (सामाने बख़्शिश) ﴾5﴿ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان (बयाज़े पाक) ﴾6﴿ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى (रियाज़ुन्नईम) ﴾7﴿ मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان (दीवाने सालिक)।" **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें बुज़ुर्गाने दीन के फ़ुयूज़ात से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाए। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न और पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना के निगरान साह़िब के हुक्म पर लब्बैक कहते हुए, मजलिसे **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत का चाशिनये इ़श्क़ से तर-बतर कलाम **"ह़दाइक़े बख़्शिश"** दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे

नज़र रखते हुए बेहतर अन्दाज़ में शाएअ करने की सआदत हासिल कर रही है । इस से क़ब्ल सय्यिदी आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के तर-ज-मए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" और "**जहुल मुमतार**" समेत पच्चीस[25] कुतुब शाएअ की जा चुकी हैं । ذٰلِکَ فَضْلُ اللّٰهِ

۞ **हदाइके बख़्शिश** पर काम के लिये दर्जे ज़ैल चार नुस्खे सामने रखे गए : ﴾1﴿ मक्तबए हामिदिय्या, गन्ज बख़्श रोड, मर्कज़ुल औलिया लाहोर ﴾2﴿ मदीना पब्लीशिंग कम्पनी, मेक्लोड रोड, बाबुल मदीना कराची ﴾3﴿ नाज़िर प्रिन्टिंग प्रेस, बाबुल मदीना कराची से तब्अ शुदा नुस्खा जो मौलाना मुफ़्ती ज़फ़र अली नो'मानी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه के ज़ेरे एहतिमाम 1369 हि. में शाएअ हुवा और मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा अल अज़्हरी رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने इस की तस्हीह फ़रमाई और ﴾4﴿ रज़ा एकेडमी बम्बई (मत्बूआ 1418 हि.), जिस के बारे में (सफ़हा 63 पर) मुसह्हिह ने "इख़्तितामिया" के तहत लिखा है : "ज़ेरे नज़र **हदाइके बख़्शिश** हिस्सए अव्वल तब्ए अव्वल की तरकीब के मुताबिक़ है जो हज़रते सदरुश्शरीअह عَلَيْهِ الرَّحْمَة के ज़ेरे एहतिमाम हज़रत इमाम अहमद रज़ा رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه की हयाते मुक़द्दसा में इशाअत पज़ीर हुई और हिस्सए दुवुम मौलाना ह-सनैन रज़ा عَلَيْهِ الرَّحْمَة के मुरत्तबा नुस्खे के मुताबिक़ है ।" ۞ कम्पयूटर कम्पोज़िंग का तक़ाबुल रज़ा एकेडमी वाले नुस्खे से किया गया है और हत्तल मक्दूर एहतियात बरती गई कि रस्मुल ख़त में भी

मुता-बक़त हो, दौराने तक़ाबुल जिन मक़ामात पर बयाज़ पाई वहां **हदाइके बख़्शिश** के दीगर (मज़्कूर) नुस्ख़ों से देख कर अल्फ़ाज़ लिखे हैं और हवाशी में वज़ाहत कर दी गई है। ۞ कलाम "का'बे के बदरुद्दुजा" में येह शे'र

इक तरफ़ आ'दाए दीं एक तरफ़ हासिदीं

बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोड़ों दुरूद

मक्तबए हामिदिय्या लाहोर और मदीना पब्लीशिंग कम्पनी कराची के हवाले से शामिल किया गया है नीज़ इन नुस्ख़ों में जो हवाशी ज़ाइद थे वोह भी शामिल कर के हाशिये में उन का हवाला लिख दिया है। ۞ जा बजा अल्फ़ाज़ पर ए'राब का एहतिमाम किया गया है जो कि **काफ़ी वक़्त और मेहनत तलब काम था** इस सिल्सिले में उर्दू व फ़ारसी के क़दीम अल्फ़ाज़ के लिये मुख़्तलिफ़ लुग़ात की तरफ़ मुरा-ज-अत की गई। ۞ हर कलाम की इब्तिदा नए सफ़्हे से की गई है और कलाम के पहले मिस्रए को हेडिंग के तौर पर लिखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस्तिद्आ है कि इस किताब को पेश करने में उ-लमाए किराम دَامَتْ فُيُوضُهُم ने जो मेहनत व कोशिश की उसे क़बूल फ़रमा कर इन्हें बेहतरीन जज़ा दे और इन के इल्म व अमल में ब-र-कतें अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واله وسلّم

फ़ेहरिस्त (हिस्सए अव्वल)

फ़ेहरिस्त (हिस्सए दुवुम)

हदाइक़े बख़्शिश

1325 हि.

हिस्सए अव्वल

ज़रीअ़ए क़ादिरिय्या

1305 सि.हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی
سَیِّدِ الْعَالَمِیْنَ وَ اٰلِہٖ وَ ابْنِہٖ وَ حِزْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ

वस्ले अव्वल दर ना'ते अकरम हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़्ह़ा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

धारे चलते हैं अ़त़ा के वोह है क़त़रा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वोह है ज़र्रा तेरा

फ़ैज़ है या शहे तस्नीम निराला तेरा
आप प्यासों के तजस्सुस में है दरिया तेरा

अग़्निया पलते हैं दर से वोह है बाड़ा तेरा
अस्फ़िया चलते हैं सर से वोह है रस्ता तेरा

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उ़लू क्या जानें
खुस्रवा अ़र्श पे उड़ता है फरेरा तेरा

आस्मां ख़्वान, ज़मीं ख़्वान, ज़माना मेहमान
साहि़बे खा़ना लक़ब किस का है तेरा तेरा

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के ह़बीब
या'नी महबूबो मुहि़ब में नहीं मेरा तेरा

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तल्वा तेरा

बह़्रे साइल का हूं साइल न कुंएं का प्यासा
खुद बुझा जाए कलेजा मेरा छींटा तेरा

चोर हा़किम से छुपा करते हैं यां इस के खि़लाफ़
तेरे दामन में छुपे चोर अनोखा तेरा

आंखें ठन्डी हों जिगर ताज़े हों जानें सैराब
सच्चे सूरज वोह दिलआरा है उजाला तेरा

दिल अ़बस खौ़फ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका सही भारी है भरोसा तेरा

एक मैं क्या मेरे इस्यां की ह़क़ीक़त कितनी
मुझ से सो लाख को काफ़ी है इशारा तेरा

मुफ़्त पाला था कभी काम की आ़दत न पड़ी
अब अ़मल पूछते हैं हाए निकम्मा तेरा

तेरे टुकड़ों से पले ग़ैर की ठोकर पे न डाल
झिड़कियां खाएं कहां छोड़ के सदक़ा तेरा

ख़्वारो बीमारो ख़त़ावारो गुनहगार हूं मैं
राफ़ेओ़ नाफ़ेओ़ शाफ़ेअ़ लक़ब आक़ा तेरा

मेरी तक़्दीर बुरी हो तो भली कर दे कि है
मह्वो इस्बात के दफ़्तर पे कड़ोड़ा तेरा

तू जो चाहे तो अभी मैल मेरे दिल के धुलें
कि ख़ुदा दिल नहीं करता कभी मैला तेरा

किस का मुंह तकिये कहां जाइये किस से कहिये
तेरे ही क़दमों पे मिट जाए येह पाला तेरा

तूने इस्लाम दिया तूने जमाअ़त में लिया
तू करीम अब कोई फिरता है अ़तिय्या तेरा

मौत सुनता हूं सितम तल्ख़ है ज़हराबए नाब
कौन ला दे मुझे तल्वों का ग़साला तेरा

दूर क्या जानिये बदकार पे कैसी गुज़रे
तेरे ही दर पे मरे बे-कसो तन्हा तेरा

तेरे सदक़े मुझे इक बूंद बहुत है तेरी
जिस दिन अच्छों को मिले जाम छलक्ता तेरा

ह़-रमो त़यबा व बग़दाद जिधर कीजे निगाह
जोत पड़ती है तेरी नूर है छनता तेरा

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उस को शफ़ीअ़
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

वस्ले दुवुम दर मन्क़बत आक़ाए अकरम हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा

क्या दबे जिस पे ह़िमायत का हो पन्जा तेरा
शेर को ख़त़रे में लाता नहीं कुत्ता तेरा

तू ह़ुसैनी ह़–सनी क्यूं न मुह़िय्युद्दीं हो
ऐ ख़िज़र मज्मए़ बह़्रैन है चश्मा तेरा

क़समें[1] दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा

मुस्त़फ़ा के तने बे साया का साया देखा
जिस ने देखा मेरी जां जल्वए ज़ैबा तेरा

۱: سیّدنا رضی اللہ تعالٰی عنہ فرمودکہ مرا ی فرمایند: یا عَبْدَ الْقَادِر بِحَقِّیْ عَلَیْكَ كُلْ وَ بِحَقِّیْ عَلَیْكَ اِشْرَبْ۔ الخ۔۱۲ منہ

इब्ने ज़हरा को मुबारक हो अ़रूसे कु़दरत
क़ादिरी पाएं तसद्दुक़ मेरे दूल्हा तेरा

क्यूं न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यूं न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

न-बवी मींह अ़-लवी फ़स्ल बतूली गुलशन
ह़-सनी फूल हुसैनी है महक्ना तेरा

न-बवी ज़िल अ़-लवी बुर्ज बतूली मन्ज़िल
ह़-सनी चांद हुसैनी है उजाला तेरा

न-बवी ख़ुर अ़-लवी कोह बतूली मा'दिन
ह़-सनी ला'ल हुसैनी है तजल्ला तेरा

बहूरो बर[1] शहरो कुरा सहलो हुज़ुन दश्तो चमन
कौन से चक पे पहुंचता नहीं दा'वा तेरा

हुस्ने निय्यत हो ख़ता फिर कभी करता ही नहीं
आज़्माया है यगाना है दोगाना तेरा

---

[1]: حضرتِ شیخ محیُّ الدّین عبدالقادر رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ دَر اَوائلِ عمر اَصحاب را می فرمود کہ اولیاءِ عراق مَرا تسلیم کردہ اَند، بعد از مُدَّتے فرمود کہ ایں زمانِ جمیع زمینِ شرق و غرب و بَرّ و بَحر و سَہل و جَبل مَرا تسلیم کردہ اَند، و ہیچ ولی از اَولیاء نماند دران وقت مگر آں کہ بَر شیخ آمد و تسلیم کرد اُو را بہ قُطبیّت ۔۱۲ تحفہ قادریہ۔

अर्ज़े अह्वाल की प्यासों में कहां ताब मगर
आंखें ऐ अब्रे करम तक्ती हैं रस्ता तेरा

मौत नज़्दीक गुनाहों की तहें मैल के ख़ोल
आ बरस जा कि नहा धो ले येह प्यासा तेरा

आब आमद वोह कहे और मैं तयम्मुम बरख़ास्त
मुश्ते ख़ाक अपनी हो और नूर का अहला तेरा

जान तो जाते ही जाएगी क़ियामत येह है
कि यहां मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा

तुझ से दर, दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गरदन में भी है दूर का डोरा तेरा

इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
ह़श्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा

मेरी क़िस्मत की क़सम खाएं सगाने बग़दाद
हिन्द में भी हूं तो देता रहूं पहरा तेरा

तेरी इज़्ज़त के निसार ऐ मेरे ग़ैरत वाले
आह सद आह कि यूं ख़्वार हो बिरवा तेरा

बद सही, चोर सही, मुजरिमो नाकारा सही
ऐ वोह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा

मुझ को रुस्वा भी अगर कोई कहेगा तो यूंही
कि वोही ना, वोह रज़ा बन्दए रुस्वा तेरा

हैं रज़ा यूं न बिलक तू नहीं जय्यिद[1] तो न हो
सय्यिदे जय्यिदे हर दह्र है मौला तेरा

फ़ख़्रे आक़ा में रज़ा और भी इक नज़्मे रफ़ीअ़
चल लिखा लाएं सना ख़्वानों में चेहरा तेरा

ख़ाके मदीना

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''غُبَارُ الْمَدِيْنَةِ شِفَاءٌ مِّنَ الْجُذَامِ.'' या'नी मदीनए मुनव्वरह की ख़ाके पाक जुज़ाम के लिये शिफ़ा है।

(الجامع الصغير للسيوطی، الحديث:٥٧٥٣، ص٣٥٥، دار الكتب العلمية بيروت)

---

[1] اشارہ بقولِ او رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ "وَاِنْ لَّمْ يَكُنْ مُرِيْدِیْ جَيِّدًا فَاَنَا جَيِّدٌ" ۔۱۲

वस्ले सिवुम दर हुस्ने मुफ़ा-ख़रत अज़ सरकारे क़ादिरिय्यत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

तू है वोह ग़ौस कि हर ग़ौस है शैदा तेरा
तू है वोह ग़ैस कि हर ग़ैस है प्यासा तेरा

सूरज[1] अगलों के चमक्ते थे चमक कर डूबे
उफ़ुक़े नूर पे है मेह्‌र हमेशा तेरा

मुर्ग़[2] सब बोलते हैं बोल के चुप रहते हैं
हां असील एक नवासन्ज रहेगा तेरा

जो[3] वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

۱: ترجمۂ آنچہ فرمود رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ: شعر " اَفَلَتْ شُمُوْسُ الْاَوَّلِیْنَ وَشَمْسُنَا اَبَدًا عَلٰی اُفُقِ الْعُلٰی لَا تَغْرُبُ " ۔۱۲

۲: ترجمۂ آنچہ سیّدی تاج العارفین ابوالوفا قُدِّسَ سِرُّہ سیدُنا رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ گفت: "کُلُّ دِیْكٍ یَصِیْحُ وَ یَسْکُتُ اِلَّا دِیْکُكَ فَاِنَّہٗ یَصِیْحُ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃ" ہر خروس بانگ کند و خاموش شود جز خروسِ شما کہ تا قیامت در بانگ است ۔۱۲

۳: ترجمہ ارشادِ حضرت خضر عَلَیْہِ السَّلام: "مَا اتَّخَذَ اللّٰہُ وَلِیًّا کَانَ اَوْ یَکُوْنُ اِلَّا وَھُوَ مُتَاَدِّبٌ مَعَہٗ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃ۔"

ब क़सम कहते हैं शाहाने सरीफ़ैनो[1] ह़रीम
कि हुवा है न वली हो कोई हम्ता तेरा

तुझ[2] से और दह्‌र के अक़्ताब से निस्बत कैसी
क़ुत़्ब ख़ुद कौन है ख़ादिम तेरा चेला तेरा

सारे अक़्त़ाबे जहां करते हैं का'बे का त़वाफ़
का'बा करता है त़वाफ़े दरे वाला तेरा

और परवाने हैं जो होते हैं का'बे पे निसार
शम्अ़ इक तू है कि परवाना है का'बा तेरा

श-जरे सर्वे सही किस के उगाए तेरे
मा'रिफ़त फूल सही किस का खिलाया तेरा

۱: یعنی حضرت ابو عَمر و عثمان صریفینی و ابو محمد عبد الحق حریمی کہ ہر دو از اولیاءِ معاصرینِ حضور سیّدنا بودہ اند رَضِیَ اللہ تعالٰی عَنْہُ وَعَنْھُمْ ۔۱۲

۲: ردِ آں بے خرد آنکہ ہمہ اقطاب را با سیّدنا رَضِیَ اللہ تعالٰی عَنْہُ مساوی المرتبہ دانند، وایں دو شعر ترجمہ آں اشعار است کہ از حضور سیّدنا رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ نقل می کنند کما ذکرنا فی المجیر المعظم. واللہ تعالٰی اعلم ۔۱۲

तू है नौशाह बराती है येह सारा गुलज़ार
लाई है फ़स्ले समन गूंध के सेहरा तेरा

डालियां झूमती हैं रक़्से ख़ुशी जोश पे है
बुलबुलें झूलती हैं गाती हैं सेहरा तेरा

गीत कलियों की चटक ग़ज़लें हज़ारों की चहक
बाग़ के साज़ों में बजता है तराना तेरा

सफ़े हर शजरा में होती है सलामी तेरी
शाख़ें झुक झुक के बजा लाती हैं मुजरा तेरा

किस गुलिस्तां को नहीं फ़स्ले बहारी से नियाज़
कौन से सिल्सिले में फ़ैज़ न आया तेरा

नहीं किस चांद की मन्ज़िल में तेरा जल्वए नूर
नहीं किस आईने के घर में उजाला तेरा

राज किस शह्र में करते नहीं तेरे ख़ुद्दाम
बाज किस नह्र से लेता नहीं दरिया तेरा

मज़्रए चिश्तो बुख़ारा[1] व इ़राक़ो[2] अजमेर
कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा

और मह़बूब[3] हैं, हां पर सभी यक्सां तो नहीं
यूं तो मह़बूब है हर चाहने वाला तेरा

उस को सो फ़र्द सरापा ब फ़रागत ओढ़ें
तंग हो कर जो उतरने को हो नीमा तेरा

गरदनें झुक गईं सर बिछ गए दिल लौट गए
कश्फ़े[4] साक़ आज कहां येह तो क़दम था तेरा

۱: حضرت خواجہ بہاء الحق والدّین نقشبند قدس سرہ العزیز بخاری است۔۱۲

۲: حضرت شیخ الشیوخ سہروردی قدس سرہ از اولیاءِ عراق است سیّدنا رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ اورا فرمود: "اَنْتَ اٰخِرُ الْمَشْھُوْرِیْن بِالْعِرَاق"۔۱۲

۳: ردِ جاہلانیکہ ہمہ محبوباں را ہمسرِ حضرت سیّدنا رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ دانند۔

۴: یقول کانھم لکمال الدھش ذھبت اذھا نھم اِلی قولہٖ تعالٰی: "یَوم یکشف عنَ سَاقٍ" مَعَ انّہ لم یَکنْ اِلّاجلوۃ العبد لا تجلی المعبود کما تسجد اھل الجنۃ حین یَرون نور رداء عثمان رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ عند تحولہ من بیت الی بیت زعمًا منھم انہ قد تجلی لھم ربھم تبارک و تعالٰی کما ورد فی الحدیث۔۱۲

ताजे फ़र्क़े उ़-रफ़ा किस के क़दम को कहिये !
सर जिसे बाज दें वोह पाउं है किस का तेरा

सुक्र के जोश में जो हैं वोह तुझे क्या जानें
ख़िज़्र के होश से पूछे कोई रुत्बा तेरा

आदमी अपने ही अह़वाल पे करता है क़ियास
नशे वालों ने भला सुक्र निकाला तेरा

वोह तो छूटा ही कहां चाहें कि हैं ज़ेरे ह़ज़ीज़
और हर औज से ऊंचा है सितारा तेरा

दिले आ'दा को रज़ा तेज़ नमक की धुन है
इक ज़रा और छिड़कता रहे ख़ामा तेरा

वस्ले चहारुम दर मुना-फ़-ह़ते आ'दा व इस्तिआ़नत अज़ आक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

अल अमां क़ह्‌र है ऐ ग़ौस वोह तीखा तेरा
मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा

बादलों से कहीं रुकती है कड़क्ती बिजली
ढालें छंट जाती हैं उठता है जो तैग़ा तेरा

अ़क्स का देख के मुंह और बिफर जाता है
चार आईना के बल का नहीं नेज़ा तेरा

कोह सरमुख हो तो इक वार में दो परकाले
हाथ पड़ता ही नहीं भूल के ओछा तेरा

इस पे येह क़ह्‌र कि अब चन्द मुख़ालिफ़ तेरे
चाहते हैं कि घटा दें कहीं पाया तेरा

अ़क्ल होती तो ख़ुदा से न लड़ाई लेते
येह घटाएं उसे मन्ज़ूर बढ़ाना तेरा

وَرَفَعۡنَا لَکَ ذِکۡرَکَ का है साया तुझ पर
बोलबाला है तेरा ज़िक्र है ऊंचा तेरा

मिट गए मिटते हैं मिट जाएंगे आ'दा तेरे
न मिटा है न मिटेगा कभी चरचा तेरा

तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआला तेरा

सुम्मे[1] क़ातिल है ख़ुदा की क़सम उन का इन्कार
मुन्किरे फ़ज़्ले हुज़ूर आह येह लिख्खा तेरा

मेरे[2] सय्याफ़ के ख़न्जर से तुझे बाक नहीं
चीर कर देखे कोई आह कलेजा तेरा

इब्ने ज़हरा से तेरे दिल में हैं येह ज़हर भरे
बल बे ओ मुन्किरे बेबाक येह ज़हरा तेरा

बाज़े अश्हब की गुलामी से येह आंखें फिरनी
देख उड़ जाएगा ईमान का तोता तेरा

---

۱ : قَالَ مَولانَاوَسَیِّدُنَا رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ "تَکْذِیْبُکُمْ لِیْ سُمٌّ قَاتِلٌ لِاَدْیَانِکُمْ وَ سَبَبٌ لِذِھَابِ دُنْیَاکُمْ وَ اُخْرَاکُمْ"۔۱۲

۲ : قَالَ سَیِّدُنَا رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ "اَنَا سَیَّافٌ اَنَا قَتَّالٌ اَنَا سَلَّابُ الاَحْوَالِ"۔۱۲

शाख़ पर बैठ के जड़ काटने की फ़िक्र में है
कहीं नीचा न दिखाए तुझे शजरा तेरा

हक़ से बद हो के ज़माने का भला बनता है
अरे मैं ख़ूब समझता हूं मुअ़म्मा तेरा

सगे[1] दर क़ह्‌र से देखे तो बिखरता है अभी
बन्द बन्दे बदन ऐ रू-बहे दुन्या तेरा

ग़रज़ आक़ा से करूं अ़र्ज़ कि तेरी है पनाह
बन्दा मजबूर है ख़ातिर[2] पे है क़ब्ज़ा तेरा

हुक्म नाफ़िज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ़ तेरी
दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा

जिस को ललकार दे आता हो तो उलटा फिर जाए
जिस को चुमकार ले हिर फिर के वोह तेरा तेरा

---

۱ : اشارہ بقصۂ صنعائی۔۱۲

۲ : ثبوتِ روشن ایں معنی دررسالہ مصنف فقہ شہنشاہ "وَاَنَّ الْقُلُوْبَ بِیَدِ الْمَحْبُوْبِ بِعَطَاءِ اللّٰہ"۔ مطبوعہ "مطبع اہل سنت وجماعت بریلی" باید دید۔

कुन्जियां दिल की ख़ुदा ने तुझे दीं ऐसी कर
कि येह सीना हो महब्बत का ख़ज़ीना तेरा

दिल पे कन्दा हो तेरा नाम कि वोह दुज़्दे रजीम
उलटे ही पाउं फिरे देख के तुग़रा तेरा

नज़्अ़ में, गोर में, मीज़ां पे, सरे पुल पे कहीं
न छुटे हाथ से दामाने मुअ़ल्ला तेरा

धूप महशर की वोह जां-सोज़ क़ियामत है मगर
मुत़्मइन हूं कि मेरे सर पे है पल्ला तेरा

बह्जत उस सिर की है जो "**बह्जतुल असरार**" में है
कि फ़लक[1]-वार मुरीदों पे है साया तेरा

ऐ रज़ा चीस्त ग़म अर जुम्ला जहां दुशमने तुस्त
कर्दा अम मा मने ख़ुद क़िब्लए ह़ाजाते रा

---

[1] : "اِنَّ یَدِیْ عَلٰی مُرِیْدِیْ کَالسَّمَاءِ عَلَی الْاَرْضِ" قَالَ سَیِّدُنَا رَضِیَ اللہ تعالٰی عَنْہُ ۱۲

हम ख़ाक हैं और ख़ाक ही मावा है हमारा

हम[1] ख़ाक हैं और ख़ाक ही मावा है हमारा
ख़ाकी तो वोह आदम जदे आ'ला है हमारा

अल्लाह हमें ख़ाक करे अपनी त़लब में
येह ख़ाक तो सरकार से तमग़ा है हमारा

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आ़लम
उस ख़ाक पे क़ुरबां दिले शैदा है हमारा

ख़म हो गई पुश्ते फ़लक इस त़ा'ने ज़मीं से
सुन हम पे मदीना है वोह रुत्बा है हमारा

उस ने ल-क़बे ख़ाक शहन्शाह से पाया
जो ह़ैदरे कर्रार कि मौला है हमारा

---

۱ : دَر ردِّ مبتدعی کہ بعض علمائے کرام رانسبت بہ پیرِ خود گفتہ بُود۔ چہ نسبت خاک را باعالمِ پاک ۱۲۔

ऐ मुद्दइयो ! ख़ाक को तुम ख़ाक न समझे
इस ख़ाक में मदफ़ूं शहे बत़्हा है हमारा

है ख़ाक से ता'मीर मज़ारे शहे कौनैन
मा'मूर इसी ख़ाक से क़िब्ला है हमारा

हम ख़ाक उड़ाएंगे जो वोह ख़ाक न पाई
आबाद रज़ा जिस पे मदीना है हमारा

❁❁❁❁❁

हज़रते अबू इब्राहीम तजीबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का फ़रमान है : ''हर मोमिन पर वाजिब है कि जब वोह रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करे या उस के सामने आप का ज़िक्र किया जाए तो वोह पुर सुकून हो कर नियाज़ मन्दी व आ़जिज़ी का इज़्हार करे और अपने क़ल्ब में आप की अ़-ज़मत और हैबतो जलाल का ऐसा ही तअस्सुर पैदा करे जैसा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रू बरू ह़ाज़िर होने की सूरत में आप के जलालो हैबत से मु-तअस्सिर होता ।''

(الشفاء، ج۲،ص۳۲)

ग़म हो गए बे शुमार आक़ा

ग़म हो गए बे शुमार आक़ा
बन्दा तेरे निसार आक़ा

बिगड़ा जाता है खेल मेरा
आक़ा आक़ा संवार आक़ा

मंजधार पे आ के नाव टूटी
दे हाथ कि हूं मैं पार आक़ा

टूटी जाती है पीठ मेरी
लिल्लाह येह बोझ उतार आक़ा

हलका है अगर हमारा पल्ला
भारी है तेरा वक़ार आक़ा

मजबूर हैं हम तो फ़िक्र क्या है
तुम को तो है इख़्तियार आक़ा

मैं दूर हूं तुम तो हो मेरे पास
सुन लो मेरी पुकार आक़ा

मुझ सा कोई ग़मज़दा न होगा
तुम सा नहीं ग़म गुसार आक़ा

गिर्दाब में पड़ गई है कश्ती
डूबा डूबा, उतार आक़ा

तुम वोह कि करम को नाज़ तुम से
मैं वोह कि बदी को आ़र आक़ा

फिर मुंह न पड़े कभी ख़ज़ां का
दे दे ऐसी बहार आक़ा

जिस की मरज़ी ख़ुदा न टाले
मेरा है वोह नामदार आक़ा

है मुल्के ख़ुदा पे जिस का क़ब्ज़ा
मेरा है वोह कामगार आक़ा

सोया किये ना-बकार बन्दे
रोया किये ज़ार ज़ार आक़ा

क्या भूल है इन के होते कहलाएं
दुन्या के येह ताजदार आक़ा

उन के अदना गदा पे मिट जाएं
ऐसे ऐसे हज़ार आक़ा

बे अब्रे करम के मेरे धब्बे
لَا تَغْسِلُهَا[1] الْبِحَار आक़ा

इतनी रह़मत रज़ा पे कर लो
لَا يَقْرُبُهُ[2] الْبَوَار आक़ा

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बर शरीफ़ पर जिस जगह आप बैठते थे ख़ास उस जगह पर अपना हाथ फिरा कर अपने चेहरे पर मस्ह़ किया करते थे।

(الشفاء بتعریف حقوق المصطفی، فصل ومن اعظامه واکباره...الخ، ج۲، ص ۵۷)

---

1 : तरजमा : इन्हें समुन्दर न धोएं। 12

2 : हलाकत इस के पास न आए। 12

मुह़म्मद मज़्हरे कामिल है ह़क़ की शाने इ़ज़्ज़त का

मुह़म्मद मज़्हरे कामिल है ह़क़ की शाने इ़ज़्ज़त का
नज़र आता है इस कसरत में कुछ अन्दाज़ वह़्दत का

येही है अस्ले आ़लम माद्दए ईजादे ख़ल्क़त का
यहां वह़्दत में बरपा है अ़जब हंगामा कसरत का

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का
ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

गुनह मग़्फ़ूर, दिल रोशन, ख़ुनुक आंखें, जिगर ठन्डा
تعالی اللہ ! माहे त़यबा आ़लम तेरी त़ल्अ़त का

न रख्खी गुल के जोशे हुस्न ने गुलशन में जा बाक़ी
चटक्ता फिर कहां गुन्चा कोई बाग़े रिसालत का

बढ़ा येह सिल्सिला रह़मत का दौरे ज़ुल्फ़े वाला में
तसल्सुल काले कोसों रह गया इ़स्यां की ज़ुल्मत का

सफ़े मातम उठे, ख़ाली हो ज़िन्दां, टूटें ज़न्जीरें
गुनहगारो ! चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का

सिखाया है येह किस गुस्ताख़ ने आईने को या रब
नज़ारा रूए जानां का बहाना कर के ह़ैरत का

इधर उम्मत की ह़सरत पर उधर ख़ालिक़ की रह़मत पर
निराला तौ़र होगा गर्दिशे चश्मे शफ़ाअ़त का

बढ़ीं इस दरजा मौजें कस्रते अफ़्ज़ाले वाला की
कनारा मिल गया इस नह्र से दरियाए वह्दत का

ख़मे ज़ुल्फ़े नबी साजिद है मेह़राबे दो अब्रू में
कि या रब तू ही वाली है सियह काराने उम्मत का

मदद ऐ जोशिशे गिर्या बहा दे कोह और सह़रा
नज़र आ जाए जल्वा बे ह़िजाब उस पाक तुरबत का

हुए कम-ख़्वाबिये हिज्रां में सातों पर्दे कम-ख़्वाबी
तसव्वुर ख़ूब बांधा आंखों ने अस्तारे तुरबत का

यक़ीं है वक़्ते जल्वा लग़्ज़िशें पाए निगह पाए
मिले जोशे सफ़ाए जिस्म से पा बोस ह़ज़रत का

यहां छिड़का नमक वां मर्हमे काफ़ूर हाथ आया
दिले ज़ख़्मी नमक परवर्दा है किस की मलाहत का

इलाही मुन्तज़िर हूं वोह ख़िरामे नाज़ फ़रमाएं
बिछा रख्खा है फ़र्श आंखों ने कम-ख़्वाबे बसारत का

न हो आक़ा को सज्दा आदमो यूसुफ़ को सज्दा हो
मगर सद्दे ज़राएअ़ दाब है अपनी शरीअ़त का

ज़बाने ख़ार किस किस दर्द से उन को सुनाती है
तड़पना दश्ते तयबा में जिगर अफ़गार फ़ुरक़त का

सिरहाने उन के बिस्मिल के येह बेताबी का मातम है
शहे कौसर तरह्हुम तिश्ना जाता है ज़ियारत का

जिन्हें मरक़द में ता ह़श्र उम्मती कह कर पुकारोगे
हमें भी याद कर लो उन में सदक़ा अपनी रह़मत का

वोह चमकें बिज्लियां या रब तजल्लीहाए जानां से
कि चश्मे तूर का सुरमा हो दिल मुश्ताक़ रूयत का

रज़ाए ख़स्ता ! जोशे बह्रे इस्यां से न घबराना
कभी तो हाथ आ जाएगा दामन उन की रह़मत का

लुत़्फ़ उन का आ़म हो ही जाएगा

लुत़्फ़ उन का आ़म हो ही जाएगा
शाद हर नाकाम हो ही जाएगा

जान दे दो वा'दए दीदार पर
नक़्द अपना दाम हो ही जाएगा

शाद है फ़िरदौस या'नी एक दिन
क़िस्मते ख़ुद्दाम हो ही जाएगा

याद रह जाएंगी येह बे बाकियां
नफ़्स तू तो राम हो ही जाएगा

बे निशानों का निशां मिटता नहीं
मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

यादे गेसू ज़िक्रे ह़क़ है आह कर
दिल में पैदा[1] लाम हो ही जाएगा

1 : गेसू दो हैं और इन की तश्बीह "लाम" और लफ़्ज़े "आह" के दिल में दो लाम पैदा होने से कलिमा अल्लाह आशकारा होता है।12

एक दिन आवाज़ बदलेंगे येह साज़
चह्चहा कोहराम हो ही जाएगा

साइलो ! दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इन्आ़म हो ही जाएगा

यादे अब्रू कर के तड़पो बुलबुलो !
टुकड़े टुकड़े दाम हो ही जाएगा

मुफ़्लिसो ! उन की गली में जा पड़ो
बाग़े ख़ुल्द इक्राम हो ही जाएगा

गर यूंही रह़मत की तावीलें रहीं
मद्ह़ हर इल्ज़ाम हो ही जाएगा

बादा ख़्वारी का समां बंधने तो दो
शैख़ दुर्द आशाम हो ही जाएगा

ग़म तो उन को भूल कर लिपटा है यूं
जैसे अपना काम हो ही जाएगा

मिट ! कि गर यूंही रहा क़र्ज़े ह़यात
जान का नीलाम हो ही जाएगा

आ़क़िलो ! उन की नज़र सीधी रहे
बोरों का भी काम हो ही जाएगा

अब तो लाई है शफ़ाअ़त अ़फ़्व पर
बढ़ते बढ़ते आ़म हो ही जाएगा

ऐ रज़ा हर काम का इक वक़्त है
दिल को भी आराम हो ही जाएगा

पाउं अच्छा हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का पाउं सुन हो गया, लोगों ने उन को इस मरज़ के इलाज के तौ़र पर येह अ़मल बताया कि तमाम दुन्या में आप को सब से ज़ाइद जिस से मह़ब्बत हो उस को याद कर के पुकारिये येह मरज़ जाता रहेगा । येह सुन कर आप ने ''یامحمداہ'' का ना'रा मारा और आप का पाउं अच्छा हो गया । (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) (الشفاء، ج۲، ص۲۳)

لَمْ یَاتِ نَظِیْرُکَ فِیْ نَظَرٍ

لَمْ[1] یَاتِ نَظِیْرُکَ فِیْ نَظَرٍ मिस्ले तो न शुद पैदा जाना
जग राज को ताज तोरे सर सो है तुझ को शहे दो सरा जाना

اَلْبَحْرُ[2] عَلَا وَالْمَوْجُ طَغٰی मन बे कसो तूफ़ां होशरुबा
मंजधार में हूं बिगड़ी है हवा मोरी नय्या पार लगा जाना

یَاشَمْسُ[3] نَظَرْتِ اِلٰی لَیْلٰی चू ब तय्बा रसी अ़र्ज़े बुकुनी
तोरी जोत की झल झल जग में रची मेरी शब ने न दिन होना जाना

لَکَ[4] بَدْرٌ فِی الْوَجْهِ الْاَجْمَلُ ख़त़ हालए मह ज़ुल्फ़ अब्रे अजल
तोरे चन्दन चंद्र परो कुन्डल रह़मत की भरन बरसा जाना

اَنَا فِیْ[5] عَطَشٍ وَّسَخَاکَ اَتَمّ ऐ गेसूए पाक ऐ अब्रे करम
बरसन हारे रिमझिम रिमझिम दो बूंद इधर भी गिरा जाना

---

1 : तरजमा : हुज़ूर का नज़ीर किसी को नज़र न आया। 2 : तरजमा : समुन्दर ऊंचा हुवा और मौजें तुग़यानी पर हैं। 3 : तरजमा : ऐ आफ़्ताब तूने मेरी रात देखी। इस में इशारा है कि मेरी रात आफ़्ताब के सामने भी रात ही रही। 12
4 : तरजमा : हुज़ूर के लिये सब से ज़ियादा ख़ूब सूरत चेहरे में एक चौदहवीं रात का चांद है। 12 5 : तरजमा : मैं प्यास में हूं और तेरी सख़ावत सब से ज़ियादा कामिल व ताम है। 12

يَاقَافِلَتِی[1] زِیْدِیْ اَجَلَکْ रह़मे बर ह़स्रते तिश्ना लबक
मोरा जि-यरा लरजे दरक दरक त़यबा से अभी न सुना जाना

وَاهًا[2] لِسُوَیْعَاتٍ ذَهَبَتْ आं अ़हदे हुज़ूरे बार गहत
जब याद आवत मोहे कर न परत दरदा वोह मदीने का जाना

اَلْقَلْبُ[3] شَجٍ وَّالْهَمُّ شُجُوْن दिल ज़ार चुनां जां ज़ेरे चुनूं
पत अपनी बिपत में का से कहूं मेरा कौन है तेरे सिवा जाना

اَلرُّوْحُ[4] فِدَاکَ فَزِدْ حَرْقًا यक शो'ला दिगर बरज़न इ़श्क़ा
मोरा तन मन धन सब फूंक दिया येह जान भी प्यारे जला जाना

बस ख़ामए ख़ाम नवाए रज़ा न येह त़र्ज़ मेरी न येह रंग मेरा
इर्शादे अह़िब्बा नात़िक़ था नाचार इस राह पड़ा जाना

❁❁❁❁❁

---

1 : तरजमा : ऐ मेरे क़ाफ़िले अपने क़ियाम की मुद्दत ज़ियादा कर ।12
2 : तरजमा : आह अफ़्सोस वोह चन्द क़लील घड़ियां कि गुज़र गईं ।12
3 : तरजमा : दिल ज़ख़्मी है और परेशानियां रंग रंग की हैं।
4 : तरजमा : जान तेरे कुरबान अपनी सोज़िश ज़ियादा कर।

न आस्मान को यूं सर कशीदा होना था

न आस्मान को यूं सर कशीदा होना था
हुज़ूरे ख़ाके मदीना ख़मीदा होना था

अगर गुलों को ख़ज़ां ना रसीदा होना था
कनारे ख़ारे मदीना दमीदा होना था

हुज़ूर उन के ख़िलाफ़े अदब थी बेताबी
मेरी उमीद ! तुझे आरमीदा होना था

नज़ारा ख़ाके मदीना का और तेरी आंख
न इस क़दर भी क़मर शोख़ दीदा होना था

कनारे ख़ाके मदीना में राह़तें मिलतीं
दिले ह़ज़ीं ! तुझे अश्के चकीदा होना था

पनाहे दामने दश्ते ह़रम में चैन आता
न सब्रे दिल को ग़ज़ाले रमीदा होना था

येह कैसे खुलता कि उन के सिवा शफ़ीअ़ नहीं
अ़बस न औरों के आगे तपीदा होना था

हिलाल कैसे न बनता कि माहे कामिल को
सलामे अब्रूए शह में ख़मीदा होना था

لَاَمۡلَئَنَّ جَهَنَّم[1] था वा'दए अज़ली
न मुन्किरों का अ़बस बद अ़क़ीदा होना था

नसीम क्यूं न शमीम उन की त़यबा से लाती
कि सुब्हे़ गुल को गिरीबां दरीदा होना था

टपक्ता रंगे जुनूं इ़श्के़ शह में हर गुल से
रगे बहार को निश्तर रसीदा होना था

बजा था अ़र्श पे ख़ाके मज़ारे पाक को नाज़
कि तुझ सा अ़र्श नशीं आफ़रीदा होना था

---

1 : मैं बेशक ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा। (القرآن)12।

(मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर)

गुज़रते जान से इक शोरे ''या ह़बीब'' के साथ
फ़ुग़ां को नालए ह़ल्क़े बुरीदा होना था

मेरे करीम गुनह ज़ह्र है मगर आख़िर
कोई तो शहदे शफ़ाअ़त चशीदा होना था

जो संगे दर पे जबीं साइयों में था मिटना
तो मेरी जान शरारे जहीदा होना था

तेरी क़बा के न क्यूं नीचे नीचे दामन हों
कि ख़ाकसारों से यां कब कशीदा होना था

रज़ा जो दिल को बनाना था जल्वा गाहे ह़बीब
तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

शोरे महे नौ सुन कर तुझ तक मैं दवां आया

शोरे महे नौ सुन कर तुझ तक मैं दवां आया
साक़ी मैं तेरे सदक़े मै दे र-मज़ां आया

इस गुल के सिवा हर फूल बा गोशे गिरां आया
देखे ही गी ऐ बुलबुल जब वक़्ते फ़ुग़ां आया

जब बामे तजल्ली पर वोह नय्यरे जां आया
सर था जो गिरा झुक कर दिल था जो तपां आया

जन्नत को ह़रम समझा आते तो यहां आया
अब तक के हर इक का मुंह कहता हूं कहां आया

त़यबा के सिवा सब बाग़ पामाले फ़ना होंगे
देखोगे चमन वालो ! जब अ़हदे ख़ज़ां आया

सर और वोह संगे दर आंख और वोह बज़्मे नूर
ज़ालिम को वत़न का ध्यान आया तो कहां आया

कुछ ना'त के त़ब्क़े का आ़लम ही निराला है
सक्ते में पड़ी है अ़क़्ल चक्कर में गुमां आया

जलती थी ज़मीं कैसी थी धूप कड़ी कैसी
लो वोह क़दे बे साया अब साया कुनां आया

त़यबा से हम आते हैं कहिये तो जिनां वालो
क्या देख के जीता है जो वां से यहां आया

ले त़ौक़े अलम से अब आज़ाद हो ऐ क़ुमरी
चिठ्ठी लिये बख़्शिश की वोह सर्वे रवां आया

नामे से रज़ा के अब मिट जाओ बुरे कामो
देखो मेरे पल्ले पर वोह अच्छे मियां आया

बदकार रज़ा ख़ुश हो बद काम भले होंगे
वोह अच्छे मियां प्यारा अच्छों का मियां आया

मा'रूज़ा बा'दे वापसी ज़ियारते मुतह्हरा बार अव्वल 1296 सि.हि.

ख़राब हाल किया दिल को पुर मलाल किया
तुम्हारे कूचे से रुख़्सत किया निहाल किया

न रूए गुल अभी देखा न बूए गुल सूंघी
क़ज़ा ने ला के क़फ़स में शिकस्ता बाल किया

वोह दिल कि ख़ूं शुदा अरमां थे जिस में मल डाला
फ़ुग़ां कि गोरे शहीदां को पाएमाल किया

येह राय क्या थी वहां से पलटने की ऐ नफ़्स
सितम-गर उलटी छुरी से हमें हलाल किया

येह कब की मुझ से अ़दावत थी तुझ को ऐ ज़ालिम
छुड़ा के संगे दरे पाक सर वबाल किया

चमन से फेंक दिया आशियानए बुलबुल
उजाड़ा ख़ानए बेकस बड़ा कमाल किया

तेरा सितम ज़दा आंखों ने क्या बिगाड़ा था
येह क्या समाई कि दूर इन से वोह जमाल किया

हु़ज़ूर उन के ख़याले वत़न मिटाना था
हम आप मिट गए अच्छा फ़राग़ बाल किया

न घर का रख्खा न उस दर का हाए नाकामी
हमारी बे बसी पर भी न कुछ ख़याल किया

जो दिल ने मर के जलाया था मन्नतों का चराग़
सितम कि अ़र्ज़ रहे सर-सरे ज़वाल किया

मदीना छोड़ के वीराना हिन्द का छाया
येह कैसा हाए ह़वासों ने इख़्तिलाल किया

तू जिस के वासित़े छोड़ आया त़यबा सा मह़बूब
बता तो उस सितम आरा ने क्या निहाल किया

अभी अभी तो चमन में थे चह्चहे नागाह
येह दर्द कैसा उठा जिस ने जी निढाल किया

इलाही सुन ले रज़ा जीते जी कि मौला ने
सगाने कूचा में चेहरा मेरा बह़ाल किया

बन्दा मिलने को क़रीबे ह़ज़्रते क़ादिर गया

बन्दा मिलने को क़रीबे ह़ज़्रते क़ादिर गया
लम्अ़ए बातिन में गुमने जल्वए ज़ाहिर गया

तेरी मरज़ी पा गया सूरज फिरा उलटे क़दम
तेरी उंगली उठ गई मह का कलेजा चिर गया

बढ़ चली तेरी ज़िया अन्धेर आ़लम से घटा
खुल गया गेसू तेरा रह़मत का बादल घिर गया

बंध गई तेरी हवा सावह में ख़ाक उड़ने लगी
बढ़ चली तेरी ज़िया आतश पे पानी फिर गया

तेरी रह़मत से सफ़िय्युल्लाह[1] का बेड़ा पार था
तेरे सदक़े से नजिय्युल्लाह[2] का बजरा तिर गया

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका
तेरी हैबत थी कि हर बुत थर-थरा कर गिर गया

1 : ह़ज़्रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام। (मक्तबए ह़ामिदिय्या)

2 : ह़ज़्रते नूह़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام। (मक्तबए ह़ामिदिय्या)

मोमिन उन का क्या हुवा अल्लाह उस का हो गया
काफ़िर उन से क्या फिरा अल्लाह ही से फिर गया

वोह कि उस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
वोह कि उस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

मुझ को दीवाना बताते हो मैं वोह हुशियार हूं
पाउं जब तौ़फ़े ह़रम में थक गए सर फिर गया

रह़्मतुल्लिल आ़-लमीं आफ़त में हूं कैसी करूं
मेरे मौला मैं तो इस दिल से बला में घिर गया

मैं तेरे हाथों के सदक़े कैसी कंकरियां थीं वोह
जिन से इतने काफ़िरों का दफ़्अ़तन मुंह फिर गया

क्यूं जनाबे बू हुरैरा[1] था वोह कैसा जामे शीर
जिस से सत्तर साहि़बों का दूध से मुंह फिर गया

वासित़ा प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया

1 : ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान मश्हूर राविये ह़दीस व सरख़ील अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा।
(मक्तबए ह़ामिदिय्या)

अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला
फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

अल्लाह अल्लाह येह उ़लुव्वे ख़ा़से अ़ब्दिय्यत रज़ा
बन्दा मिलने को क़रीबे ह़ज़रते क़ादिर गया

ठोकरें खाते फिरोगे उन के दर पर पड़ रहो
क़ाफ़िला तो ऐ रज़ा अव्वल गया आख़िर गया

कामिल ईमान

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उस के बाप उस की औलाद और तमाम लोगों से बढ़ कर मह़बूब न हो जाऊं।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب حب الرسول من الایمان،الحدیث:۱۵،ج۱،ص۱۷)

ने'मतें बांटता जिस सम्त वोह ज़ीशान गया

ने'मतें बांटता जिस सम्त वोह ज़ीशान गया
साथ ही मुन्शिये रह़मत का क़लम-दान गया

ले ख़बर जल्द कि गै़रों की त़रफ़ ध्यान गया
मेरे मौला मेरे आक़ा तेरे क़ुरबान गया

आह वोह आंख कि नाकामे तमन्ना ही रही
हाए वोह दिल जो तेरे दर से पुर अरमान गया

दिल है वोह दिल जो तेरी याद से मा'मूर रहा
सर है वोह सर जो तेरे क़दमों पे क़ुरबान गया

उन्हें जाना उन्हें माना न रखा गै़र से काम
لِلّٰہِ الْحَمْد मैं दुन्या से मुसल्मान गया

और तुम पर मेरे आक़ा की इ़नायत न सही
नज्दियो ! कल्मा पढ़ाने का भी एह़सान गया

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया

उफ़ रे मुन्किर येह बढ़ा जोशे तअ़स्सुब आख़िर
भीड़ में हाथ से कम बख़्त के ईमान गया

जानो दिल होशो ख़िरद सब तो मदीने पहुंचे
तुम नहीं चलते रज़ा सारा तो सामान गया

अश्क जारी हो जाते

ज़िक्रे रसूल के वक़्त सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم पर रिक्क़त त़ारी हो जाती और अश्क जारी हो जाते चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज़्किरा फ़रमाते थे तो आंखों से आंसू रवां हो जाते थे।

(الطبقات الکبری لابن سعد،تذکرۃ عبد اللّٰہ بن عمر بن خطاب، ج٤،ص١٢٧، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

काश ! हमें भी येह सआ़दत नसीब हो जाती !

रोने वाली आंखें मांगो, रोना सब काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

ताबे मिरआते सहर गर्दे बयाबाने अ़रब

ताबे मिरआते सहर गर्दे बयाबाने अ़रब
ग़ाज़ए रूए क़मर दूदे चराग़ाने अ़रब

अल्लाह अल्लाह बहारे च-मनिस्ताने अ़रब
पाक हैं लौसे ख़ज़ां से गुलो रैहाने अ़रब

जोशिशे अब्र से ख़ूने गुले फ़िरदौस करे
छेड़ दे रग को अगर ख़ारे बयाबाने अ़रब

तिश्नए नहरे जिनां हर अ़-रबिय्यो अ़-जमी !
लबे हर नहरे जिनां तिश्नए नैसाने अ़रब

तौक़े ग़म आप हवाए परे क़ुमरी से गिरे
अगर आज़ाद करे सर्वे ख़िरामाने अ़रब

मेह्र मीज़ां में छुपा हो तो ह़मल में चमके
डाले इक बूंद शबे दै में जो बाराने अ़रब

अ़र्श से मुज़्दए बिल्क़ीसे शफ़ाअ़त लाया
त़ाइरे सिदरा नशीं मुर्ग़े सुलैमाने अ़रब

हुस्ने[1] यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अ़रब

कूचे कूचे में महक्ती है यहां बूए क़मीस
यूसुफ़िस्तां है हर इक गोशए कन्आ़ने अ़रब

बज़्मे क़ुदसी में है यादे लबे जां बख़्श हुज़ूर
आ़लमे नूर में है चश्मए ह़ैवाने अ़रब

---

1 : इस शे'र के दोनों मिस्रओ़ं में एक एक लफ़्ज़ ऐसे तक़ाबुल से है कि मुफ़ीद तफ़्ज़ीले हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है (1) वहां हुस्न यहां नाम (2) वहां कटना कि अ़-दमे क़स्द पर दलालत करता है यहां कटाना कि क़स्द व इरादा बताता है (3) वहां मिस्र यहां अ़रब कि ज़मानए जाहिलिय्यत में इस की सरकशी व ख़ुद-सरी मश्हूर थी (4) वहां अंगुश्त यहां सर (5) वहां ज़नान यहां मर्दान (6) वहां उंग्लियां कटीं कि एक बार वुक़ूअ़ बताता है और यहां कटाते हैं कि इस्तिमरार पर दलील है ।12

पाए जिब्रील ने सरकार से क्या क्या अल्क़ाब
ख़ुस्रवे ख़ैले मलक, ख़ादिमे सुल्ताने अ़रब

बुलबुलो नील-परो कब्क बनो परवानो !
महो ख़ुरशीद पे हंसते हैं चराग़ाने अ़रब

हूर से क्या कहें मूसा से मगर अ़र्ज़ करें
कि है ख़ुद हुस्ने अज़ल ता़लिबे जानाने अ़रब

क-रमे ना'त के नज़्दीक तो कुछ दूर नहीं
कि रज़ाए अ़-जमी हो सगे ह़स्साने अ़रब

कितनी मह़ब्बत है ?

ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से किसी ने सुवाल किया कि आप को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कितनी मह़ब्बत है ? आप ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे माल, हमारी औलाद, हमारे बाप, हमारी मां और सख़्त प्यास के वक़्त पानी से भी बढ़ कर हमारे नज़्दीक मह़बूब हैं। (الشفاء،ج٢،ص٢٢)

फिर उठा वल्वलए यादे मुग़ीलाने अ़रब

फिर उठा वल्वलए यादे मुग़ीलाने अ़रब
फिर खिंचा दामने दिल सूए बयाबाने अ़रब

बाग़े फ़िरदौस को जाते हैं हज़ाराने अ़रब
हाए सह़राए अ़रब हाए बयाबाने अ़रब

मीठी बातें तेरी दीने अ़जम ईमाने अ़रब
न-मकीं हुस्न तेरा जाने अ़जम शाने अ़रब

अब तो है गिर्यए ख़ूं गौहरे दामाने अ़रब
जिस में दो ला'ल थे ज़हरा के वोह थी काने अ़रब

दिल वोही दिल है जो आंखों से हो ह़ैराने अ़रब
आंखें वोह आंखें हैं जो दिल से हों क़ुरबाने अ़रब

हाए किस वक़्त लगी फांस अलम की दिल में
कि बहुत दूर रहे ख़ारे मुग़ीलाने अ़रब

फ़स्ले गुल लाख न हो वस्ल की रख आस हज़ार
फूलते फलते हैं बे फ़स्ल गुलिस्ताने अ़रब

सदके़ होने को चले आते हैं लाखों गुलज़ार
कुछ अ़जब रंग से फूला है गुलिस्ताने अ़रब

अ़न्दलीबी पे झगड़ते हैं कटे मरते हैं
गुलो बुलबुल को लड़ाता है गुलिस्ताने अ़रब

सदके़ रह़मत के कहां फूल कहां ख़ार का काम
ख़ुद है दामन कशे बुलबुल गुले ख़न्दाने अ़रब

शादिये ह़श्र है सदके़ में छुटेंगे के़दी
अ़र्श पर धूम से है दा'वते मेहमाने अ़रब

चरचे होते हैं येह कुम्ह्लाए हुए फूलों में
क्यूं येह दिन देखते पाते जो बयाबाने अ़रब

तेरे बे दाम के बन्दे हैं रईसाने अ़जम
तेरे बे दाम के बन्दी हैं हज़ाराने अ़रब

हश्त ख़ुल्द आएं वहां कस्बे लत़ाफ़त को रज़ा
चार दिन बरसे जहां अब्रे बहाराने अ़रब

जोबनों पर है बहारे चमन आराइये दोस्त

जोबनों पर है बहारे चमन आराइये दोस्त
ख़ुल्द का नाम न ले बुलबुले शैदाइये दोस्त

थक के बैठे तो दरे दिल पे तमन्नाइये दोस्त
कौन से घर का उजाला नहीं ज़ैबाइये दोस्त

अ़र्सए ह़श्र कुजा मौक़िफ़े मह़मूद कुजा
साज़ हंगामों से रखती नहीं यक्ताइये दोस्त

मेह्र किस मुंह से जिलौ दारिये जानां करता
साए के नाम से बेज़ार है यक्ताइये दोस्त

मरने वालों को यहां मिलती है उ़म्रे जावेद
ज़िन्दा छोड़ेगी किसी को न मसीह़ाइये दोस्त

उन को यक्ता किया और ख़ल्क़ बनाई या'नी
अन्जुमन कर के तमाशा करें तन्हाइये दोस्त

का'बा व अ़र्श में कोहराम है नाकामी का
आह किस बज़्म में है जल्वए यक्ताइये दोस्त

हुस्ने बे पर्दा के पर्दे ने मिटा रख्खा है
ढूंडने जाएं कहां जल्वए हरजाइये दोस्त

शौक़ रोके न रुके पाउं उठाए न उठे
कैसी मुश्किल में हैं अल्लाह तमन्नाइये दोस्त

शर्म से झुकती है मेह़राब कि साजिद हैं हुज़ूर
सज्दा करवाती है का'बे से जबीं साइये दोस्त

ताज वालों का यहां ख़ाक पे माथा देखा
सारे दाराओं की दारा हुई दाराइये दोस्त

त़ूर पर कोई, कोई चर्ख़ पे येह अ़र्श से पार
सारे बालाओं पे बाला रही बालाइये दोस्त

اَنْتَ فِيْهِمْ[1] ने अ़दू को भी लिया दामन में
ऐ़शे जावेद मुबारक तुझे शैदाइये दोस्त

रन्जे आ'दा का रज़ा चारा ही क्या है जब उन्हें
आप गुस्ताख़ रखे ह़िल्मो शिकैबाइये दोस्त

1 : قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: "وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ" अल्लाह इन काफ़िरों पर भी अ़ज़ाब न करेगा जब तक ऐ रह़मते आ़लम तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो। ۱۲منه غفرله

तूबा में जो सब से ऊंची नाज़ुक सीधी निकली शाख़

तूबा में जो सब से ऊंची नाज़ुक सीधी निकली शाख़
मांगूं ना'ते नबी लिखने को रूहे कुदुस से ऐसी शाख़

मौला गुलबुन, रहमत ज़रा, सिब्तैन[1] उस की कलियां फूल
सिद्दीक़ो फ़ारूक़ो उस्मां, हैदर हर इक उस की शाख़

शाखे क़ामते शह में ज़ुल्फ़ो चश्मो रुख़्सारो लब हैं
सुम्बुल, नरगिस, गुल, पंखड़ियां कुदरत की क्या फूली शाख़

अपने इन बाग़ों का सदक़ा वोह रहमत का पानी दे
जिस से नख़्ले दिल में हो पैदा प्यारे तेरी विला की शाख़

यादे रुख़ में आहें कर के बन में मैं रोया आई बहार
झूमीं नसीमें, नैसां बरसा, कलियां चटकीं, महकी शाख़

ज़ाहिरो बातिन अव्वलो आख़िर ज़ैबे फ़ुरूओ ज़ैने उसूल
बाग़े रिसालत में है तू ही गुल, गुन्चा, जड़, पत्ती शाख़

आले अहमद ख़ुज़ बि-यदी या सय्यिद हम्ज़ा कुन मददी
वक़्ते ख़ज़ाने उम्रे रज़ा हो बर्गे हुदा से न आरी शाख़

❁❁❁❁❁

1 : हज़राते हसन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا । (मक्तबए हामिदिय्या)

ज़हे इ़ज़्ज़तो ए 'तिलाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ज़हे इ़ज़्ज़तो ए'तिलाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم
कि है अ़र्शे ह़क़ ज़ेरे पाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

मकां अ़र्श उन का फ़लक फ़र्श उन का
मलक ख़ादिमाने सराए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम
ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

अ़जब क्या अगर रह़्म फ़रमा ले हम पर
ख़ुदाए मुह़म्मद बराए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

मुह़म्मद बराए जनाबे इलाही !
जनाबे इलाही बराए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

बसी इ़त्रे मह़बूबिये किब्रिया से
अ़बाए मुह़म्मद क़बाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

बहम अ़ह्द बांधे हैं वस्ले अबद का
रिज़ाए ख़ुदा और रिज़ाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

दमे नज़्अ़ जारी हो मेरी ज़बां पर
मुह़म्मद मुह़म्मद ख़ुदाए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم

अ़साए कलीम अज़्दहाए ग़ज़ब था
गिरों का सहारा अ़साए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
मैं कुरबान क्या प्यारी प्यारी है निस्बत
येह आने ख़ुदा वोह ख़ुदाए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
मुह़म्मद का दम ख़ास बहरे ख़ुदा है
सिवाए मुह़म्मद बराए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
ख़ुदा उन को किस प्यार से देखता है
जो आंखें हैं मह़्वे लिक़ाए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
जिलौ में इजाबत ख़वासी में रह़मत
बढ़ी किस तुज़ुक से दुआ़ए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया
बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
इजाबत का सेहरा इ़नायत का जोड़ा
दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم
रज़ा पुल से अब वज्द करते गुज़रिये
कि है रब्बे सल्लिम सदाए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

❁❁❁❁❁

ऐ शाफ़ेए उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर

ऐ शाफ़ेए उमम शहे ज़ी जाह ले ख़बर
लिल्लाह ले ख़बर मेरी लिल्लाह ले ख़बर

दरिया का जोश, नाव न बेड़ा न नाख़ुदा
मैं डूबा, तू कहां है मेरे शाह ले ख़बर

मन्ज़िल कड़ी है रात अंधेरी मैं ना बलद
ऐ ख़िज़्र ले ख़बर मेरी ऐ माह ले ख़बर

पहुंचे पहुंचने वाले तो मन्ज़िल मगर शहा
उन की जो थक के बैठे सरे राह ले ख़बर

जंगल दरिन्दों का है मैं बे यार शब क़रीब
घेरे हैं चार सम्त से बद ख़्वाह ले ख़बर

मन्ज़िल नई अज़ीज़ जुदा लोग ना शनास
टूटा है कोहे ग़म में परे काह ले ख़बर

वोह सख़्तियां सुवाल की वोह सूरतें मुहीब
ऐ ग़मज़दों के ह़ाल से आगाह ले ख़बर

मुजरिम को बारगाहे अ़दालत में लाए हैं
तक्ता है बे कसी में तेरी राह ले ख़बर

अहले अ़मल को उन के अ़मल काम आएंगे
मेरा है कौन तेरे सिवा आह ले ख़बर

पुरख़ार राह, बरह्ना पा, तिश्ना आब दूर
मौला पड़ी है आफ़ते जांकाह ले ख़बर

बाहर ज़बानें प्यास से हैं, आफ़्ताब गर्म
कौसर के शाह كَثَّرَهُ اللّٰه ले ख़बर

माना कि सख़्त मुजरिमो नाकारा है रज़ा
तेरा ही तो है बन्दए दरगाह ले ख़बर

दर मन्क़बते हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

बन्दा क़ादिर का भी क़ादिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
सिर्रे बातिन भी है ज़ाहिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

मुफ़्तिये शर–अ़ भी है क़ाज़िये मिल्लत भी है
इल्मे असरार से माहिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

मम्बए़ फ़ैज़ भी है मज्मए़ अफ़्ज़ाल भी है
मेहरे इ़रफ़ां का मुनव्वर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

क़ुत़्बे अब्दाल भी है महूवरे इर्शाद भी है
मर्कज़े दाइरए सिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

सिल्के इ़रफ़ां की ज़िया है येही दुर्रे मुख़्तार
फ़ख़्रे अश्बाहो नज़ाइर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

इस के फ़रमान हैं सब शारेहे़ हुक्मे शारेअ़
मज़्हरे नाही व आमिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

ज़ी तसर्रुफ़ भी है माज़ून भी मुख़्तार भी है
कारे आ़लम का मुदब्बिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

रश्के बुलबुल है रज़ा लालए सद दाग़ भी है
आप का वासिफ़ो ज़ाकिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

गुज़रे जिस राह से वोह सय्यिदे वाला हो कर

गुज़रे जिस राह से वोह सय्यिदे वाला हो कर
रह गई सारी ज़मीं अम्बरे सारा हो कर

रुख़े अन्वर की तजल्ली जो क़मर ने देखी
रह गया बोसा दहे नक़्शे कफ़े पा हो कर

वाए महरूमिये क़िस्मत कि मैं फिर अब की बरस
रह गया हम-रहे ज़व्वारे मदीना हो कर

च-मने त़यबा है वोह बाग़ कि मुर्ग़े सिदरा
बरसों चहके है जहां बुलबुले शैदा हो कर

सर-सरे दश्ते मदीना का मगर आया ख़याल
रश्के गुलशन जो बना ग़ुन्चए दिल वा हो कर

गोशे शह कहते हैं फ़रियाद रसी को हम हैं
वा'दए चश्म है बख़्शाएंगे गोया हो कर

पाए शह पर गिरे या रब तपिशे मेह्र से जब
दिले बेताब उड़े ह़श्र में पारा हो कर

है येह उम्मीद रज़ा को तेरी रह़मत से शहा
न हो ज़िन्दानिये दोज़ख़ तेरा बन्दा हो कर

नारे दोज़ख़ को चमन कर दे बहारे आ़रिज़

नारे दोज़ख़ को चमन कर दे बहारे आ़रिज़
ज़ुल्मते ह़श्र को दिन कर दे नहारे आ़रिज़

मैं तो क्या चीज़ हूं ख़ुद साह़िबे क़ुरआं को शहा
लाख मुस्ह़फ़ से पसन्द आई बहारे आ़रिज़

जैसे क़ुरआन है विर्द उस गुले मह़बूबी का
यूं ही क़ुरआं का वज़ीफ़ा है वक़ारे आ़रिज़

गर्चे क़ुरआं है न क़ुरआं की बराबर लेकिन
कुछ तो है जिस पे है वोह मद्ह़ निगारे आ़रिज़

तूर क्या अ़र्श जले देख के वोह जल्वए गर्म
आप आ़रिज़ हो मगर आईना दारे आ़रिज़

तुरफ़ा आ़लम है वोह क़ुरआन इधर देखें उधर
मुस्ह़फ़े पाक हो ह़ैराने बहारे आ़रिज़

तरजमा है येह सिफ़त का वोह ख़ुद आईनए ज़ात
क्यूं न मुस्ह़फ़ से ज़ियादा हो वक़ारे आ़रिज़

जल्वा फ़रमाएं रुख़े दिल की सियाही मिट जाए
सुब्ह़ हो जाए इलाही शबे तारे आ़रिज़

नामे ह़क़ पर करे मह़बूब दिलो जां क़ुरबां
ह़क़ करे अ़र्श से ता फ़र्श निसारे आ़रिज़

मुश्क बू ज़ुल्फ़ से रुख़ चेहरे से बालों में शुआ़अ़
मो'जिज़ा है ह़-लबे ज़ुल्फ़ो ततारे आ़रिज़

ह़क़ ने बख़्शा है करम नज़्रे गदायां हो क़बूल
प्यारे इक दिल है वोह करते हैं निसारे आ़रिज़

आह बे मा-यगिये दिल कि रज़ाए मोह़ताज
ले कर इक जान चला बहरे निसारे आ़रिज़

तुम्हारे ज़र्रे के परतौ सितारहाए फ़लक

तुम्हारे ज़र्रे के परतौ सितारहाए फ़लक
तुम्हारे ना'ल की नाक़िस मिसल ज़ियाए फ़लक

अगर्चे छाले सितारों से पड़ गए लाखों
मगर तुम्हारी त़लब में थके न पाए फ़लक

सरे फ़लक न कभी ता-ब आस्तां पहुंचा
कि इब्तिदाए बुलन्दी थी इन्तिहाए फ़लक

येह मिट के उन की रविश पर हुवा खुद उन की रविश
कि नक़्शे पाए ज़मीं पर न सौते पाए फ़लक

तुम्हारी याद में गुज़री थी जागते शब भर
चली नसीम, हुए बन्द दीदहाए फ़लक

न जाग उठें कहीं अहले बक़ीअ़ कच्ची नींद
चला येह नर्म न निकली सदाए पाए फ़लक

येह उन के जल्वे ने कीं गर्मियां शबे असरा
कि जब से चर्ख़ में हैं नुक़्रओ तिलाए फ़लक

मेरे ग़नी ने जवाहिर से भर दिया दामन
गया जो कासए मह ले के शब गदाए फ़लक

रहा जो क़ानेए यक नाने सोख़्ता दिन भर
मिली हुज़ूर से काने गुहर जज़ाए फ़लक

तजम्मुले शबे असरा अभी सिमट न चुका
कि जब से वैसी ही कोतल हैं सब्ज़हाए फ़लक

ख़िताबे हक़ भी है दर बाबे ख़ल्क़ مِنۡ اَجۡلِکَ
अगर इधर से दमे ह़म्द है सदाए फ़लक

येह अहले बैत की चक्की से चाल सीखी है
रवां है बे मददे दस्त आसियाए फ़लक

रज़ा येह ना'ते नबी ने बुलन्दियां बख़्शीं
लक़ब "ज़मीने फ़लक" का हुवा समाए फ़लक

क्या ठीक हो रुख़े न-बवी पर मिसाले गुल

क्या ठीक हो रुख़े न-बवी पर मिसाले गुल
पामाले जल्वए कफ़े पा है जमाले गुल

जन्नत है उन के जल्वे से जूयाए रंगो बू
ऐ गुल हमारे गुल से है गुल को सुवाले गुल

उन के क़दम से सिल्अ़ए[1] ग़ाली हुई जिनां
वल्लाह मेरे गुल से है जाहो जलाले गुल

सुनता हूं इश्क़े शाह में दिल होगा ख़ूं फ़िशां
या रब येह मुज़्दा सच हो मुबारक हो फ़ाले गुल

बुलबुल ह़रम को चल ग़मे फ़ानी से फ़ाएदा
कब तक कहेगी हाए वोह ग़ुन्जो दलाले गुल

---

1 : ह़दीस में जन्नत को "सिल्अ़ए ग़ालिया" फ़रमाया या'नी मताए गिरां बहा ।12

ग़मगीं है शौक़े ग़ाज़ए ख़ाके मदीना में
शबनम से धुल सकेगी न गर्दे मलाले गुल

बुलबुल येह क्या कहा मैं कहां फ़स्ले गुल कहां
उम्मीद रख कि आ़म है जूदो नवाले गुल

बुलबुल ! घिरा है अब्रे विला मुज़्दा हो कि अब
गिरती है आशियाने पे बर्क़े जमाले गुल

या रब हरा भरा रहे दाग़े जिगर का बाग़
हर मह महे बहार हो हर साल साले गुल

रंगे मुज़ह से कर के ख़जिल यादे शाह में
खींचा है हम ने कांटों पे इत्रे जमाले गुल

मैं यादे शह में रोऊं अ़नादिल करें हुजूम
हर अश्क लाला-फ़ाम पे हो एह़तिमाले गुल

है अ़क्से चेहरा से लबे गुलगूं में सुर्ख़ियां
डूबा है बद्रे गुल से शफ़क़ में हिलाले गुल

ना'ते हुज़ूर में मु-तरन्नम है अ़न्दलीब
शाख़ों के झूमने से इयां वज्दो ह़ाले गुल

बुलबुल गुले मदीना हमेशा बहार है
दो दिन की है बहार फ़ना है मआले गुल

शैख़ैन इधर निसार, ग़निय्यो अ़ली उधर
गुन्चा है बुलबुलों का यमीनो शिमाले गुल

चाहे ख़ुदा तो पाएंगे इ़श्क़े नबी में ख़ुल्द
निकली है नामए दिले पुर ख़ूं में फ़ाले गुल

कर उस की याद जिस से मिले चैन अ़न्दलीब
देखा नहीं कि ख़ारे अलम है ख़याले गुल

देखा था ख़्वाबे ख़ारे ह़रम अ़न्दलीब ने
खटका किया है आंख में शब भर ख़याले गुल

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं
कीजे रज़ा को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल

सर ता ब क़दम है तने सुल्त़ाने ज़मन फूल

सर ता ब क़दम है तने सुल्त़ाने ज़मन फूल
लब फूल दहन फूल ज़क़न फूल बदन फूल

सदक़े में तेरे बाग़ तो क्या लाए हैं "बन" फूल
इस ग़ुन्चए दिल को भी तो ईमा हो कि बन फूल

तिन्का भी हमारे तो हिलाए नहीं हिलता
तुम चाहो तो हो जाए अभी कोहे मिह़न फूल

वल्लाह जो मिल जाए मेरे गुल का पसीना
मांगे न कभी इत्र न फिर चाहे दुल्हन फूल

दिल बस्ता व ख़ूं गश्ता न ख़ुश्बू न लत़ाफ़त
क्यूं ग़ुन्चा कहूं है मेरे आक़ा का दहन फूल

शब याद थी किन दांतों की शबनम कि दमे सुब्ह़
शोख़ाने बहारी के जड़ाऊ है करन फूल

दन्दानो लबो ज़ुल्फ़ो रुख़े शह के फ़िदाई
हैं दुर्रे अ़दन, ला'ले यमन, मुश्के ख़ुतन फूल

बू हो के निहां हो गए ताबे रुख़े शह में
लो बन गए हैं अब तो ह़सीनों का दहन फूल

हों बारे गुनह से न ख़जिल दोशे अज़ीज़ां
लिल्लाह मेरी ना'श कर ऐ जाने चमन फूल

दिल अपना भी शैदाई है उस नाख़ुने पा का
इतना भी महे नौ पे न ऐ चर्ख़े कुहन ! फूल

दिल खोल के ख़ूं रो ले ग़मे आरिज़े शह में
निकले तो कहीं ह़स्रते ख़ूं नाबह शदन फूल

क्या ग़ाज़ा मला गर्दे मदीना का जो है आज
निखरे हुए जोबन में क़ियामत की फबन फूल

गरमी येह क़ियामत है कि कांटे हैं ज़बां पर
बुलबुल को भी ऐ साक़िये सहबा व लबन फूल

है कौन कि गिर्या करे या फ़ातिहा को आए
बेकस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल

दिल ग़म तुझे घेरे हैं ख़ुदा तुझ को वोह चमकाए
सूरज तेरे ख़िरमन को बने तेरी किरन फूल

क्या बात रज़ा उस च-मनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

है कलामे इलाही में शम्सो दुहा तेरे चेहरए नूर फ़ज़ा की क़सम

है कलामे इलाही में शम्सो दुहा तेरे चेहरए नूर फ़ज़ा की क़सम
क़-समे शबे तार में राज़ येह था कि ह़बीब की ज़ुल्फ़े दोता की क़सम

तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा तेरी ख़िल्क़ को ह़क़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम

वोह ख़ुदा ने है मर्तबा तुझ को दिया न किसी को मिले न किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शहरो[1] कलामो[2] बक़ा[3] की क़सम

---

1 : "قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: "لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِo وَاَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ" मुझे इस शहरे मक्का की क़सम है इस लिये कि ऐ मह़बूब तू इस में तशरीफ़ फ़रमा है ।12

2 : "قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: "وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَo" मुझे रसूल के इस कहने की क़सम है कि ऐ मेरे रब येह लोग ईमान नहीं लाते ।12

3 : "قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: "لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَo" ऐ मह़बूब मुझे तेरी जान की क़सम कि येह काफ़िर अपने नशे में अन्धे हो रहे हैं ।12

तेरा मस्नदे नाज़ है अ़र्शे बरीं तेरा महूरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हर दो जहां है शहा तेरा मिस्ल नहीं है खुदा की क़सम

येही अ़र्ज़ है ख़ालिक़े अर्ज़ो समा वोह रसूल हैं तेरे मैं बन्दा तेरा
मुझे उन के जवार में दे वोह जगह कि है खुल्द को जिस की सफ़ा की क़सम

तू ही बन्दों पे करता है लुत़्फ़ो अ़त़ा है तुझी पे भरोसा तुझी से दुआ़
मुझे जल्वए पाके रसूल दिखा तुझे अपने ही इ़ज़्ज़ो अ़ला की क़सम

मेरे गर्चे गुनाह हैं ह़द से सिवा मगर उन से उमीद है तुझ से रजा
तू रह़ीम है उन का करम है गवा वोह करीम हैं तेरी अ़त़ा की क़सम

येही कहती है बुलबुले बाग़े जिनां कि रज़ा की त़रह़ कोई सेहूर बयां
नहीं हिन्द में वासिफ़े शाहे हुदा मुझे शोख़िये त़ब्ए़ रज़ा की क़सम

पाट वोह कुछ धार येह कुछ ज़ार हम

पाट वोह कुछ धार येह कुछ ज़ार हम
या इलाही क्यूंकर उतरें पार हम

किस बला की मै से हैं सरशार हम
दिन ढला होते नहीं हुशियार हम

तुम करम से मुश्तरी हर ऐ़ब के
जिन्से ना मक़्बूले हर बाज़ार हम

दुश्मनों की आंख में भी फूल तुम
दोस्तों की भी नज़र में ख़ार हम

लग़्ज़िशे पा का सहारा एक तुम
गिरने वाले लाखों ना हन्जार हम

सदक़ा अपने बाज़ूओं का अल मदद
कैसे तोड़ें येह बुते पिन्दार हम

दम क़दम की ख़ैर ऐ जाने मसीह़
दर पे लाए हैं दिले बीमार हम

अपनी रहमत की तरफ़ देखें हुज़ूर
जानते हैं जैसे हैं बदकार हम

अपने मेहमानों का सदक़ा एक बूंद
मर मिटे प्यासे इधर सरकार हम

अपने कूचे से निकाला तो न दो
हैं तो हद भर के खुदाई ख़्वार हम

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम
हैं सख़ी के माल में हक़दार हम

चांदनी छटकी है उन के नूर की
आओ देखें सैरे तूरो नार हम

हिम्मत ऐ ज़ो'फ़ उन के दर पर गिर के हों
बे तकल्लुफ़ सायए दीवार हम

बा अ़ता तुम शाह तुम मुख़्तार तुम
बे नवा हम ज़ार हम नाचार हम

तुम ने तो लाखों को जानें फेर दीं
ऐसा कितना रखते हैं आज़ार हम

अपनी सत्तारी का या रब वासिता
हों न रुस्वा बर सरे दरबार हम

इतनी अ़र्ज़े आख़िरी कह दो कोई
नाव टूटी आ पड़े मंजधार हम

मुंह भी देखा है किसी के अ़फ़्व का
देख ओ इस्यां नहीं बे यार हम

मैं निसार ऐसा मुसल्मां कीजिये
तोड़ डालें नफ़्स का जुन्नार हम

कब से फैलाए हैं दामन तैग़े इश्क़
अब तो पाएं ज़ख़्म दामन दार हम

सुन्नियत से खटके सब की आंख में
फूल हो कर बन गए क्या ख़ार हम

ना तुवानी का भला हो बन गए
नक़्शे पाए त़ालिबाने यार हम

दिल के टुकड़े नज़्रे ह़ाज़िर लाए हैं
ऐ सगाने कूचए दिलदार हम

क़िस्मते सौरो हिरा की हिर्स है
चाहते हैं दिल में गहरा ग़ार हम

चश्म पोशी व करम शाने शुमा
कारे मा बेबाकी व इसरार हम

फ़स्ले गुल सब्ज़ा सबा मस्ती शबाब
छोड़ें किस दिल से दरे ख़ुम्मार हम

मै-कदा छुटता है लिल्लाह साक़िया
अब के साग़र से न हों हुशियार हम

साक़िये तस्नीम जब तक आ न जाएं
ऐ सियह मस्ती न हों हुशियार हम

नाज़िशें करते हैं आपस में मलक
हैं ग़ुलामाने शहे अबरार हम

लुत़्फ़ अज़ ख़ुद रफ़्तगी या रब नसीब
हों शहीदे जल्वए रफ़्तार हम

उन के आगे दा'वए हस्ती रज़ा
क्या बके जाता है येह हर बार हम

आ़रिजे़ शम्सो क़मर से भी हैं अन्वर एड़ियां

आ़रिजे़ शम्सो क़मर से भी हैं अन्वर एड़ियां
अ़र्श की आंखों के तारे हैं वोह खुशतर एड़ियां

जा बजा परतौ फ़िगन हैं आस्मां पर एड़ियां
दिन को हैं खुरशीद शब को माहो अख़्तर एड़ियां

नज्मे गर्दूं तो नज़र आते हैं छोटे और वोह पाउं
अ़र्श पर फिर क्यूं न हों महसूस लाग़र एड़ियां

दब के जे़रे पा न गुन्जाइश समाने को रही
बन गया जल्वा कफ़े पा का उभर कर एड़ियां

उन का मंगता पाउं से ठुकरा दे वोह दुन्या का ताज
जिस की ख़ातिर मर गए मुन्अ़म रगड़ कर एड़ियां

दो क़मर, दो पन्जए खुर, दो सितारे, दस हिलाल
उन के तल्वे, पन्जे, नाखुन, पाए अत़्हर एड़ियां

हाए उस पथ्थर से उस सीने की क़िस्मत फोड़िये
बे तकल्लुफ़ जिस के दिल में यूं करें घर एड़ियां

ताजे रूहुल कुद्स के मोती जिसे सज्दा करें
रखती हैं वल्लाह वोह पाकीज़ा गौहर एड़ियां

एक ठोकर में उहुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा
रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अक्बर एड़ियां

चर्ख़ पर चढ़ते ही चांदी में सियाही आ गई
कर चुकी हैं बद्र को टक्साल बाहर एड़ियां

ऐ रज़ा तूफ़ाने महशर के तलातुम से न डर
शाद हो ! हैं कश्तिये उम्मत को लंगर एड़ियां

इश्क़े मौला में हो ख़ूंबार कनारे दामन

इश्क़े मौला में हो ख़ूंबार कनारे दामन
या खुदा जल्द कहीं आए बहारे दामन

बह चली आंख भी अश्कों की त़रह़ दामन पर
कि नहीं तारे नज़र जुज़ दो सेह तारे दामन

अश्क बरसाऊं चले कूचए जानां से नसीम
या खुदा जल्द कहीं निकले बुख़ारे दामन

दिल शुदों का येह हुवा दामने अत़्हर पे हुजूम
बे-दिलआबाद हुवा नामे दियारे दामन

मुश्क सा जुल्फ़े शहो नूर फ़शां रूए हुज़ूर
अल्लाह अल्लाह ह़-लबे जेबो ततारे दामन

तुझ से ऐ गुल मैं सितम दीदए दश्ते ह़िरमां
ख़लिशे दिल की कहूं या ग़मे ख़ारे दामन

अ़क्स अफ़्गन है हिलाले लबे शह जेब नहीं
मेहरे आ़रिज़ की शुआ़एं हैं न तारे दामन

अश्क कहते हैं येह शैदाई की आंखें धो कर
ऐ अदब गर्दे नज़र हो न गुबारे दामन

ऐ रज़ा आह वोह बुलबुल कि नज़र में जिस की
जल्वए जेबे गुल आए न बहारे दामन

शौक़ व इश्तियाक़

ह़ज़रते ख़ालिद बिन मे'दान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हर रात जब अपने बिस्तर पर लैटते तो इन्तिहाई शौक़ व इश्तियाक़ के साथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को नाम ले ले कर याद करते और येह दुआ़ मांगते कि या अल्लाह ! मेरा दिल इन ह़ज़रात की मह़ब्बत में बे क़रार है और मेरा इश्तियाक़ अब ह़द से बढ़ चुका है लिहाज़ा तू मुझे जल्द वफ़ात दे कर इन लोगों के पास पहुंचा दे और येही कहते कहते उन को नींद आ जाती थी । (الشفاء، ج۲، ص ۲۱)

रश्के क़मर हूं रंगे रुख़े आफ़्ताब हूं

रश्के क़मर हूं रंगे रुख़े आफ़्ताब हूं
ज़र्रा तेरा जो ऐ शहे गर्दूं जनाब हूं

दुर्रे नजफ़ हूं गौहरे पाके ख़ुशाब हूं
या'नी तुराबे रह गु-ज़रे बू तुराब हूं

गर आंख हूं तो अब्र की चश्मे पुरआब हूं
दिल हूं तो बर्क़ का दिले पुर इज़्तिराब हूं

ख़ूनीं जिगर हूं ताइरे बे आशियां शहा
रंगे परीदए रुख़े गुल का जवाब हूं

बे अस्लो बे सबात हूं बहूरे करम मदद
परवर्दए कनारे सराबो हबाब हूं

इब्रत फ़ज़ा है शर्मे गुनह से मेरा सुकूत
गोया लबे ख़मोशे लहद का जवाब हूं

क्यूं नाला सोज़ ले करूं क्यूं ख़ूने दिल पियूं
सीख़े कबाब हूं न मैं जामे शराब हूं

दिल बस्ता बे क़रार, जिगर चाक, अश्कबार
गुन्चा हूं गुल हूं बर्क़े तपां हूं सह़ाब हूं

दा'वा है सब से तेरी शफ़ाअ़त पे बेश्तर
दफ़्तर में आ़सियों के शहा इन्तिख़ाब हूं

मौला दुहाई नज़रों से गिर कर जला ग़ुलाम
अश्के मुज़ह रसीदए चश्मे कबाब हूं

मिट जाए येह ख़ुदी तो वोह जल्वा कहां नहीं
दर्दा में आप अपनी नज़र का ह़िजाब हूं

सदक़े हूं उस पे नार से देगा जो मख़्लसी
बुलबुल नहीं कि आतशे गुल पर कबाब हूं

क़ालिब तही किये हमा आग़ोश है हिलाल
ऐ शह–सवारे त़यबा ! मैं तेरी रिकाब हूं

क्या क्या हैं तुझ से नाज़ तेरे क़स्र को कि मैं
का'बे की जान, अ़र्शे बरीं का जवाब हूं

शाहा बुझे सक़र मेरे अश्कों से ता न मैं
आबे अ़बस चकीदए चश्मे कबाब हूं

मैं तो कहा ही चाहूं कि बन्दा हूं शाह का
पर लुत़्फ़ जब है कह दें अगर वोह जनाब "हूं"

ह़सरत में ख़ाक बोसिये त़यबा की ऐ रज़ा
टपका जो चश्मे मेह्र से वोह ख़ूने नाब हूं

पूछते क्या हो अ़र्श पर यूं गए मुस्त़फ़ा कि यूं

पूछते क्या हो अ़र्श पर यूं गए मुस्त़फ़ा कि यूं
कैफ़ के पर जहां जले कोई बताए क्या कि यूं

क़स्रे दना के राज़ में अ़क़्लें तो गुम हैं जैसी हैं
रुहे़ क़ुदुस से पूछिये तुम ने भी कुछ सुना कि यूं

मैं ने कहा कि जल्वए अस्ल में किस त़रह़ गुमें
सुब्ह़ ने नूरे मेह्र में मिट के दिखा दिया कि यूं

हाए रे ज़ौक़े बे ख़ुदी दिल जो संभलने सा लगा
छक के महक में फूल की गिरने लगी सबा कि यूं

दिल को दे नूरो दाग़े इ़श्क़ फिर मैं फ़िदा दो नीम कर
माना है सुन के शक़्क़े माह आंखों से अब दिखा कि यूं

दिल को है फ़िक्र किस त़रह़ मुर्दे जिलाते हैं हु़ज़ूर
ऐ मैं फ़िदा लगा कर एक ठोकर इसे बता कि यूं

बाग़ में शुक्रे वस्ल था हिज्र में हाए हाए गुल
काम है उन के ज़िक्र से ख़ैर वोह यूं हुवा कि यूं

जो कहे शे'रो पासे शर-अ़ दोनों का हु़स्न क्यूंकर आए
ला उसे पेशे जल्वए ज़म-ज़-मए रज़ा कि यूं

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यूं

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यूं
दिल को जो अ़क्ल दे ख़ुदा तेरी गली से जाए क्यूं

रुख़्सते क़ाफ़िला का शोर ग़श से हमें उठाए क्यूं
सोते हैं उन के साए में कोई हमें जगाए क्यूं

बार न थे ह़बीब को पालते ही ग़रीब को
रोएं जो अब नसीब को चैन कहो गंवाए क्यूं

यादे हुज़ूर की क़सम ग़फ़्लते ऐ़श है सितम
ख़ूब हैं क़ैदे ग़म में हम कोई हमें छुड़ाए क्यूं

देख के ह़ज़रते ग़नी फैल पड़े फ़क़ीर भी
छाई है अब तो छाउनी ह़श्र ही आ न जाए क्यूं

जान है इ़श्क़े मुस्तफ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं

हम तो हैं आप दिल-फ़िगार ग़म में हंसी है ना गवार
छेड़ के गुल को नौ बहार ख़ून हमें रुलाए क्यूं

या तो यूं ही तड़प के जाएं या वोही दाम से छुड़ाएं
मिन्नते ग़ैर क्यूं उठाएं कोई तरस जताए क्यूं

उन के जलाल का असर दिल से लगाए है क़मर
जो कि हो लोट ज़ख़्म पर दाग़े जिगर मिटाए क्यूं

खुश रहे गुल से अन्दलीब ख़ारे ह़रम मुझे नसीब
मेरी बला भी ज़िक्र पर फूल के ख़ार खाए क्यूं

गर्दे मलाल अगर धुले दिल की कली अगर खिले
बर्क़ से आंख क्यूं जले रोने पे मुस्कुराए क्यूं

जाने सफ़र नसीब को किस ने कहा मज़े से सो
खटका अगर सह़र का हो शाम से मौत आए क्यूं

अब तो न रोक ऐ ग़नी आ़दते सग बिगड़ गई
मेरे करीम पहले ही लुक़्मए तर खिलाए क्यूं

राहे नबी में क्या कमी फ़र्शे बयाज़ दीदा की
चादरे ज़िल है मल्गजी ज़ेरे क़दम बिछाए क्यूं

संगे दरे हु़ज़ूर से हम को ख़ुदा न सब्र दे
जाना है सर को जा चुके दिल को क़रार आए क्यूं

है तो रज़ा निरा सितम जुर्म पे गर लजाएं हम
कोई बजाए सोज़े ग़म साज़े त़रब बजाए क्यूं

यादे वत़न सितम किया दश्ते ह़रम से लाई क्यूं

यादे वत़न सितम किया दश्ते ह़रम से लाई क्यूं
बैठे बिठाए बद नसीब सर पे बला उठाई क्यूं

दिल में तो चोट थी दबी हाए ग़ज़ब उभर गई
पूछो तो आहे सर्द से ठन्डी हवा चलाई क्यूं

छोड़ के उस ह़रम को आप बन में ठगों के आ बसो
फिर कहो सर पे धर के हाथ लुट गई सब कमाई क्यूं

बाग़े अ़रब का सर्वे नाज़ देख लिया है वरना आज
क़ुम्रिये जाने ग़मज़दा गूंज के चह-चहाई क्यूं

नामे मदीना ले दिया चलने लगी नसीमे ख़ुल्द
सोज़िशे ग़म को हम ने भी कैसी हवा बताई क्यूं

किस की निगाह की ह़या फिरती है मेरी आंख में
नरगिसे मस्त नाज़ ने मुझ से नज़र चुराई क्यूं

तूने तो कर दिया त़बीब आतशे सीना का इ़लाज
आज के दूदे आह में बूए कबाब आई क्यूं

फ़िक्रे मआ़श बद बला होले मआ़द जां गुज़ा
लाखों बला में फंसने को रूह़ बदन में आई क्यूं

हो न हो आज कुछ मेरा ज़िक्र हु़ज़ूर में हुवा
वरना मेरी त़रफ़ ख़ुशी देख के मुस्कुराई क्यूं

हूरे जिनां सितम किया त़यबा नज़र में फिर गया
छेड़ के पर्दए ह़िजाज़ देस की चीज़ गाई क्यूं

ग़फ़्लते शैख़ो शाब पर हंसते हैं ति़फ़्ले शीर ख़्वार
करने को गुदगुदी अ़बस आने लगी बहाई क्यूं

अ़र्ज़ करूं हु़ज़ूर से दिल की तो मेरे ख़ैर है
पीटती सर को आरज़ू दश्ते ह़रम से आई क्यूं

ह़स्रते नौ का सानिह़ा सुनते ही दिल बिगड़ गया
ऐसे मरीज़ को रज़ा मर्गे जवां सुनाई क्यूं

अहले सिरात़ रूहे़ अमीं को ख़बर करें

अहले सिरात़ रूहे़ अमीं को ख़बर करें
जाती है उम्मते न-बवी फ़र्श पर करें

इन फ़ितनाहाए ह़श्र से कह दो ह़ज़र करें
नाज़ों के पाले आते हैं रह से गुज़र करें

बद हैं तो आप के हैं भले हैं तो आप के
टुकड़ों से तो यहां के पले रुख़ किधर करें

सरकार हम कमीनों के अत़्वार पर न जाएं
आक़ा हु़ज़ूर अपने करम पर नज़र करें

उन की ह़रम के ख़ार कशीदा हैं किस लिये
आंखों में आएं सर पे रहें दिल में घर करें

जालों पे जाल पड़ गए लिल्लाह वक़्त है
मुश्किल कुशाई आप के नाख़ुन अगर करें

मन्ज़िल कड़ी है शाने तबस्सुम करम करे
तारों की छाउं नूर के तड़के सफ़र करें

किल्के रज़ा है ख़न्जरे ख़ूंख़ार बर्क़-बार
आ'दा से कह दो ख़ैर मनाएं न शर करें

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं

वोह सूए लालाज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

जो तेरे दर से यार फिरते हैं
दर बदर यूं ही ख़्वार फिरते हैं

आह कल ऐ़श तो किये हम ने
आज वोह बे क़रार फिरते हैं

उन के ईमा से दोनों बागों पर
खे़ले लैलो नहार फिरते हैं

हर चरागे़ मज़ार पर कुदसी
कैसे परवाना-वार फिरते हैं

उस गली का गदा हूं मैं जिस में
मांगते ताजदार फिरते हैं

जान हैं जान क्या नज़र आए
क्यूं अ़दू गिर्दे ग़ार फिरते हैं

फूल क्या देखूं मेरी आंखों में
दश्ते त़यबा के ख़ार फिरते हैं

लाखों कुदसी हैं कामे ख़िदमत पर ق
लाखों गिर्दे मज़ार फिरते हैं

वर्दियां बोलते हैं हरकारे
पहरा देते सुवार फिरते हैं

रखिये जैसे हैं ख़ानाज़ाद हैं हम
मोल के ऐबदार फिरते हैं

हाए ग़ाफ़िल वोह क्या जगह है जहां
पांच जाते हैं चार फिरते हैं

बाएं रस्ते न जा मुसाफ़िर सुन
माल है राह-मार फिरते हैं

जाग सुनसान बन है रात आई
गुर्ग बहरे शिकार फिरते हैं

नफ़्स येह कोई चाल है ज़ालिम
जैसे ख़ासे बिजार फिरते हैं

कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा
तुझ से कुत्ते हज़ार फिरते हैं

उन की महक ने दिल के ग़ुन्चे खिला दिये हैं

उन की महक ने दिल के ग़ुन्चे खिला दिये हैं
जिस राह चल गए हैं कूचे बसा दिये हैं

जब आ गई है जोशे रह़मत पे उन की आंखें
जलते बुझा दिये हैं रोते हंसा दिये हैं

इक दिल हमारा क्या है आज़ार इस का कितना
तुम ने तो चलते फिरते मुर्दे जिला दिये हैं

उन के निसार कोई कैसे ही रन्ज में हो
जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं

हम से फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे
अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं

असरा में गुज़रे जिस दम बेड़े पे क़ुदसियों के
होने लगी सलामी परचम झुका दिये हैं

आने दो या डुबो दो अब तो तुम्हारी जानिब
कश्ती तुम्हीं पे छोड़ी लंगर उठा दिये हैं

दूल्हा से इतना कह दो प्यारे सुवारी रोको
मुश्किल में हैं बराती पुरख़ार बादिये हैं

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

मेरे करीम से गर क़त़रा किसी ने मांगा
दरिया बहा दिये हैं दुर बे बहा दिये हैं

मुल्के सुख़न की शाही तुम को रज़ा मुसल्लम
जिस सम्त आ गए हो सिक्के बिठा दिये हैं

है लबे ईसा से जां बख़्शी निराली हाथ में

है लबे ईसा से जां बख़्शी निराली हाथ में
संगरेज़े पाते हैं शीरीं मक़ाली हाथ में

बे नवाओं की निगाहें हैं कहां तह़रीरे दस्त
रह गईं जो पा के जूदे ला यज़ाली हाथ में

क्या लकीरों में यदुल्लाह ख़त़ सरो आसा लिखा
राह यूं उस राज़ लिखने की निकाली हाथ में

जूदे शाहे कौसर अपने प्यासों का जूया है आप
क्या अ़जब उड़ कर जो आप आए पियाली हाथ में

अब्रे नैसां मोमिनों को तैग़े उ़र्यां कुफ़्र पर
जम्अ़ हैं शाने जमाली व जलाली हाथ में

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

साया अफ़्गन सर पे हो परचम इलाही झूम कर
जब लिवाउल ह़म्द ले उम्मत का वाली हाथ में

हर ख़ते कफ़ है यहां ऐ दस्ते बैज़ाए कलीम
मोज-ज़न दरियाए नूरे बे मिसाली हाथ में

वोह गिरां संगिये क़दरे मस वोह इरज़ानिये जूद
नौइया बदला किये संगो लआली हाथ में

दस्त-गीरे हर दो आलम कर दिया सिब्तैन को
ऐ मैं कुरबां जाने जां अंगुश्त क्या ली हाथ में

आह वोह आलम कि आंखें बन्द और लब पर दुरूद
वक़्फ़ संगे दर जबीं रौज़े की जाली हाथ में

जिस ने बैअत की बहारे हुस्न पर कुरबां रहा
हैं लकीरें नक़्श तस्वीरे जमाली हाथ में

काश हो जाऊं लबे कौसर मैं यूं वारफ़्ता होश
ले कर उस जाने करम का ज़ैल आली हाथ में

आंख महवे जल्वए दीदार दिल पुर जोशे वज्द
लब पे शुक्रे बख़्शिशे साक़ी पियाली हाथ में

हश्र में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूं रज़ा
लौट जाऊं पा के वोह दामाने आली हाथ में

राहे इरफ़ां से जो हम ना–दीदा रू महरम नहीं

राहे इरफ़ां से जो हम ना–दीदा रू महरम नहीं
मुस्तफ़ा है मस्नदे इर्शाद पर कुछ ग़म नहीं

हूं मुसल्मां गर्चे नाक़िस ही सही ऐ कामिलो !
माहियत पानी की आख़िर यम से नम में कम नहीं

ग़ुन्चे मा औहा के जो चटके दना के बाग़ में
बुलबुले सिदरा तक उन की बू से भी महरम नहीं

उस में ज़म ज़म[1] है कि थम थम इस में जम जम[2] है कि बेश
कस्रते कौसर में ज़म ज़म की तरह कम कम[3] नहीं

---

1 : "ज़म ज़म" के मा'ना सुरयानी ज़बान में थम थम जब येह चश्मा ज़मीन से उबला हज़रते हाजिरा वालिदए सय्यिदुना इस्माईल عليهما السلام ने इस ख़ौफ़ से कि पानी रैते में मिल कर खुश्क न हो जाए एक दाएरा खींच कर फ़रमाया : ज़म ज़म, ठहर ! ठहर ! वोह उसी दाएरे में रह कर कूंआं हो गया। हदीस में फ़रमाया कि वोह न रोकतीं तो समुन्दर हो जाता।12

2 : "जम जम" ब ज़बाने अ–रबी या'नी कसीर, कसीर कौसर से मुश्तक़ है।12

3 : मिक्दार से सुवाल या'नी कितना कितना।12

पन्जए मेहरे अ़रब है जिस से दरिया बह गए
चश्मए ख़ुरशीद में तो नाम को भी नम नहीं

ऐसा उम्मी किस लिये मिन्नते कशे उस्ताद हो
क्या किफ़ायत उस को اِقْرَاْ رَبُّکَ الْاَکْرَمْ नहीं

ओस मेहरे ह़श्र पर पड़ जाए प्यासो तो सही
उस गुले ख़न्दां का रोना गिर्यए शबनम नहीं

है उन्हीं के दम क़दम की बागे़ आ़लम में बहार
वोह न थे आ़लम न था गर वोह न हों आ़लम नहीं

सायए दीवारो ख़ाके दर हो या रब और रज़ा
ख़्वाहिशे दैहीमे कै़सर, शौके़ तख़्ते जम नहीं

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं

वोह कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धुवां नहीं

दो जहां की बेहतरियां नहीं कि अमानिये दिलो जां नहीं
कहो क्या है वोह जो यहां नहीं मगर इक नहीं कि वोह हां नहीं

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूं तो किस को ज़बां नहीं
वोह सुख़न है जिस में सुख़न न हो वोह बयां है जिस का बयां नहीं

बखुदा खुदा का येही है दर नहीं और कोई मफ़र मक़र
जो वहां से हो यहीं आ के हो जो यहां नहीं तो वहां नहीं

करे मुस्तफ़ा की इहानतें खुले बन्दों उस पे येह जुरअतें
कि मैं क्या नहीं हूं मुहम्मदी! अरे हां नहीं अरे हां नहीं

तेरे आगे यूं हैं दबे लचे फु-सहा अ़रब के बड़े बड़े
कोई जाने मुंह में ज़बां नहीं, नहीं बल्कि जिस्म में जां नहीं

वोह शरफ़ कि क़त्अ़ हैं निस्बतें वोह करम कि सब से क़रीब हैं
कोई कह दो यासो उमीद से वोह कहीं नहीं वोह कहां नहीं

येह नहीं कि ख़ुल्द न हो निकू वोह निकूई की भी है आबरू
मगर ऐ मदीने की आरज़ू जिसे चाहे तू वोह समां नहीं

है उन्हीं के नूर से सब इयां है उन्हीं के जल्वे में सब निहां
बने सुब्ह़ ताबिशे मेह्र से रहे पेशे मेह्र येह जां नहीं

वोही नूरे ह़क़ वोही ज़िल्ले रब है उन्हीं से सब है उन्हीं का सब
नहीं उन की मिल्क में आस्मां कि ज़मीं नहीं कि ज़मां नहीं

वोही ला मकां के मकीं हुए सरे अ़र्श तख़्त नशीं हुए
वोह नबी है जिस के हैं येह मकां वोह ख़ुदा है जिस का मकां नहीं

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा न बस एक जां दो जहां फ़िदा
दो जहां से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोरों जहां नहीं

तेरा क़द तो नादिरे दह्र है कोई मिस्ल हो तो मिसाल दे
नहीं गुल के पौदों में डालियां कि चमन में सर्वे चमां नहीं

नहीं जिस के रंग का दूसरा न तो हो कोई न कभी हुवा
कहो उस को गुल कहे क्या बनी कि गुलों का ढेर कहां नहीं

करूं मद्हे अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन पारए नां नहीं

रुख़ दिन है या मेहरे समा येह भी नहीं वोह भी नहीं

रुख़ दिन है या मेहरे समा येह भी नहीं वोह भी नहीं
शब ज़ुल्फ़ या मुश्के ख़ुता येह भी नहीं वोह भी नहीं

मुम्किन में येह क़ुदरत कहां वाजिब में अ़ब्दिय्यत कहां
हैरां हूं येह भी है ख़ता येह भी नहीं वोह भी नहीं

ह़क़ येह कि हैं अ़ब्दे इलाह और आ़लमे इम्कां के शाह
बरज़ख़ हैं वोह सिर्रे ख़ुदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

बुलबुल ने गुल उन को कहा क़ुमरी ने सर्वे जां फ़िज़ा
हैरत ने झुंझला कर कहा येह भी नहीं वोह भी नहीं

ख़ुरशीद था किस ज़ोर पर क्या बढ़ के चमका था क़मर
बे पर्दा जब वोह रुख़ हुवा येह भी नहीं वोह भी नहीं

डर था कि इ़स्यां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रह़मत ने सदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

कोई है नाज़ां ज़ोहद पर या हुस्ने तौबा है सिपर
यां है फ़क़त् तेरी अ़ता येह भी नहीं वोह भी नहीं

दिन लह्व में खोना तुझे शब सुब्ह् तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया फ़रमाने ह़क़ टाला किया
शुक्रे करम तर्से सज़ा येह भी नहीं वोह भी नहीं

है बुलबुले रंगीं रज़ा या तूत़िये नग़्मा सरा
ह़क़ येह कि वासिफ़ है तेरा येह भी नहीं वोह भी नहीं

वस्फ़े रुख़ उन का किया करते हैं

वस्फ़े रुख़ उन का किया करते हैं शर्हे वश्शम्सु दुहा करते हैं
उन की हम मद्हो सना करते हैं जिन को मह्मूद कहा करते हैं

माहे शक़ गश्ता की सूरत देखो कांप कर मेह्र की रज्अत देखो
मुस्तफ़ा प्यारे की कुदरत देखो कैसे ए'जाज़ हुवा करते हैं

तू है ख़ुरशीदे रिसालत प्यारे छुप गए तेरी ज़िया में तारे
अम्बिया और हैं सब मह-पारे तुझ से ही नूर लिया करते हैं

ऐ बला बे ख़िरदिये कुफ़्फ़ार रखते हैं ऐसे के हक़ में इन्कार
कि गवाही हो गर उस को दरकार बे ज़बां बोल उठा करते हैं

अपने मौला की है बस शान अज़ीम जानवर भी करें जिन की ता'ज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम पेड़ सज्दे में गिरा करते हैं

रिफ़्अते ज़िक्र है तेरा हिस्सा दोनों आलम में है तेरा चरचा
मुर्ग़े फ़िरदौस पस अज़ हम्दे ख़ुदा तेरी ही मद्हो सना करते हैं

उंग्लियां पाईं वोह प्यारी प्यारी जिन से दरियाए करम हैं जारी
जोश पर आती है जब ग़म ख़्वारी तिश्ने सैराब हुवा करते हैं

हां यहीं करती हैं चिड़ियां फ़रियाद हां यहीं चाहती है हरनी दाद
इसी दर पर शु-तराने नाशाद गिलए रन्जो अ़ना करते हैं

आस्तीं रह़मते आ़लम उलटे क-मरे पाक पे दामन बांधे
गिरने वालों को चहे दोज़ख़ से साफ़ अलग खींच लिया करते हैं

जब सबा आती है त़यबा से इधर खिलखिला पड़ती हैं कलियां यक्सर
फूल जामे से निकल कर बाहर रुख़े रंगीं की सना करते हैं

तू है वोह बादशहे कौनो मकां कि मलक हफ़्त फ़लक के हर आं
तेरे मौला से शहे अ़र्श ऐवां तेरी दौलत की दुआ़ करते हैं

जिस के जल्वे से उहुद है ताबां मा'दिने नूर है इस का दामां
हम भी उस चांद पे हो कर कुरबां दिले संगीं की जिला करते हैं

क्यूं न ज़ैबा हो तुझे ताज-वरी तेरे ही दम की है सब जल्वा गरी
म-लको जिन्नो बशर हूरो परी जान सब तुझ पे फ़िदा करते हैं

टूट पड़ती हैं बलाएं जिन पर जिन को मिलता नहीं कोई यावर
हर त़रफ़ से वोह पुर-अरमां फिर कर उन के दामन में छुपा करते हैं

लब पर आ जाता है जब नामे जनाब मुंह में घुल जाता है शहदे नायाब
वज्द में हो के हम ऐ जां बेताब अपने लब चूम लिया करते हैं

लब पे किस मुंह से ग़मे उल्फ़त लाएं क्या बला दिल है अलम जिस का सुनाएं
हम तो उन के कफ़े पा पर मिट जाएं उन के दर पर जो मिटा करते हैं

अपने दिल का है उन्हीं से आराम सोंपे हैं अपने उन्हीं को सब काम
लौ लगी है कि अब इस दर के ग़ुलाम चारए दर्दे रज़ा करते हैं

दर मन्क़बत सय्यिदुना अबुल हुसैन अह़मद नूरी قُدِّسَ سِرُّہُ الشَّرِیۡف कि वक़्ते मस्नद नशीनी ह़ज़रते मम्दूह़ दर 1297 सि.हि. अ़र्ज़ कर्दा शुद

बरतर क़ियास से है मक़ामे अबुल हुसैन
सिदरा से पूछो रिफ़्अ़ते बामे अबुल हुसैन

वा रस्ता पाए बस्तए दामे अबुल हुसैन
आज़ाद नार से है गुलामे अबुल हुसैन

ख़त्ते सियह में नूरे इलाही की ताबिशें
क्या सुब्हे़ नूरबार है शामे अबुल हुसैन

साक़ी सुना दे शीशए बग़दाद की टपक
महकी है बूए गुल से मुदामे अबुल हुसैन

बूए कबाबे सोख़्ता आती है मै-कशो
छलका शराबे चिश्त से जामे अबुल हुसैन

गुलगूं सह़र को है स-हरे सोज़े दिल से आंख
सुल्त़ाने सोह्‌र-वर्द है नामे अबुल हुसैन

कुरसी नशीं है नक़्श मुराद उन के फ़ैज़ से
मौलाए नक़्शबन्द है नामे अबुल हुसैन

जिस नख़्ले पाक में हैं छियालीस डालियां
इक शाख़ उन में से है बनामे अबुल हुसैन

मस्तों को ऐ करीम बचाए ख़ुमार से
ता दौर ह़श्र दौरए जामे अबुल हुसैन

उन के भले से लाखों ग़रीबों का है भला
या रब ज़माना-बाद बकामे अबुल हुसैन

मेला लगा है शाने मसीह़ा की दीद है
मुर्दे जिला रहा है ख़िरामे अबुल हुसैन

सर गश्ता मेहरो मह हैं पर अब तक खुला नहीं ق
किस चर्ख़ पर है माहे तमामे अबुल हुसैन

इतना पता मिला है कि येह चर्ख़ चम्बरी
है हफ़्त पाया ज़ीनए बामे अबुल हुसैन

ज़र्रे को मेह्र, क़त़रे को दरिया करे अभी
गर जोश ज़न हो बख़्शिशे आ़मे अबुल हुसैन

यह्या का सदक़ा वारिसे इक़्बाल मन्द पाए
सज्जादए शुयूख़े किरामे अबुल हुसैन

इन्आ़म लें बहारे जिनां तह्नियत लिखें
फूले फले तू नख़्ले मरामे अबुल हुसैन

अल्लाह हम भी देख लें शहज़ादे की बहार
सूंघे गुले मुराद मशामे अबुल हुसैन

आक़ा से मेरे सुथरे मियां का हुवा है नाम
इस अच्छे सुथरे से रहे नामे अबुल हुसैन

या रब वोह चांद जो फ़-लके इ़ज़्ज़ो जाह पर
हर सैर में हो गाम ब गामे अबुल हुसैन

आओ तुम्हें हिलाले सिपह्रे शरफ़ दिखाएं
गरदन झुकाएं बहरे सलामे अबुल हुसैन

कुदरत खु़दा की है कि त़लातुम कनां उठी
बह्रे फ़ना से मौजे दवामे अबुल हुसैन

या रब हमें भी चाश्नी उस अपनी याद की
जिस से है शक्करीं लबो कामे अबुल हुसैन

हां त़ालेए़ रज़ा तेरी अल्लाह रे यावरी
ऐ बन्दए जुदूदे किरामे अबुल हुसैन

ज़ाइरो पासे अदब रख्खो हवस जाने दो

ज़ाइरो पासे अदब रख्खो हवस जाने दो
आंखें अन्धी हुई हैं इन को तरस जाने दो

सूखी जाती है उमीदे गु-रबा की खेती
बूंदियां लक्कए रह़मत की बरस जाने दो

पलटी आती है अभी वज्द में जाने शीरीं
नग़्मए क़ुम का ज़रा कानों में रस जाने दो

हम भी चलते हैं ज़रा क़ाफ़िले वालो ! ठहरो
गठरियां तोशए उम्मीद की कस जाने दो

दीदे गुल और भी करती है क़ियामत दिल पर
हम-सफ़ीरो हमें फिर सूए क़फ़स जाने दो

आतिशे दिल भी तो भड़काओ अदब दां नालो
कौन कहता है कि तुम ज़ब्ते नफ़स जाने दो

यूं तने ज़ार के दरपे हुए दिल के शो'लो
शेवए ख़ाना बर अन्दाज़िये ख़स जाने दो

ऐ रज़ा आह कि यूं सहल कटें जुर्म के साल
दो घड़ी की भी इबादत तो बरस जाने दो

चमने त़यबा में सुम्बुल जो संवारे गेसू

चमने त़यबा में सुम्बुल जो संवारे गेसू
हूर बढ़ कर शि-कने नाज़ पे वारे गेसू

की जो बालों से तेरे रौज़े की जारूब कशी
शब को शबनम ने तबर्रुक को हैं धारे गेसू

हम सियह कारों पे या रब तपिशे मह़शर में
साया अफ़गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गेसू

चरचे हूरों में हैं देखो तो ज़रा बाले बुराक़
सुम्बुले खुल्द के कुरबान उतारे गेसू

आख़िरे ह़ज ग़मे उम्मत में परेशां हो कर
तीरह बख़्तों की शफ़ाअ़त को सिधारे गेसू

गोश तक सुनते थे फ़रियाद अब आए ता दोश
कि बनें ख़ाना बदोशों को सहारे गेसू

सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए
छाए रह़मत की घटा बन के तुम्हारे गेसू

का'बए जां को पिन्हाया है गि़लाफ़े मुश्कीं
उड़ के आए हैं जो अब्रू पे तुम्हारे गेसू

सिल्सिला पा के शफ़ाअ़त का झुके पड़ते हैं
सज्दए शुक्र के करते हैं इशारे गेसू

मुश्क बू कूचा येह किस फूल का झाड़ा उन से
हूरियो अ़म्बरे सारा हुए सारे गेसू

देखो क़ुरआं में शबे क़द्र है ता मत़्लए फ़ज्र
या'नी नज़्दीक हैं आ़रिज़ के वोह प्यारे गेसू

भीनी ख़ुश्बू से महक जाती हैं गलियां वल्लाह
कैसे फूलों में बसाए हैं तुम्हारे गेसू

शाने रह़मत है कि शाना न जुदा हो दम भर
सीना चाकों पे कुछ इस दरजा हैं प्यारे गेसू

शाना है पन्जए क़ुदरत तेरे बालों के लिये
कैसे हाथों ने शहा तेरे संवारे गेसू

उहुदे पाक की चोटी से उलझ ले शब भर
सुब्ह़ होने दो शबे ईद ने हारे गेसू

मुज़्दा हो क़िब्ला से घन्घोर घटाएं उमडीं
अब्रूओं पर वोह झुके झूम के बारे गेसू

तारे शीराज़ए मज्मूअ़ए कौनैन हैं येह
ह़ाल खुल जाए जो इक दम हों कनारे गेसू

तेल की बूंदें टपक्ती नहीं बालों से रज़ा
सुब्हे़ आ़रिज़ पे लुटाते हैं सितारे गेसू

ज़माना ह़ज का है जल्वा दिया है शाहिदे गुल को

ज़माना ह़ज का है जल्वा दिया है शाहिदे गुल को
इलाही त़ाक़ते परवाज़ दे परहाए बुलबुल को

बहारें आईं जोबन पर घिरा है अब्र रह़मत का
लबे मुश्ताक़ भीगें दे इजाज़त साक़िया मुल को

मिले लब से वोह मुश्कीं मोह्‌र वाली दम में दम आए
टपक सुन कर क़ुमे ईसा कहूं मस्ती में क़ुलक़ुल को

मचल जाऊं सुवाले मुद्दआ़ पर थाम कर दामन
बहक्ने का बहाना पाऊं क़स्दे बे तअम्मुल को

दुआ़ कर बख़्ते ख़ुफ़्ता जाग हंगामे इजाबत है
हटाया सुब्ह़े रुख़ से शाह ने शबहाए काकुल को

ज़बाने फ़ल्सफ़ी से अम्न ख़र्क़ो इल्तियाम असरा
पनाहे दौरे रह़मत हाए यक साअ़त तसल्सुल को

दो शम्बा मुस्त़फ़ा का जुम्अ़ए आदम से बेहतर है
सिखाना क्या लिह़ाज़े ह़ैसियत ख़ूए तअम्मुल को

वुफ़ूरे शाने रह़मत के सबब जुरअत है ऐ प्यारे
न रख बहरे ख़ुदा शरमिन्दा अ़र्ज़े बे तअम्मुल को

परेशानी में नाम उन का दिले सद चाक से निकला
इजाबत शाना करने आई गेसूए तवस्सुल को

रज़ा नुह सब्ज़ए गर्दूं हैं कोतल जिस के मौकिब के
कोई क्या लिख सके उस की सुवारी के तजम्मुल को

याद में जिस की नहीं होशे तनो जां हम को

याद में जिस की नहीं होशे तनो जां हम को
फिर दिखा दे वोह रुख़ ऐ मेहरे फ़रोज़ां हम को

देर से आप में आना नहीं मिलता है हमें
क्या ही ख़ुद-रफ़्ता किया जल्वए जानां ! हम को

जिस तबस्सुम ने गुलिस्तां पे गिराई बिजली
फिर दिखा दे वोह अदाए गुले ख़न्दां हम को

काश आवीज़ए क़िन्दीले मदीना हो वोह दिल
जिस की सोज़िश ने किया रश्के चराग़ां हम को

अ़र्श जिस ख़ूबिये रफ़्तार का पामाल हुवा
दो क़दम चल के दिखा सर्वे ख़िरामां ! हम को

शम्ए़ त़यबा से मैं परवाना रहूं कब तक दूर
हां जला दे श-ररे आतिशे पिन्हां ! हम को

ख़ौफ़ है सम्अ़ ख़राशिये सगे त़यबा का
वरना क्या याद नहीं ना-लओ अफ़ग़ां हम को

ख़ाक हो जाएं दरे पाक पे ह़सरत मिट जाए
या इलाही न फिरा बे सरो सामां हम को

ख़ारे सहराए मदीना न निकल जाए कहीं
वह़्शते दिल न फिरा कोहो बयाबां हम को

तंग आए हैं दो आ़लम तेरी बेताबी से
चैन लेने दे तपे सीनए सोज़ां हम को

पाउं ग़िरबाल हुए राहे मदीना न मिली
ऐ जुनूं! अब तो मिले रुख़्सते ज़िन्दां हम को

मेरे हर ज़ख़्मे जिगर से येह निकलती है सदा
ऐ मलीहे़ अ़-रबी! कर दे नमक दां हम को

सैरे गुलशन से असीराने क़फ़स को क्या काम
न दे तक्लीफ़े चमन बुलबुले बुस्तां हम को

जब से आंखों में समाई है मदीने की बहार
नज़र आते हैं ख़ज़ां-दीदा गुलिस्तां हम को

गर लबे पाक से इक़्रारे शफ़ाअ़त हो जाए
यूं न बेचैन रखे जोशिशे इ़स्यां हम को

नय्यरे ह़श्र ने इक आग लगा रख्खी है!
तेज़ है धूप मिले सायए दामां हम को

रह़्म फ़रमाइये या शाह कि अब ताब नहीं
ता-ब-के ख़ून रुलाए ग़मे हिज्रां हम को

चाके दामां में न थक जाइयो ऐ दस्ते जुनूं
पुर्ज़े करना है अभी जेबो गिरीबां हम को

पर्दा उस चेहरए अन्वर से उठा कर इक बार
अपना आईना बना ऐ महे ताबां हम को

ऐ रज़ा वस्फ़े रुख़े पाक सुनाने के लिये
नज़्र देते हैं चमन, मुर्ग़े ग़ज़ल ख़्वां हम को

ग़ज़ल, कि दरबारए अ़ज़्मे सफ़रे अत़्हर मदीनए मुनव्वरह अज़ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा बा 'दे ह़ज ब मुह़र्रम 1296 सि.हि. अ़र्ज़ कर्दा शुद

ह़ाजियो ! आओ शहन्शाह का रौज़ा देखो
का'बा तो देख चुके का'बे का का'बा देखो

रुक्ने शामी से मिटी वह़्शते शामे ग़ुरबत
अब मदीने को चलो सुब्ह़े दिलआरा देखो

आबे ज़मज़म तो पिया ख़ूब बुझाईं प्यासें
आओ जूदे शहे कौसर का भी दरिया देखो

ज़ेरे मीज़ाब मिले ख़ूब करम के छींटे
अब्रे रह़मत का यहां ज़ोरे बरसना देखो

धूम देखी है दरे का'बा पे बेताबों की
उन के मुश्ताक़ों में ह़सरत का तड़पना देखो

मिस्ले परवाना फिरा करते थे जिस शम्अ़ के गिर्द
अपनी उस शम्अ़ को परवाना यहां का देखो

ख़ूब आंखों से लगाया है गि़लाफ़े का'बा
क़स्रे महबूब के पर्दे का भी जल्वा देखो

वां मुती़ओं का जिगर ख़ौफ़ से पानी पाया
यां सियह कारों का दामन पे मचलना देखो

अव्वलीं ख़ानए ह़क़ की तो ज़ियाएं देखीं
आख़िरीं बैते नबी का भी तजल्ला देखो

ज़ीनते का'बा में था लाख अ़रूसों का बनाव
जल्वा फ़रमा यहां कौनैन का दूल्हा देखो

ऐ-मने तू़र का था रुक्ने यमानी में फ़रोग़
शो'लए तू़र यहां अन्जुमन-आरा देखो

मेहरे मादर का मज़ा देती है आग़ोशे ह़ती़म
जिन पे मां बाप फ़िदा यां करम उन का देखो

अ़र्ज़े ह़ाजत में रहा का'बा कफ़ीले इन्जाह़
आओ अब दाद रसिये शहे त़यबा देखो

धो चुका ज़ुल्मते दिल बोसए संगे अस्वद
ख़ाक बोसिये मदीना का भी रुत्बा देखो

कर चुकी रिफ़्अ़ते का'बा पे नज़र परवाज़ें
टोपी अब थाम के ख़ाके दरे वाला देखो

बे नियाज़ी से वहां कांपती पाई ताअ़त
जोशे रह़मत पे यहां नाज़ गुनह का देखो

जुम्अ़ए मक्का था ईद अहले इबादत के लिये
मुजरिमो ! आओ यहां ईदे दोशम्बा देखो

मुल्तज़म से तो गले लग के निकाले अरमां
अ-दबो शौक़ का यां बाहम उलझना देखो

ख़ूब मस्आ़ में ब उम्मीदे सफ़ा दौड़ लिये
रहे जानां की सफ़ा का भी तमाशा देखो

रक़्से बिस्मिल की बहारें तो मिना में देखीं
दिले ख़ूंना ब फ़शां का भी तड़पना देखो

ग़ौर से सुन तो रज़ा का'बे से आती है सदा
मेरी आंखों से मेरे प्यारे का रौज़ा देखो

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो
जिब्रील पर बिछाएं तो पर को ख़बर न हो

कांटा मेरे जिगर से ग़मे रोज़गार का
यूं खींच लीजिये कि जिगर को ख़बर न हो

फ़रियाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

कहती थी येह बुराक़ से उस की सबुक-रवी
यूं जाइये कि गर्दे सफ़र को ख़बर न हो

फ़रमाते हैं येह दोनों हैं सरदारे दो जहां
ऐ मुर्तज़ा ! अ़तीक़ो उ़मर को ख़बर न हो

ऐसा गुमा दे उन की विला में ख़ुदा हमें
ढूंढा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

आ दिल ! ह़रम को रोकने वालों से छुप के आज
यूं उठ चलें कि पहलूओ बर को ख़बर न हो

तैरे ह़रम हैं येह कहीं रिश्ता बपा न हो
यूं देखिये कि तारे नज़र को ख़बर न हो

ऐ ख़ारे त़यबा ! देख कि दामन न भीग जाए
यूं दिल में आ कि दीदए तर को ख़बर न हो

ऐ शौक़े दिल ! येह सज्दा गर उन को रवा नहीं
अच्छा ! वोह सज्दा कीजे कि सर को ख़बर न हो

उन के सिवा रज़ा कोई ह़ामी नहीं न जहां
गुज़रा करे पिसर पे पिदर को ख़बर न हो

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊं नज़्अ़ की तक्लीफ़ को
शादिये दीदारे हुस्ने मुस्त़फ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख़्त रात
उन के प्यारे मुंह की सुब्हे़ जां फ़िज़ा का साथ हो

या इलाही जब पड़े मह़शर में शोरे दारो गीर
अम्न देने वाले प्यारे पेश्वा का साथ हो

या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साहि़बे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो

या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुरशीदे ह़श्र
सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

या इलाही गर्मिये मह़शर से जब भड़कें बदन
दामने मह़बूब की ठन्डी हवा का साथ हो

या इलाही नामए आ'माल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़ता का साथ हो

या इलाही जब बहें आंखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होंटों की दुआ का साथ हो

या इलाही जब हिसाबे ख़न्दए बे जा रुलाए
चश्मे गिर्यांने शफ़ीए मुर्तजा का साथ हो

या इलाही रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रों की हया का साथ हो

या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात
आफ़्ताबे हाशिमी नूरुल हुदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा का साथ हो

या इलाही जो दुआए नेक मैं तुझ से करूं
कुदसियों के लब से आमीं रब्बना का साथ हो

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदारे इश्क़े मुस्तफ़ा का साथ हो

क्या ही ज़ौक़ अफ़्ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह

क्या ही ज़ौक़ अफ़्ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह
क़र्ज़ लेती है गुनह परहेज़ गारी वाह वाह

ख़ामए क़ुदरत का हुस्ने दस्त-कारी वाह वाह
क्या ही तस्वीर अपने प्यारे की संवारी वाह वाह

अश्क शब भर इन्तिज़ारे अफ़्वे उम्मत में बहें
मैं फ़िदा चांद और यूं अख़्तर शुमारी वाह वाह

उंग्लियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नद्दियां पंजाबे रह़मत की हैं जारी वाह वाह

नूर की ख़ैरात लेने दौड़ते हैं मेहरो माह
उठती है किस शान से गर्दे सुवारी वाह वाह

नीम जल्वे की न ताब आए क़मर सां तो सही
मेह्र और उन तल्वों की आईना दारी वाह वाह

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है
ना तुवां के सिर पर इतना बोझ भारी वाह वाह

मुजरिमों को ढूंडती फिरती है रह़मत की निगाह
त़ालेए़ बर-गशता तेरी साज़गारी वाह वाह

अ़र्ज़ बेगी है शफ़ाअ़त अ़फ़्व की सरकार में
छंट रही है मुजरिमों की फ़र्द सारी वाह वाह

क्या मदीने से सबा आई कि फूलों में है आज
कुछ नई बू भीनी भीनी प्यारी प्यारी वाह वाह

ख़ुद रहे पर्दे में और आईना अ़क्से ख़ास का
भेज कर अन्जानों से की राहदारी वाह वाह

इस त़रफ़ रौज़े का नूर उस सम्त मिम्बर की बहार
बीच में जन्नत की प्यारी प्यारी क्यारी वाह वाह

सदके़ इस इन्आ़म के कु़रबान इस इक्राम के
हो रही है दोनों आ़लम में तुम्हारी वाह वाह

पारए दिल भी न निकला दिल से तोह़फ़े में रज़ा
उन सगाने कू से इतनी जान प्यारी वाह वाह

रौनके़ बज़्मे जहां हैं आ़शिक़ाने सोख़्ता

रौनके़ बज़्मे जहां हैं आ़शिक़ाने सोख़्ता
कह रही है शम्अ़ की गोया ज़बाने सोख़्ता

जिस को कु़र्से मेह्र समझा है जहां ऐ मुन्इमो !
उन के ख़्वाने जूद से है एक नाने सोख़्ता

माहे मन येह नय्यरे मह़शर की गरमी ता ब-के
आतशे इ़स्यां में ख़ुद जलती है जाने सोख़्ता

बर्क़े अंगुश्ते नबी चमकी थी उस पर एक बार
आज तक है सीनए मह में निशाने सोख़्ता

मेहरे आ़लम-ताब झुकता है पए तस्लीम रोज़
पेशे ज़र्राते मज़ारे बे दिलाने सोख़्ता

कूचए गेसूए जानां से चले ठन्डी नसीम
बालो पर अफ़्शां हों या रब बुलबुलाने सोख़्ता

बहरे ह़क़ ऐ बह़्रे रह़मत इक निगाहे लुत़्फ़-बार
ता ब-के बे आब तड़पें माहियाने सोख़्ता

रू कशे ख़ुरशीदे मह़शर हो तुम्हारे फ़ैज़ से
इक शरारे सीनए शैदाइयाने सोख़्ता

आतशे तर दामनी ने दिल किये क्या क्या कबाब
ख़िज़्र की जां हो जिला दो माहियाने सोख़्ता

आतशे गुलहाए त़यबा पर जलाने के लिये
जान के त़ालिब हैं प्यारे बुलबुलाने सोख़्ता

लुत़्फ़े बर्क़े जल्वए मे'राज लाया वज्द में
शो'लए जव्वाला सां है आस्माने सोख़्ता

ऐ रज़ा मज़्मून सोज़े दिल की रिफ़्अ़त ने किया
इस ज़मीने सोख़्ता को आस्माने सोख़्ता

सब से औला व आ'ला हमारा नबी

सब से औला व आ'ला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

अपने मौला का प्यारा हमारा नबी
दोनों आ़लम का दूल्हा हमारा नबी

बज़्मे आख़िर का शम्अ़ फ़रोज़ां हुवा
नूरे अव्वल का जल्वा हमारा नबी

जिस को शायां है अ़र्शे ख़ुदा पर जुलूस
है वोह सुल्ताने वाला हमारा नबी

बुझ गईं जिस के आगे सभी मश्अ़लें
शम्अ़ वोह ले कर आया हमारा नबी

जिस के तल्वों का धोवन है आबे ह़यात
है वोह जाने मसीह़ा हमारा नबी

अ़र्शो कुरसी की थीं आईना बन्दियां
सूए ह़क़ जब सिधारा हमारा नबी

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आ'ला हमारा नबी

हुस्न खाता है जिस के नमक की क़सम
वोह मलीहे़ दिलआरा हमारा नबी

ज़िक्र सब फीके जब तक न मज़्कूर हो
न-मकीं हुस्न वाला हमारा नबी

जिस की दो बूंद हैं कौसरो सल-सबील
है वोह रह़मत की दरिया हमारा नबी

जैसे सब का खुदा एक है वैसे ही
इन का उन का तुम्हारा हमारा नबी

क़रनों बदली रसूलों की होती रही
चांद बदली का निकला हमारा नबी

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गए
पर न डूबे न डूबा हमारा नबी

मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार
ताजदारों का आक़ा हमारा नबी

ला मकां तक उजाला है जिस का वोह है
हर मकां का उजाला हमारा नबी

सारे अच्छों में अच्छा समझिये जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी

सारे ऊंचों में ऊंचा समझिये जिसे
है उस ऊंचे से ऊंचा हमारा नबी

अम्बिया से करूं अ़र्ज़ क्यूं मालिको !
क्या नबी है तुम्हारा हमारा नबी

जिस ने टुकड़े किये हैं क़मर के वोह है
नूरे वह़्दत का टुकड़ा हमारा नबी

सब चमक वाले उजलों में चमका किये
अन्धे शीशों में चमका हमारा नबी

जिस ने मुर्दा दिलों को दी उ़म्रे अबद
है वोह जाने मसीह़ा हमारा नबी

ग़मज़दों को रज़ा मुज़्दा दीजे कि है
बे कसों का सहारा हमारा नबी

दिल को उन से ख़ुदा जुदा न करे

दिल को उन से ख़ुदा जुदा न करे
बे कसी लूट ले ख़ुदा न करे

इस में रौज़े का सज्दा हो कि त़वाफ़
होश में जो न हो वोह क्या न करे

येह वोही हैं कि बख़्श देते हैं
कौन इन जुर्मों पर सज़ा न करे

सब त़बीबों ने दे दिया है जवाब
आह ईसा अगर दवा न करे

दिल कहां ले चला ह़रम से मुझे
अरे तेरा बुरा ख़ुदा न करे

उ़ज़्र उम्मीदे अ़फ़्व गर न सुनें
रू सियाह और क्या बहाना करे

दिल में रोशन है शम्ए़ इश्क़े हुज़ूर
काश जोशे हवस हवा न करे

हश्र में हम भी सैर देखेंगे
मुन्किर आज उन से इल्तिजा न करे

ज़ो'फ़ माना मगर येह ज़ालिम दिल
उन के रस्ते में तो थका न करे

जब तेरी ख़ू है सब का जी रखना
वोही अच्छा जो दिल बुरा न करे

दिल से इक ज़ौक़े मै का त़ालिब हूं
कौन कहता है इत्तिक़ा न करे

ले रज़ा सब चले मदीने को
मैं न जाऊं अरे ख़ुदा न करे

मोमिन वोह है जो उन की इ़ज़्ज़त पे मरे दिल से

मोमिन वोह है जो उन की इ़ज़्ज़त पे मरे दिल से
ता'ज़ीम भी करता है नज्दी तो मरे दिल से

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से

बिछड़ी है गली कैसी बिगड़ी है बनी कैसी
पूछो कोई येह सदमा अरमान भरे दिल से

क्या उस को गिराए दह्र जिस पर तू नज़र रख्खे
ख़ाक उस को उठाए ह़श्र जो तेरे गिरे दिल से

बहका है कहां मज्नूं ले डाली बनों की ख़ाक
दम भर न किया ख़ैमा लैला ने परे दिल से

सोने को तपाएं जब कुछ मील हो या कुछ मैल
क्या काम जहन्नम के दहरे को खरे दिल से

आता है दरे वाला यूं ज़ौक़े त़वाफ़ आना
दिल जान से सदक़े हो सिर गिर्द फिरे दिल से

ऐ अब्रे करम फ़रियाद फ़रियाद जला डाला
इस सोज़िशे ग़म को है ज़िद मेरे हरे दिल से

दरिया है चढ़ा तेरा कितनी ही उड़ाईं ख़ाक
उतरेंगे कहां मुजरिम ऐ अ़फ़्व तेरे दिल से

क्या जानें यमे ग़म में दिल डूब गया कैसा
किस तह को गए अरमां अब तक न तेरे दिल से

करता तो है याद उन की ग़फ़्लत को ज़रा रोके
लिल्लाह रज़ा दिल से हां दिल से अरे दिल से

अल्लाह अल्लाह के नबी से

अल्लाह अल्लाह के नबी से
फ़रियाद है नफ़्स की बदी से

दिन भर खेलों में ख़ाक उड़ाई
लाज आई न ज़र्रों की हंसी से

शब भर सोने ही से ग़रज़ थी
तारों ने हज़ार दांत पीसे

ईमान पे मौत बेहतर ओ नफ़्स
तेरी नापाक ज़िन्दगी से

ओ शह्द नुमाए ज़ह्र दर जाम
गुम जाऊं किधर तेरी बदी से

गहरे प्यारे पुराने दिलसोज़
गुज़रा मैं तेरी दोस्ती से

तुझ से जो उठाए मैं ने सदमे
ऐसे न मिले कभी किसी से

उफ़ रे ख़ुद काम बे मुरुव्वत
पड़ता है काम आदमी से

तू ने ही किया ख़ुदा से नादिम
तू ने ही किया ख़जिल नबी से

कैसे आक़ा का हुक्म टाला
हम मर मिटे तेरी ख़ुद-सरी से

आती न थी जब बदी भी तुझ को
हम जानते हैं तुझे जभी से

हद के ज़ालिम सितम के कट्टर
पथ्थर शरमाएं तेरे जी से

हम ख़ाक में मिल चुके हैं कब के
निकला न ग़ुबार तेरे जी से

है ज़ालिम ! मैं निबाहूं तुझ से
अल्लाह बचाए उस घड़ी से

जो तुम को न जानता हो हज़रत
चालें चलिये उस अज्नबी से

अल्लाह के सामने वोह गुन थे
यारों में कैसे मुत्तक़ी से

रहज़न ने लूट ली कमाई
फ़रियाद है ख़िज़्र हाशिमी से

अल्लाह कूंएं में ख़ुद गिरा हूं
अपनी नालिश करूं तुझी से

हैं पुश्ते पनाह ग़ौसे आ'ज़म
क्यूं डरते हो तुम रज़ा किसी से

श-ज-रए ड़लिय्या ह़ज़रातें आ़लिय्या क़ादिरिय्या ब-रकातिय्या

رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن اِلٰی یَوۡمِ الدِّیۡن

या इलाही रह़्म फ़रमा मुस्त़फ़ा के वासित़े
या रसूलल्लाह करम कीजे ख़ुदा के वासित़े

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा[1] के वासित़े
कर बलाएं रद शहीदे करबला[2] के वासित़े

सय्यिदे सज्जाद[3] के सदक़े में साजिद रख मुझे
इ़ल्मे ह़क़ दे बाक़िरे[4] इ़ल्मे हुदा के वासित़े

सिद्क़े सादिक़[5] का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम[6] और रज़ा[7] के वासित़े

बहरे मा'रूफ़ो[8] सरी[9] मा'रूफ़ दे बे ख़ुद-सरी
जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे[10] बा सफ़ा के वासित़े

बहरे शिब्ली[11] शेरे ह़क़ दुन्या के कुत्तों से बचा
एक का रख अ़ब्दे[12] वाह़िद बे रिया के वासित़े

बुल फ़रह[13] का सदक़ा कर ग़म को फ़रह़ दे हुस्नो सा'द
बुल ह़सन[14] और बू सईदे[15] सा'दे ज़ा के वासिते

क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरिय्यों में उठा
क़दरे अ़ब्दुल क़ादिरे[16] क़ुदरत नुमा के वासिते

اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهُمْ رِزْقًا से दे रिज़्क़े ह़सन
बन्दए रज़्ज़ाक़[17] ताजुल अस्फ़िया के वासिते

नस्र[18] अबी सालेह़ का सदक़ा सालेह़ो मन्सूर रख
दे ह़याते दीं मुहि़य्ये[19] जां फ़िज़ा के वासिते

तूरे[(1)] इरफ़ानो उ़लुव्वो ह़म्दो हुस्ना व बहा
दे अ़ली[20] मूसा[21] ह़सन[22] अह़मद[23] बहा[24] के वासिते

---

1 : या'नी मर्तबा मा'रिफ़त और बुलन्दी का और ख़ूबी और बेहतरी और नूर अ़ता कर इन मशाइख़े ख़म्सा के वासिते इस में उ़लुव ब मुना–सबत नामे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली है और तूरे इरफ़ां ब मुना–सबत नामे पाक ह़ज़रते सय्यिद मूसा और हुस्ना ब मुना–सबत नामे पाक ह़ज़रते सय्यिदी ह़सन और अह़मद =

बहरे इब्राहीम[25] मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी[26] बादशा के वासिते

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल
शह ज़िया[27] मौला जमालुल[28] औलिया के वासिते

दे मुहम्मद[29] के लिये रोज़ी कर अहमद[30] के लिये
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह[31] से हिस्सा गदा के वासिते

दीनो दुन्या के मुझे ब-रकात दे ब-रकात[32] से
इश्क़े हक़ दे इश्क़ी(1) इश्क़े इन्तिमा के वासिते

हुब्बे अहले बैत दे आले[33] मुहम्मद के लिये
कर शहीदे इश्क़ हम्ज़ा[34] पेश्वा के वासिते

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुरनूर कर
अच्छे प्यारे शम्से[35] दीं बदरुल उ़ला के वासिते

= ब मुना-सबत नाम सय्यिदी अहमद और बहा ब मुना-सबत नामे पाक हज़रत सय्यिदी बहाउल मिल्ल-त वद्दीन قُدِّسَتْ اَسْرَارُهُمْ ।

1 : "इश्क़ी" हज़रते सय्यिदुना शाह ब-र-कतुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का तख़ल्लुस है, और "इन्तिमा" ब मा'ना इन्तिसाब या'नी निस्बते इश्क़ रखने वाले ।12

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हज़रते आले[36] रसूले[(1)] मुक़्तदा के वासिते

सदक़ा इन आ'यां का दे छ ऐन इज़्ज़ इल्मो अमल
अफ़्वो इरफ़ां आफ़ियत अहमद रज़ा के वासिते

जिसे जो मिला......

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَ اللّٰهُ يُعْطِى" या'नी **अल्लाह** अता करता है और मैं तक़्सीम करता हूं। (صحیح بخاری،ج۱،الحدیث:۷۱، ص۴۳) इस हदीसे पाक के तहत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : दीन व दुन्या की सारी ने'मतें इल्म, ईमान, माल औलाद वग़ैरा देता **अल्लाह** है बांटते हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिसे जो मिला हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथों मिला क्यूं कि यहां न अल्लाह की दैन में कोई क़ैद है न हुज़ूर की तक़्सीम में। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 187)

1 : उ़र्स शरीफ़ 16,17,18 ज़िल हिज्जतिल हराम, बरेली शरीफ़ महल्ला सौदागरान में हुवा करता है।

अ़र्शे ह़क़ है मस्नदे रिफ़्अ़त रसूलुल्लाह की

अ़र्शे ह़क़ है मस्नदे रिफ़्अ़त रसूलुल्लाह की
देखनी है ह़श्र में इ़ज़्ज़त रसूलुल्लाह की

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की

काफ़िरों पर तैग़े वाला से गिरी बर्क़े ग़ज़ब
अब्र आसा छा गई हैबत रसूलुल्लाह की

لَاوَرَبِّ الْعَرْش जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में ने'मत रसूलुल्लाह की

वोह जहन्नम में गया जो उन से मुस्तग़नी हुवा
है ख़लीलुल्लाह को ह़ाजत रसूलुल्लाह की

सूरज उलटे पाउं पलटे चांद इशारे से हो चाक
अन्धे नज्दी देख ले क़ुदरत रसूलुल्लाह की

तुझ से और जन्नत से क्या मत़लब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जूयां रहे
फिर कहे मरदक कि हूं उम्मत रसूलुल्लाह की

नज्दी उस ने तुझ को मोहलत दी कि इस आ़लम में है
काफ़िरो मुरतद पे भी रह़मत रसूलुल्लाह की

हम भिकारी वोह करीम उन का ख़ुदा उन से फ़ुज़ूं
और ना कहना नहीं आ़दत रसूलुल्लाह की

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाउ है इ़तरत रसूलुल्लाह की

ख़ाक हो कर इ़श्क़ में आराम से सोना मिला
जान की इक्सीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की

या रब इक साअ़त में धुल जाएं सियह कारों के जुर्म
जोश में आ जाए अब रह़मत रसूलुल्लाह की

है गुले बाग़े क़ुदुस रुख़्सारे ज़ैबाए हुज़ूर !
सर्वे गुलज़ारे क़िदम क़ामत रसूलुल्लाह की

ऐ रज़ा ख़ुद साह़िबे क़ुरआं है मद्दाह़े हुज़ूर
तुझ से कब मुम्किन है फिर मिदह़त रसूलुल्लाह की

क़ाफ़िले ने सूए त़यबा कमर आराई की

क़ाफ़िले ने सूए त़यबा कमर आराई की
मुश्किल आसान इलाही मेरी तन्हाई की

लाज रख ली त़-मए अ़फ़्व के सौदाई की
ऐ मैं कुरबां मेरे आक़ा बड़ी आक़ाई की

फ़र्श ता अ़र्श सब आईना ज़्माइर ह़ाज़िर
बस क़सम खाइये उम्मी तेरी दानाई की

शश जिहत सम्ते मुक़ाबिल शबो रोज़ एक ही ह़ाल
धूम वन्नज्म में है आप की बीनाई की

पानसो500 साल की राह ऐसी है जैसे दो गाम
आस हम को भी लगी है तेरी शिनवाई की

चांद इशारे का हिला हुक्म का बांधा सूरज
वाह क्या बात शहा तेरी तुवानाई की

तंग ठहरी है रज़ा जिस के लिये वुस्अ़ते अ़र्श
बस जगह दिल में है उस जल्वए हरजाई की

पेशे ह़क़ मुज़्दा शफ़ाअ़त का सुनाते जाएंगे

पेशे ह़क़ मुज़्दा शफ़ाअ़त का सुनाते जाएंगे
आप रोते जाएंगे हम को हंसाते जाएंगे

दिल निकल जाने की जा है आह किन आंखों से वोह
हम से प्यासों के लिये दरिया बहाते जाएंगे

कुश्त-गाने गर्मिये मह़शर को वोह जाने मसीह़
आज दामन की हवा दे कर जिलाते जाएंगे

गुल खिलेगा आज येह उन की नसीमे फ़ैज़ से
ख़ून रोते आएंगे हम मुस्कुराते जाएंगे

हां चलो ह़सरत ज़दो सुनते हैं वोह दिन आज है
थी ख़बर जिस की कि वोह जल्वा दिखाते जाएंगे

आज ईदे आ़शिक़ां है गर ख़ुदा चाहे कि वोह
अब्रूए पैवस्ता का आ़लम दिखाते जाएंगे

कुछ ख़बर भी है फ़क़ीरो आज वोह दिन है कि वोह
ने'मते ख़ुल्द अपने सदक़े में लुटाते जाएंगे

ख़ाक उफ़्तादो बस उन के आने ही की देर है
ख़ुद वोह गिर कर सज्दा में तुम को उठाते जाएंगे

वुस्अ़तें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जाएंगे और वोह छुपाते जाएंगे

लो वोह आए मुस्कुराते हम असीरों की त़रफ़
ख़िर्मने इस्यां पर अब बिजली गिराते जाएंगे

आंख खोलो ग़मज़दो देखो वोह गिर्यां आए हैं
लौहे़ दिल से नक़्शे ग़म को अब मिटाते जाएंगे

सोख़्ता जानों पे वोह पुरजोशे रह़मत आए हैं
आबे कौसर से लगी दिल की बुझाते जाएंगे

आफ़्ताब उन का ही चमकेगा जब औरों के चराग़
सर-सरे जोशे बला से झिल-मिलाते जाएंगे

पाए कूबां पुल से गुज़रेंगे तेरी आवाज़ पर
रब्बे सल्लिम की सदा पर वज्द लाते जाएंगे

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैतां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

ह़श्र तक डालेंगे हम पैदाइशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारिस नज्द के क़ल्ए़ गिराते जाएंगे

ख़ाक हो जाएं अ़दू जल कर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उन का सुनाते जाएंगे

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

बरसता नहीं देख कर अब्रे रह़मत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

मदीने के ख़ित्ते ख़ुदा तुझ को रख्खे
ग़रीबों फ़क़ीरों के ठहराने वाले

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

मैं मुजरिम हूं आक़ा मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले

ह़रम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़अ़ है ओ जाने वाले

चल उठ जब्हा फ़रसा हो साक़ी के दर पर
दरे जूद ऐ मेरे मस्ताने वाले

तेरा खाएं तेरे गुलामों से उलझें
हैं मुन्किर अ़जब खाने गुर्राने वाले

रहेगा यूं ही उन का चरचा रहेगा
पड़े ख़ाक हो जाएं जल जाने वाले

अब आई शफ़ाअ़त की साअ़त अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

आंखें रो रो के सुजाने वाले

आंखें रो रो के सुजाने वाले
जाने वाले नहीं आने वाले

कोई दिन में येह सरा ऊजड़ है
अरे ओ छाउनी छाने वाले

ज़ब्ह़ होते हैं वत़न से बिछड़े
देस क्यूं गाते हैं गाने वाले

अरे बद फ़ाल बुरी होती है
देस का जंगला सुनाने वाले

सुन लें आ'दा मैं बिगड़ने का नहीं
वोह सलामत हैं बनाने वाले

आंखें कुछ कहती हैं तुझ से पैग़ाम
ओ दरे यार के जाने वाले

फिर न करवट ली मदीने की त़रफ़
अरे चल झूटे बहाने वाले

नफ़्स मैं ख़ाक हुवा तू न मिटा
है ! मेरी जान के खाने वाले

जीते क्या देख के हैं ऐ हूरो !
त़यबा से ख़ुल्द में आने वाले

नीम जल्वे में दो आ़लम गुलज़ार
वाह वा रंग जमाने वाले

हुस्न तेरा सा न देखा न सुना
कहते हैं अगले ज़माने वाले

वोही धूम उन की है مَاشَآءَاللّٰه
मिट गए आप मिटाने वाले

लबे सैराब का सदक़ा पानी
ऐ लगी दिल बुझाने वाले

साथ ले लो मुझे मैं मुजरिम हूं
राह में पड़ते हैं थाने वाले

हो गया धक से कलेजा मेरा
हाए रुख़्सत की सुनाने वाले

ख़ल्क़ तो क्या कि हैं ख़ालिक़ को अज़ीज़
कुछ अजब भाते हैं भाने वाले

कुश्तए दश्ते ह़रम जन्नत की
खिड़कियां अपने सिरहाने वाले

क्यूं रज़ा आज गली सूनी है
उठ मेरे धूम मचाने वाले

क्या महक्ते हैं महक्ने वाले

क्या महक्ते हैं महक्ने वाले
बू पे चलते हैं भटक्ने वाले

जगमगा उठी मेरी गोर की ख़ाक
तेरे कुरबान चमक्ने वाले

महे बे दाग़ के सदके़ जाऊं
यूं दमक्ते हैं दमक्ने वाले

अ़र्श तक फैली है ताबे आ़रिज़
क्या झलक्ते हैं झलक्ने वाले

गुले त़यबा की सना गाते हैं
नख़्ले तूबा पे चहक्ने वाले

आ़सियो ! थाम लो दामन उन का
वोह नहीं हाथ झटक्ने वाले

अब्रे रह़मत के सलामी रहना
फलते हैं पौदे लचक्ने वाले

अरे येह जल्वा गहे जानां है
कुछ अदब भी है फड़क्ने वाले

सुन्नियो ! उन से मदद मांगे जाओ
पड़े बकते रहें बकने वाले

शम्ए़ यादे रुख़े जानां न बुझे
ख़ाक हो जाएं भड़क्ने वाले

मौत कहती है कि जल्वा है क़रीब
इक ज़रा सो लें बिलक्ने वाले

कोई उन तेज़ रवों से कह दो
किस के हो कर रहें थकने वाले

दिल सुलगता ही भला है ऐ ज़ब्त़
बुझ भी जाते हैं दहक्ने वाले

हम भी कुम्ह्लाने से ग़ाफ़िल थे कभी
क्या हंसा गुन्चे चटक्ने वाले

नख़्ल से छुट के येह क्या ह़ाल हुवा
आह ओ पत्ते खड़क्ने वाले

जब गिरे मुंह सूए मैख़ाना था
होश में हैं येह बहक्ने वाले

देख ओ ज़ख़्मे दिल आपे को संभाल
फूट बहते हैं तपक्ने वाले

मै कहां और कहां मैं ज़ाहिद
यूं भी तो छकते हैं छकने वाले

कफ़े दरियाए करम में हैं रज़ा
पांच फ़व्वारे छलक्ने वाले

राह पुरख़ार है क्या होना है

राह पुरख़ार है क्या होना है
पाउं अफ़्गार है क्या होना है

ख़ुश्क है ख़ून कि दुश्मन ज़ालिम
सख़्त ख़ूंख़ार है क्या होना है

हम को बिद कर वोही करना जिस से
दोस्त बेज़ार है क्या होना है

तन की अब कौन ख़बर ले हय ! हय !
दिल का आज़ार है क्या होना है

मीठे शरबत दे मसीहा जब भी
ज़िद है इन्कार है क्या होना है

दिल, कि तीमार हमारा करता
आप बीमार है क्या होना है

पर कटे तंग क़फ़स और बुलबुल
नौ गिरिफ़्तार है क्या होना है

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह
वोह ख़बरदार है क्या होना है

अरे ओ मुजरिमे बे परवा देख
सर पे तलवार है क्या होना है

तेरे बीमार को मेरे ईसा
ग़श लगातार है क्या होना है

नफ़्से पुरज़ोर का वोह ज़ोर और दिल
ज़ेर है ज़ार है क्या होना है

काम ज़िन्दां के किये और हमें
शौक़े गुलज़ार है क्या होना है

हाए रे नींद मुसाफ़िर तेरी
कूच तय्यार है क्या होना है

दूर जाना है रहा दिन थोड़ा
राह दुश्वार है क्या होना है

घर भी जाना है मुसाफ़िर कि नहीं
मत पे क्या मार है क्या होना है

जान हलकान हुई जाती है
बार सा बार है क्या होना है

पार जाना है नहीं मिलती नाउ
ज़ोर पर धार है क्या होना है

राह तो तैग़ पर और तल्वों को
गिलए ख़ार है क्या होना है

रोशनी की हमें आ़दत और घर
ती-रओ तार है क्या होना है

बीच में आग का दरिया ह़ाइल
क़स्द उस पार है क्या होना है

इस कड़ी धूप को क्यूंकर झेलें
शो'ला-ज़न नार है क्या होना है

हाए बिगड़ी तो कहां आ कर नाउ
ऐ़न मंजधार है क्या होना है

कल तो दीदार का दिन और यहां
आंख बेकार है क्या होना है

मुंह दिखाने का नहीं और सहर
आ़म दरबार है क्या होना है

उन को रह़्म आए तो आए वरना
वोह कड़ी मार है क्या होना है

ले वोह ह़ाकिम के सिपाही आए
सुब्हे़ इज़्हार है क्या होना है

वां नहीं बात बनाने की मजाल
चारह इक़रार है क्या होना है

साथ वालों ने यहीं छोड़ दिया
बे कसी यार है क्या होना है

आख़िरी दीद है आओ मिल लें
रन्ज बेकार है क्या होना है

दिल हमें तुम से लगाना ही न था
अब सफ़र बार है क्या होना है

जाने वालों पे येह रोना कैसा
बन्दा नाचार है क्या होना है

नज़्अ़ में ध्यान न बट जाए कहीं
येह अ़बस प्यार है क्या होना है

इस का ग़म है कि हर इक की सूरत
गले का हार है क्या होना है

बातें कुछ और भी तुम से करते
पर कहां वार है क्या होना है

क्यूं रज़ा कुढ़ते हो हंसते उठो
जब वोह ग़फ़्फ़ार है क्या होना है

किस के जल्वे की झलक है येह उजाला क्या है

किस के जल्वे की झलक है येह उजाला क्या है
हर त़रफ़ दीदए हैरत ज़दा तक्ता क्या है

मांग मन मानती मुंह मांगी मुरादें लेगा
न यहां "ना" है न मंगता से येह कहना "क्या है"

पन्द कड़वी लगे नासेह़ से तुर्श हो ऐ नफ़्स
ज़हरे इस्यां में सितम-गर तुझे मीठा क्या है

हम हैं उन के वोह हैं तेरे तो हुए हम तेरे
इस से बढ़ कर तेरी सम्त और वसीला क्या है

उन की उम्मत में बनाया उन्हें रह़मत भेजा
यूं न फ़रमा कि तेरा रह़्म में दा'वा क्या है

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

ज़ाहिद उन का मैं गुनहगार वोह मेरे शाफ़ेअ़ ق
इतनी निस्बत मुझे क्या कम है तू समझा क्या है

बे बसी हो जो मुझे पुरसिशे आ'माल के वक़्त
दोस्तो ! क्या कहूं उस वक़्त तमन्ना क्या है

काश फ़रियाद मेरी सुन के येह फ़रमाएं हुज़ूर
हां कोई देखो येह क्या शोर है ग़ोग़ा क्या है

कौन आफ़त ज़दा है किस पे बला टूटी है
किस मुसीबत में गिरिफ़्तार है सदमा क्या है

किस से कहता है कि लिल्लाह ख़बर लीजे मेरी
क्यूं है बेताब येह बेचैनी का रोना क्या है

इस की बेचैनी से है ख़ातिरे अक़्दस पे मलाल
बे कसी कैसी है पूछो कोई गुज़रा क्या है

यूं मलाइक करें मा'रूज़ कि इक मुजरिम है
उस से पुरसिश है बता तूने किया क्या क्या है

सामना क़हर का है दफ़्तरे आ'माल हैं पेश
डर रहा है कि ख़ुदा हुक्म सुनाता क्या है

आप से करता है फ़रियाद कि या शाहे रुसुल
बन्दा बेकस है शहा रहम में वक़्फ़ा क्या है

अब कोई दम में गिरिफ़्तारे बला होता हूं
आप आ जाएं तो क्या ख़ौफ़ है खटका क्या है

सुन के येह अर्ज़ मेरी बहरे करम जोश में आए
यूं मलाइक को हो इर्शाद "ठहरना क्या है"

किस को तुम मूरिदे आफ़ात किया चाहते हो !
हम भी तो आ के ज़रा देखें तमाशा क्या है

उन की आवाज़ पे कर उठ्ठूं मैं बे साख़्ता शोर
और तड़प कर येह कहूं अब मुझे परवा क्या है

लो वोह आया मेरा ह़ामी मेरा ग़म ख़्वारे उमम !
आ गई जां तने बे जां में येह आना क्या है

फिर मुझे दामने अक़्दस में छुपा लें सरवर
और फ़रमाएं हटो इस पे तक़ाज़ा क्या है

बन्दा आज़ाद शुदा है येह हमारे दर का
कैसा लेते हो ह़िसाब इस पे तुम्हारा क्या है

छोड़ कर मुझ को फ़िरिश्ते कहें मह़्कूम हैं हम
हुक्मे वाला की न ता'मील हो ज़ह़रा क्या है

येह समां देख के मह़्शर में उठे शोर कि वाह
चश्मे बद दूर हो क्या शान है रुत्बा क्या है

सदके़ इस रह़्म के इस सायए दामन पे निसार
अपने बन्दे को मुसीबत से बचाया क्या है

ऐ रज़ा जाने अ़नादिल तेरे नग़्मों के निसार
बुलबुले बाग़े मदीना तेरा कहना क्या है

सरवर कहूं कि मालिको मौला कहूं तुझे

सरवर कहूं कि मालिको मौला कहूं तुझे
बाग़े ख़लील का गुले ज़ैबा कहूं तुझे

ह़िरमां नसीब हूं तुझे उम्मीदे गह कहूं
जाने मुरादो काने तमन्ना कहूं तुझे

गुलज़ारे क़ुद्स का गुले रंगी अदा कहूं
दरमाने दर्दे बुलबुले शैदा कहूं तुझे

सुब्ह़े वत़न पे शामे ग़रीबां को दूं शरफ़
बेकस नवाज़ गेसूओं वाला कहूं तुझे

अल्लाह रे तेरे जिस्मे मुनव्वर की ताबिशें
ऐ जाने जां मैं जाने तजल्ला कहूं तुझे

बे दाग़ लालह या क़-मरे बे कलफ़ कहूं
बे ख़ार गुलबुने चमन-आरा कहूं तुझे

मुजरिम हूं अपने अ़फ़्व का सामां करूं शहा
या'नी शफ़ीअ़ रोजे़ जज़ा का कहूं तुझे

इस मुर्दा दिल को मुज़्दा ह़याते अबद का दूं
ताबो तुवाने जाने मसीह़ा कहूं तुझे

तेरे तो वस्फ़ ऐ़बे तनाही से हैं बरी
ह़ैरां हूं मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे

कह लेगी सब कुछ उन के सना ख़्वां की ख़ामुशी
चुप हो रहा है कह के मैं क्या क्या कहूं तुझे

लेकिन रज़ा ने ख़त्म सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बन्दा ख़ल्क़ का आक़ा कहूं तुझे

मुज़्दाबाद ऐ आसियो ! शाफ़ेअ़ शहे अबरार है

मुज़्दाबाद ऐ आसियो ! शाफ़ेअ़ शहे अबरार है
तहनियत ऐ मुजरिमो ! ज़ाते ख़ुदा ग़फ़्फ़ार है

अ़र्श सा फ़र्शे ज़मीं है फ़र्शे पा अ़र्शे बरीं
क्या निराली तर्ज़ की नामे ख़ुदा रफ़्तार है

चांद शक़ हो पेड़ बोलें जानवर सज्दे करें
بَارَكَ الله मर-जए आलम येही सरकार है

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है

लब ज़ुलाले चश्मए कुन में गुंधे वक़्ते ख़मीर
मुर्दे ज़िन्दा करना ऐ जां तुम को क्या दुश्वार है

गोरे गोरे पाउं चमका दो ख़ुदा के वासिते
नूर का तड़का हो प्यारे गोर की शब तार है

तेरे ही दामन पे हर आ़सी की पड़ती है नज़र
एक जाने बे ख़ता पर दो जहां का बार है

जोशे तूफ़ां बहूरे बे पायां हवा ना-साज़गार
नूह़ के मौला करम कर ले तो बेड़ा पार है

रह़मतुल्लिल आ़-लमीं तेरी दुहाई दब गया
अब तो मौला बे त़रह़ सर पर गुनह का बार है

ह़ैरतें हैं आईना दारे वुफ़ूरे वस्फ़े गुल
उन के बुलबुल की ख़मोशी भी लबे इज़्हार है

गूंज गूंज उठ्ठे हैं नग़माते रज़ा से बोस्तां
क्यूं न हो किस फूल की मिद्ह़त में वा मिन्क़ार है

अ़र्श की अ़क़्ल दंग है चर्ख़ में आस्मान है

अ़र्श की अ़क़्ल दंग है चर्ख़ में आस्मान है
जाने मुराद अब किधर हाए तेरा मकान है

बज़्मे सनाए ज़ुल्फ़ में मेरी अ़रूसे फ़िक्र को
सारी बहारे हश्त ख़ुल्द छोटा सा इत्र्दान है

अ़र्श पे जा के मुर्ग़े अ़क़्ल थक के गिरा ग़श आ गया
और अभी मन्ज़िलों परे पहला ही आस्तान है

अ़र्श पे ताज़ा छेड़छाड़ फ़र्श में तुरफ़ा धूमधाम
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है

इक तेरे रुख़ की रोशनी चैन है दो जहान की
इन्स का उन्स उसी से है जान की वोह ही जान है

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

गोद में आ़लमे शबाब ह़ाले शबाब कुछ न पूछ !
गुलबुने बाग़े नूर की और ही कुछ उठान है

तुझ सा सियाहकार कौन उन सा शफ़ीअ़ है कहां
फिर वोह तुझी को भूल जाएं दिल येह तेरा गुमान है

पेशे नज़र वोह नौ बहार सज्दे को दिल है बे क़रार
रोकिये सर को रोकिये हां येही इम्तिह़ान है

शाने ख़ुदा न साथ दे उन के ख़िराम का वोह बाज़
सिदरा से ता ज़मीं जिसे नर्म सी इक उड़ान है

बारे जलाल उठा लिया गर्चे कलेजा शक़ हुवा
यूं तो येह माहे सब्ज़ा रंग नज़रों में धान पान है

ख़ौफ़ न रख रज़ा ज़रा तू तो है अ़ब्दे मुस्त़फ़ा
तेरे लिये अमान है तेरे लिये अमान है

उठा दो पर्दा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी हिजाब में है

उठा दो पर्दा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी हिजाब में है
ज़माना तारीक हो रहा है कि मेह्र कब से निक़ाब में है

नहीं वोह मीठी निगाह वाला ख़ुदा की रहमत है जल्वा फ़रमा
ग़ज़ब से उन के ख़ुदा बचाए जलाले बारी इताब में है

जली जली बू से उस की पैदा है सोज़िशे इश्क़े चश्मे वाला
कबाबे आहू में भी न पाया मज़ा जो दिल के कबाब में है

उन्हीं की बू मायए समन है उन्हीं का जल्वा चमन चमन है
उन्हीं से गुलशन महक रहे हैं उन्हीं की रंगत गुलाब में है

तेरी जिलौ में है माहे तयबा हिलाल हर मर्गो ज़िन्दगी का !
हयात जां का रिकाब में है ममात आ'दा का डाब में है

सियह लिबासाने दारे दुन्या व सब्ज़ पोशाने अर्शे आ'ला
हर इक है उन के करम का प्यासा येह फ़ैज़ उन की जनाब में है

वोह गुल हैं लबहाए नाज़ुक उन के हज़ारों झड़ते हैं फूल जिन से
गुलाब गुलशन में देखे बुलबुल येह देख गुलशन गुलाब में है

जली है सोज़े जिगर से जां तक है तालिबे जल्वए मुबारक
दिखा दो वोह लब कि आबे हैवां का लुत्फ़ जिन के ख़िताब में है

खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई हामी न कोई यावर !
बता दो आ कर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है

ख़ुदाए क़ह्हार है ग़ज़ब पर खुले हैं बदकारियों के दफ़्तर
बचा लो आ कर शफ़ीए महशर तुम्हारा बन्दा अ़ज़ाब में है

करीम ऐसा मिला कि जिस के खुले हैं हाथ और भरे ख़ज़ाने
बताओ ऐ मुफ़्लिसो ! कि फिर क्यूं तुम्हारा दिल इज़्तिराब में है

गुनह की तारीकियां येह छाईं उमंड के काली घटाएं आईं
ख़ुदा के ख़ुरशीद मेह्र फ़रमा कि ज़र्रा बस इज़्तिराब में है

करीम अपने करम का सदक़ा लईमे बे क़द्र को न शरमा
तू और रज़ा से हिसाब लेना रज़ा भी कोई हिसाब में है

अंधेरी रात है ग़म की घटा इस्यां की काली है

अंधेरी रात है ग़म की घटा इस्यां की काली है
दिले बेकस का इस आफ़त में आक़ा तू ही वाली है

न हो मायूस आती है सदा गोरे ग़रीबां से
नबी उम्मत का ह़ामी है ख़ुदा बन्दों का वाली है

उतरते चांद ढलती चांदनी जो हो सके कर ले
अंधेरा पाख आता है येह दो दिन की उजाली है

अरे येह भेड़ियों का बन है और शाम आ गई सर पर
कहां सोया मुसाफ़िर हाए कितना ला उबाली है

अंधेरा घर, अकेली जान, दम घुटता, दिल उक्ताता
ख़ुदा को याद कर प्यारे वोह साअ़त आने वाली है

ज़मीं तपती, कटीली राह, भारी बोझ, घाइल पाउं
मुसीबत झेलने वाले तेरा अल्लाह वाली है

न चौंका दिन है ढलने पर तेरी मन्ज़िल हुई खोटी
अरे ओ जाने वाले नींद येह कब की निकाली है

रज़ा मन्ज़िल तो जैसी है वोह इक मैं क्या सभी को है
तुम इस को रोते हो येह तो कहो यां हाथ ख़ाली है

गुनहगारों को हातिफ़ से नवीदे ख़ुश मआली है

गुनहगारों को हातिफ़ से नवीदे ख़ुश मआली है
मुबारक हो शफ़ाअ़त के लिये अह़मद सा वाली है

क़ज़ा ह़क़ है मगर इस शौक़ का अल्लाह वाली है
जो उन की राह में जाए वोह जान अल्लाह वाली है

तेरा क़द्दे मुबारक गुलबुने रह़मत की डाली है
इसे बो कर तेरे रब ने बिना रह़मत की डाली है

तुम्हारी शर्म से शाने जलाले ह़क़ टपक्ती है
ख़मे गरदन हिलाले आस्माने ज़ुल जलाली है

ज़हे ख़ुद गुम जो गुम होने पे येह ढूंडे कि क्या पाया
अरे जब तक कि पाना है जभी तक हाथ ख़ाली है

मैं इक मोह़ताज बे वक़्अ़त गदा तेरे सगे दर का
तेरी सरकार वाला है तेरा दरबार आ़ली है

तेरी बख़्शिश पसन्दी, उ़ज़्र जूई, तौबा ख़्वाही से
उ़मूमे बे गुनाही, जुर्म शाने ला उबाली है

अबू बक्रो उ़मर उ़स्मानो ह़ैदर जिस के बुलबुल हैं
तेरा सर्वे सही उस गुलबुने ख़ूबी की डाली है

रज़ा क़िस्मत ही खुल जाए जो गीलां से ख़ित़ाब आए
कि तू अदना सगे दरगाहे ख़ुद्दामे मअ़ाली है

मैं जब मर जाऊं......

ह़ज़रते साबित बुनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मुझ से ह़ज़रते अनस बिन मालिक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह फ़रमाइश की, कि येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस बाल है मैं जब मर जाऊं तो तुम इस को मेरी ज़बान के नीचे रख देना, चुनान्चे मैं ने उन की वसिय्यत के मुत़ाबिक़ उन की ज़बान के नीचे रख दिया और वोह इसी ह़ालत में दफ़्न हुए। (الاصابۃ،انس بن مالك بن النضر،ج۱،ص۲۷٦)

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालो ! जागते रहियो चोरों की रखवाली है

आंख से काजल साफ़ चुरा लें यां वोह चोर बला के हैं
तेरी गठरी ताकी है और तूने नींद निकाली है

येह जो तुझ को बुलाता है येह ठग है मार ही रख्खेगा
हाए मुसाफ़िर दम में न आना मत कैसी मतवाली है

सोना पास है सूना बन है सोना ज़ह्र है उठ प्यारे
तू कहता है नींद है मीठी तेरी मत ही निराली है

आंखें मलना झुंझला पड़ना लाखों जमाई अंगड़ाई
नाम पर उठने के लड़ता है उठना भी कुछ गाली है

जुगनू चमके पत्ता खड़के मुझ तन्हा का दिल धड़के
डर समझाए कोई पवन है या अगिया बेताली है

बादल गरजे बिजली तड़पे धक से कलेजा हो जाए
बन में घटा की भयानक सूरत कैसी काली काली है

पाउं उठा और ठोकर खाई कुछ संभला फिर औंधे मुंह
मींह ने फिस्लन कर दी है और धुर तक खाई नाली है

साथी साथी कह के पुकारूं साथी हो तो जवाब आए
फिर झुंझला कर सर दे पटकूं चल रे मौला वाली है

फिर फिर कर हर जानिब देखूं कोई आस न पास कहीं
हां इक टूटी आस ने हारे जी से रफ़ाक़त पाली है

तुम तो चांद अ़रब के हो प्यारे तुम तो अ़जम के सूरज हो
देखो मुझ बेकस पर शब ने कैसी आफ़त डाली है

दुन्या को तू क्या जाने येह बिस की गांठ है ह़र्राफ़ा
सूरत देखो ज़ालिम की तो कैसी भोली भाली है

शह्द दिखाए ज़ह्र पिलाए, क़ातिल, डाइन, शोहर कुश
इस मुर्दार पे क्या ललचाया दुन्या देखी भाली है

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

मौला तेरे अ़फ़्वो करम हों मेरे गवाह सफ़ाई के
वरना रज़ा से चोर पे तेरी डिग्री तो इक़्बाली है

नबी सरवरे हर रसूलो वली है

नबी सरवरे हर रसूलो वली है
नबी राज़दारे مَعَ اللّٰهِ لِی है

वोह नामी कि नामे ख़ुदा नाम तेरा
रऊफ़ो रहीमो अ़लीमो अ़ली है

है बेताब जिस के लिये अ़र्शे आ'ज़म
वोह इस रह-रवे ला मकां की गली है

नकीरैन करते हैं ता'ज़ीम मेरी
फ़िदा हो के तुझ पर येह इ़ज़्ज़त मिली है

त़लातुम है कश्ती पे तूफ़ाने ग़म का
येह कैसी हवाए मुख़ालिफ़ चली है

न क्यूंकर कहूं या ह़बीबी अग़िस्नी[1]
इसी नाम से हर मुसीबत टली है

1 : मेरे प्यारे मेरी फ़रियाद को पहुंचो ।12

सबा है मुझे सर-सरे दश्ते त़यबा
इसी से कली मेरे दिल की खिली है

तेरे चारों हमदम हैं यक-जान यक-दिल
अबू बक्र फ़ारूक़ उ़स्मां अ़ली है

ख़ुदा ने किया तुझ को आगाह सब से
दो आ़लम में जो कुछ ख़फ़ी व जली है

करूं अ़र्ज़ क्या तुझ से ऐ आ़लिमुस्सिर्र
कि तुझ पर मेरी ह़ालते दिल खुली है

तमन्ना है फ़रमाइये रोजे़ मह़शर
येह तेरी रिहाई की चिठ्ठी मिली है

जो मक़्सद ज़ियारत का बर आए फिर तो
न कुछ क़स्द कीजे येह क़स्दे दिली है

तेरे दर का दरबां है जिब्रीले आ'ज़म
तेरा मद्ह़ ख़्वां हर नबी व वली है

शफ़ाअ़त करे ह़श्र में जो रज़ा की
सिवा तेरे किस को येह क़ुदरत मिली है

न अ़र्श ऐमन न اِنِّیۡ ذَاھِبٌ में मेह-मानी है

न अ़र्श ऐमन न اِنِّیۡ ذَاھِبٌ[1] में मेह-मानी है
न लुत्फ़े اُدْنُ یَا اَحْمَد[2] नसीबे لَنۡ تَرَانِیۡ[3] है

नसीबे दोस्तां गर उन के दर पर मौत आनी है
खु़दा यूं ही करे फिर तो हमेशा ज़िन्दगानी है

उसी दर पर तड़पते हैं मचलते हैं बिलक्ते हैं
उठा जाता नहीं क्या खू़ब अपनी ना तुवानी है

हर इक दीवारो दर पर मेह्र ने की है जबीं साई
निगारे मस्जिदे अक्दस में कब सोने का पानी है

---

1 : मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया था : ''اِنِّیۡ ذَاھِبٌ اِلٰی رَبِّیۡ سَیَھۡدِیۡنِ'' मैं अपने रब के पास जाऊंगा वोह मुझे राह दिखाएगा।

2 : ह़दीस में है रब عَزَّ وَجَلَّ ने हमारे मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से शबे मे'राज फ़रमाया : ''اُدْنُ یَا اَحْمَدُ اُدْنُ یَا مُحَمَّدُ اُدْنُ یَا خَیْرَ الْبَرِیَّۃِ'' पास आ ऐ अह़मद ! पास आ ऐ मुह़म्मद ! पास आ ऐ तमाम जहान से बेहतर ।12

3 : मूसा عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कोहे तूर पर ख़्वाहिश की दीदारे इलाही की, हुक्म हुवा : ''لَنۡ تَرَانِیۡ'' तुम हरगिज़ मुझे न देखोगे। या'नी दुन्या में दीदारे इलाही की ताब किसी को नहीं, येह मर्तबए आ'ला सिर्फ़ सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये है।

तेरे मंगता की ख़ामोशी शफ़ाअ़त ख़्वाह है उस की
ज़बाने बे ज़बानी तरजुमाने ख़स्ता जानी है

खुले क्या राज़े मह़बूबो मुह़िब मस्ताने ग़फ़्लत पर
शराबे ! قَدْ رَأَى الْحَق[1] जैबे जामे مَنْ رَآنِى है

जहां की ख़ाक-रूबी ने चमन-आरा किया तुझ को
सबा हम ने भी उन गलियों की कुछ दिन ख़ाक छानी है

शहा क्या ज़ात तेरी ह़क़ नुमा है फ़र्दे इम्कां में
कि तुझ से कोई अव्वल है न तेरा कोई सानी है

कहां उस कूश्के जाने जिनां में ज़र की नक़्क़ाशी
इरम के त़ाइरे रंगे परीदा की निशानी है

ذِيَابٌ فِى ثِيَابٍ[2] लब पे कल्मा दिल में गुस्ताख़ी
सलाम इस्लामे मुल्ह़िद को कि तस्लीमे ज़बानी है

---

1 : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''من رانى فقد راى الحق'' जिसे मेरा दीदार हुवा उसे दीदारे ह़क़ हुवा।

2 : ह़दीस में फ़रमाया : आख़िर ज़माने में कुछ लोग होंगे ''ذِيَابٌ فِىْ ثِيَابٍ'' कपड़े पहने भेड़िये या'नी इन्सानी सूरत और भेड़िये की सीरत।12

येह अक्सर साथ उन के शा–नओ मिस्वाक का रहना
बताता है कि दिलरेशों पे ज़ाइद मेह्रबानी है

इसी सरकार से दुन्या व दीं मिलते हैं साइल को
येही दरबारे आली कन्ज़े आमालो अमानी है

दुरूदें सूरते हाला मुहीते माहे तयबा हैं
बरसता उम्मते आसी पे अब रहमत का पानी है

تعالی اللہ इस्तिग़्ना तेरे दर के गदाओं का
कि इन को आर फ़र्रो शौकते साहिब क़िरानी है

वोह सरगर्मे शफ़ाअत हैं अरक़ अफ़्शां है पेशानी
करम का इत्र सन्दल की ज़मीं रहमत की घानी है

येह सर हो और वोह ख़ाके दर वोह ख़ाके दर हो और येह सर
रज़ा वोह भी अगर चाहें तो अब दिल में येह ठानी है

सुनते हैं कि मह़शर में सिर्फ़ उन की रसाई है

सुनते हैं कि मह़शर में सिर्फ़ उन की रसाई है
गर उन की रसाई है लो जब तो बन आई है

मचला है कि रह़मत ने उम्मीद बंधाई है
क्या बात तेरी मुजरिम क्या बात बनाई है

सब ने सफ़े मह़शर में ललकार दिया हम को
ऐ बे कसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है

यूं तो सब उन्हीं का है पर दिल की अगर पूछो
येह टूटे हुए दिल ही ख़ास उन की कमाई है

ज़ाइर गए भी कब के दिन ढलने पे है प्यारे
उठ मेरे अकेले चल क्या देर लगाई है

बाज़ारे अ़मल में तो सौदा न बना अपना
सरकार करम तुझ में ऐ़बी की समाई है

गिरते हुओं को मुज़्दा सज्दे में गिरे मौला
रो रो के शफ़ाअ़त की तम्हीद उठाई है

ऐ दिल येह सुलगना क्या जलना है तो जल भी उठ
दम घुटने लगा ज़ालिम क्या धूनी रमाई है

मुजरिम को न शरमाओ अह्बाब कफ़न ढक दो
मुंह देख के क्या होगा पर्दे में भलाई है

अब आप ही संभालें तो काम अपने संभल जाएं
हम ने तो कमाई सब खेलों में गंवाई है

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वोह आग लगाई है

ह़िर्सो ह-वसे बद से दिल तू भी सितम कर ले
तू ही नहीं बेगाना दुन्या ही पराई है

हम दिल-जले हैं किस के हट फ़ितनों के परकाले
क्यूं फूंक दूं इक उफ़ से क्या आग लगाई है

त़यबा न सही अफ़्ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यूं बात बढ़ाई है

मत़्लअ़ में येह शक क्या था वल्लाह रज़ा वल्लाह
सिर्फ़ उन की रसाई है सिर्फ़ उन की रसाई है

हिर्ज़े जां ज़िक्रे शफ़ाअ़त कीजिये

हिर्ज़े जां ज़िक्रे शफ़ाअ़त कीजिये
नार से बचने की सूरत कीजिये

उन के नक़्शे पा पे ग़ैरत कीजिये
आंख से छुप कर ज़ियारत कीजिये

उन के हुस्ने बा मलाहत पर निसार
शीरए जां की ह़लावत कीजिये

उन के दर पर जैसे हो मिट जाइये
ना तुवानो ! कुछ तो हिम्मत कीजिये

फेर दीजे पन्जए देवे लई
मुस्त़फ़ा के बल पे त़ाक़त कीजिये

डूब कर यादे लबे शादाब में
आबे कौसर की सबाह़त कीजिये

यादे क़ामत करते उठिये क़ब्र से
जाने महशर पर क़ियामत कीजिये

उन के दर पर बैठिये बन कर फ़क़ीर
बे नवाओ फ़िक्रे सरवत कीजिये

जिस का हुस्न अल्लाह को भी भा गया
ऐसे प्यारे से महब्बत कीजिये

ह़य्य बाक़ी जिस की करता है सना
मरते दम तक उस की मिद्हत कीजिये

अ़र्श पर जिस की कमानें चढ़ गईं
सदक़े उस बाज़ू पे क़ुव्वत कीजिये

नीम वा त़यबा के फूलों पर हो आंख
बुलबुलो ! पासे नज़ाकत कीजिये

सर से गिरता है अभी बारे गुनाह
ख़म ज़रा फ़र्क़े इरादत कीजिये

आंख तो उठती नहीं क्या दें जवाब
हम पे बे पुरसिश ही रह़मत कीजिये

उ़ज़्र बदतर अज़ गुनह का ज़िक्र क्या
बे सबब हम पर इ़नायत कीजिये

ना'रा कीजे या रसूलल्लाह का
मुफ़्लिसो ! सामाने दौलत कीजिये

हम तुम्हारे हो के किस के पास जाएं
सदक़ा शहज़ादों का रह़मत कीजिये

مَنْ رَاٰنِی قَدْ رَأَى الْحَق जो कहे
क्या बयां उस की ह़क़ीक़त कीजिये

आ़लिमे इ़ल्मे दो आ़लम हैं ह़ुज़ूर
आप से क्या अ़र्ज़े ह़ाजत कीजिये

आप सुल्ताने जहां हम बे नवा
याद हम को वक़्ते ने'मत कीजिये

तुझ से क्या क्या ऐ मेरे त़यबा के चांद
ज़ुल्मते ग़म की शिकायत कीजिये

दर बदर कब तक फिरें ख़स्ता ख़राब
त़यबा में मदफ़न इनायत कीजिये

हर बरस वोह क़ाफ़िलों की धूमधाम
आह सुनिये और ग़फ़्लत कीजिये

फिर पलट कर मुंह न उस जानिब किया
सच है और दा'वाए उल्फ़त कीजिये

अक़्रिबा हुब्बे वत़न बे हिम्मती
आह किस किस की शिकायत कीजिये

अब तो आक़ा मुंह दिखाने का नहीं
किस त़रह रफ़्ए़ नदामत कीजिये

अपने हाथों ख़ुद लुटा बैठे हैं घर
किस पे दा'वाए बिज़ाअ़त कीजिये

किस से कहिये क्या किया क्या हो गया
ख़ुद ही अपने पर मलामत कीजिये

अ़र्ज़ का भी अब तो मुंह पड़ता नहीं
क्या इलाजे दर्दे फ़ुरक़त कीजिये

अपनी इक मीठी नज़र के शह्द से
चारए ज़हरे मुसीबत कीजिये

दे ख़ुदा हिम्मत कि येह जाने ह़ज़ीं
आप पर वारें वोह सूरत कीजिये

आप हम से बढ़ के हम पर मेह्रबां
हम करें जुर्म आप रह़मत कीजिये

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आ़दत कीजिये

दुश्मने अह़मद पे शिद्दत कीजिये

दुश्मने अह़मद पे शिद्दत कीजिये
मुल्ह़िदों की क्या मुरुव्वत कीजिये

ज़िक्र उन का छेड़िये हर बात में
छेड़ना शैत़ां का आ़दत कीजिये

मिस्ले फ़ारिस ज़ल्ज़ले हों नज्द में
ज़िक्रे आयाते विलादत कीजिये

ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
''या रसूलल्लाह'' की कसरत कीजिये

कीजिये चरचा उन्हीं का सुब्ह़ो शाम
जाने काफ़िर पर क़ियामत कीजिये

आप दरगाहे ख़ुदा में हैं वजीह
हां शफ़ाअ़त बिल-वजाहत कीजिये

ह़क़ तुम्हें फ़रमा चुका अपना ह़बीब
अब शफ़ाअ़त बिल-मह़ब्बत कीजिये

इज़्न कब का मिल चुका अब तो हुज़ूर
हम ग़रीबों की शफ़ाअ़त कीजिये

मुल्ह़िदों का शक निकल जाए हुज़ूर
जानिबे मह फिर इशारत कीजिये

शिर्क ठहरे जिस में ता'ज़ीमे ह़बीब
उस बुरे मज़्हब पे ला'नत कीजिये

ज़ालिमो ! मह़बूब का ह़क़ था येही
इ़श्क़ के बदले अ़दावत कीजिये

वद्दुह़ा, हुजुरात, अलम नश्रह़ से फिर
मोमिनो ! इत्मामे हुज्जत कीजिये

बैठते उठते हुज़ूरे पाक से
इल्तिजा व इस्तिआ़नत कीजिये

या रसूलल्लाह दुहाई आप की
गोश्माले अहले बिद्अ़त कीजिये

ग़ौसे आ'ज़म आप से फ़रियाद है
ज़िन्दा फिर येह पाक मिल्लत कीजिये

या खुदा तुझ तक है सब का मुन्तहा
औलिया को हुक्मे नुसरत कीजिये

मेरे आक़ा ह़ज़रते अच्छे मियां
हो रज़ा अच्छा वोह सूरत कीजिये

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم
نَحۡمَدُهٗ وَ نُصَلِّی عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡكَرِیۡم

ह़ाज़िरिये बारगाहे बिहीं जाह वस्ले अव्वल रंगे इल्मी हुज़ूर जाने नूर 1324 सि.हि.

शुक्रे ख़ुदा कि आज घड़ी उस सफ़र की है
जिस पर निसार जान फ़लाह़ो ज़फ़र की है

गरमी है तप है दर्द है कुल्फ़त सफ़र की है
ना शुक्र येह तो देख अ़ज़ीमत किधर की है

किस ख़ाके पाक की तू बनी ख़ाके पा शिफ़ा
तुझ को क़सम जनाबे मसीह़ा के सर की है

आबे ह़याते रूह़ है ज़रक़ा[1] की बूंद बूंद
इक्सीरे आ'ज़मे मिसे दिल ख़ाक दर की है

1 : मदीनए त़य्यिबा की नह्रे मुबारक का नाम है।

हम को तो अपने साए में आराम ही से लाए
ह़ीले बहाने वालों को येह राह डर की है

लुटते हैं मारे जाते हैं यूं ही सुना किये
हर बार दी वोह अम्न कि ग़ैरत ह़ज़र की है

वोह देखो जग-मगाती है शब और क़मर अभी
पहरों नहीं कि बिस्तो चहारुम सफ़र की है

माहे मदीना अपनी तजल्ली अ़त़ा करे !
येह ढलती चांदनी तो पहर दो पहर की है

مَنْ زَارَ تُرْبَتِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ[1]
उन पर दुरूद जिन से नवीद इन बुशर की है

उस के तुफ़ैल ह़ज भी ख़ुदा ने करा दिये
अस्ले मुराद ह़ाज़िरी उस पाक दर की है

---

1 : ह़दीस में फ़रमाया है : ''مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ'' जो मेरे मज़ारे पाक की ज़ियारत करे उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाए ।12

का'बे का नाम तक न लिया त़यबा ही कहा
पूछा था हम से जिस ने कि नह्ज़त[1] किधर की है

का'बा भी है इन्हीं की तजल्ली का एक ज़िल
रोशन इन्ही के अ़क्स से पुतली[2] ह़जर की है

होते कहां ख़लीलो[3] बिना का'बा व मिना
लौलाक वाले साहि़बी सब तेरे घर की है

मौला[4] अ़ली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वोह भी अ़स्र सब से जो आ'ला ख़त़र[5] की है

---

1 : "नह्ज़त" कहीं जाने के इरादे से खड़ा होना।

2 : या'नी "संगे अस्वद" कि सियाह रंग का पथ्थर का'बए मुअ़ज़्ज़मा में नस्ब है और आंख की पुतली से मुशाबेह है।12

3 : का'बए मुअ़ज़्ज़मा ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनाया, और "मिना" मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से तीन मील पर वोह बस्ती है जहां कुरबानी होती है और तीन जगह शैत़ान को संगरेज़े मारे जाते हैं। येह दोनों बातें भी इस मक़ाम में सुन्नते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं।

4 : ख़ैबर से वापसी में "मन्ज़िले सहबा" पर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهٗ के ज़ानू पर सरे अक़्दस रख कर आराम फ़रमाया, मौला अ़ली ने नमाज़ न पढ़ी थी आंख से देखते रहे कि वक़्त जाता है मगर सिर्फ़ इस ख़याल से कि ज़ानू सरकाऊं तो शायद हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़्वाब में ख़लल आए =

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जान उस[1] पे दे चुके
और हिफ़्ज़े जां तो जान फ़ुरूज़े ग़ुरर[2] की है

हां[3] तूने उन को जान उन्हें फेर दी नमाज़
पर वोह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है

= जुम्बिश न की यहां तक कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया।

5 : "ख़त़र" ब मा'ना शरफ़, नमाज़े अ़स्र "सलाते वुस्त़ा" है कि सब नमाज़ों से अफ़्ज़लो आ'ला है।12

1 : इस का इशारा नींद की त़रफ़ है या'नी सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ग़ारे सौर में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नींद पर अपनी जान कुरबान कर दी कि ग़ारे सौर के सूराख़ में अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर बन्द कर दिये एक सूराख़ बाक़ी रहा उस में पाउं का अंगूठा रख दिया और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुलाया हुज़ूर ने उन के ज़ानू पर सरे अक़्दस रख कर आराम फ़रमाया। उस ग़ार में एक सांप मुश्ताक़े ज़ियारते अक़्दस रहता था, अपना सर सिद्दीक़ के पाउं पर मला, उन्हों ने इस ख़याल से कि जान जाए मह़बूब की नींद में ख़लल न आए पाउं न हटाया, आख़िर उस ने पाउं में काट लिया, हर साल वोह ज़ह्‌र औ़द करता, आख़िर इसी से शहादत पाई।

2 : "ग़ुरर" बिज़्ज़म जम्ए़ अग़र ब मा'ना रोशन तर, या'नी जान का रखना सब फ़र्ज़ों से ज़ियादा अहम है, सिद्दीक़ ने ख़्वाबे अक़्दस के मुक़ाबिल इस का भी ख़याल न किया।

3 : चश्मे अक़्दस खुली मौला अ़ली ने अपनी नमाज़ का ह़ाल अ़र्ज़ किया, हुज़ूर ने हुक्म दिया फ़ौरन डूबा =

साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी[1] उस ताजवर की है

शर[2] ख़ैर शौर सौर शरर दूर नार नूर !
बुशरा कि बारगाह येह ख़ैरुल बशर की है

मुजरिम बुलाए आए हैं جَآءُوْكَ[3] है गवाह
फिर रद हो कब येह शान करीमों के दर की है

= हुवा सूरज पलट आया अ़स्र का वक़्त हो गया, मौला अ़ली ने नमाज़ अदा की आफ़्ताब डूब गया, और जब सिद्दीक़े अक्बर के आंसू चेहरए अक़्दस पर गिरे, चश्मे मुबारक खुली, सिद्दीक़े अक्बर ने ह़ाल अ़र्ज़ किया, लुआ़बे द-हने अक़्दस लगा दिया फ़ौरन आराम हो गया, बारह बरस बा'द इसी से शहादत पाई।

1 : नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बन्दगी या'नी ख़िदमत व गुलामी भी ख़ुदा ही का फ़र्ज़ है मगर येह फ़र्ज़ सब फ़राइज़ से आ'ज़म व अहम है जैसा कि सिद्दीक़े अक्बर और मौला अ़ली ने अ़मल कर के बता दिया और अल्लाह व रसूल ने इसे मक़्बूल रखा।

2 : या'नी यहां ह़ाज़िर हो कर शर "ख़ैर" से बदल जाता है और ग़म व अलम का शौर "सौर" या'नी ख़ुशी व शादी हो जाता है, और ग़म व गुनाह के शर दूर हो जाते हैं। ख़ुलासा येह कि नार यहां की ह़ाज़िरी से नूर हो जाती है। يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ۔

3 : क़ुरआने अ़ज़ीम में है : وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ۔۔۔الآیہ۔ या'नी अगर वोह जब गुनाह करें ऐ नबी तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हो कर मुआ़फ़ी चाहें और तू उन की =

बद हैं मगर उन्हीं के हैं बाग़ी नहीं हैं हम
नज्दी न आए उस को येह मन्ज़िल ख़त़र की है

तुफ़ नज्दियत न कुफ़्र न इस्लाम सब पे ह़र्फ़
काफ़िर इधर की है न उधर की अधर की है

ह़ाकिम[1] ह़कीम दादो दवा दें येह कुछ न दें
मरदूद येह मुराद किस आयत, ख़बर की है

शक्ले बशर में नूरे इलाही अगर न हो !
क्या क़द्र उस ख़मीरए मा-ओ मदर की है

= शफ़ाअ़त चाहे तो ज़रूर अल्लाह को तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान पाएं। तो क़ुरआने अ़ज़ीम ख़ुद गुनहगारों को अपने ह़बीब के दरबार में बुला रहा है और करीमों की येह शान नहीं कि अपने दर पर बुला कर रद कर दें।

1 : हुक्काम मुस्तग़ीस को दाद देते हैं, ह़कीम मरीज़ को दवा देते हैं, वहाबी भी इन बातों को मानते हैं मगर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत ए'तिक़ाद रखते हैं कि हुज़ूर कुछ देते नहीं, अगर ग़ैरे ख़ुदा से मांगना शिर्क है तो ह़ाकिम व ह़कीम से दाद या दवा का मांगना क्यूं न शिर्क हुवा, और अगर वासित़ए अ़त़ाए ख़ुदा जान कर उन से मांगना शिर्क नहीं तो नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगना क्यूं शिर्क हुवा, येह नापाक फ़र्क़ कौन सी आयत व ह़दीस में है।

नूरे इलाह क्या है महब्बत हबीब की
जिस दिल में येह न हो वोह जगह ख़ूको ख़र की है

ज़िक्रे ख़ुदा जो उन से जुदा चाहो नज्दियो !
वल्लाह ज़िक्रे हक़ नहीं कुन्जी सक़र[1] की है

बे उन के वासिते के ख़ुदा कुछ अता करे
हाशा ग़लत ग़लत येह हवस बे बसर[2] की है

मक़्सूद येह हैं आदमो नूहो ख़लील से
तुख़्मे करम में सारी करामत समर की है

---

1 : हुनूद के जोगी और यहूदो नसारा के राहिब भी अपने ज़ो'म में यादे ख़ुदा करते हैं मगर मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अलग हो कर लिहाज़ा जहन्नमी हुए ।12

2 : अइम्मए दीन तसरीह फ़रमाते हैं कि दुन्या में और आख़िरत में, ज़ाहिर में और बातिन में, जिस्म और रूह में जो ने'मत जो ब-र-कत और जो ख़ूबी रोज़े अज़ल से अ-बदल आबाद तक जिसे मिली और मिलती है और मिलेगी इस सब में वासिता व क़ासिम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, हुज़ूर के हाथ से मिली और मिलती है और मिलेगी, ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللّٰهُ الْمُعْطِیْ'' देने वाला ख़ुदा है और बांटने वाला मैं । इस का मुफ़स्सल बयान मुसन्निफ़ के रिसाले ''سَلْطَنَةُ الْمُصْطَفٰی فِیْ مَلَكُوْتِ كُلِّ الْوَرٰی'' में है ।

उन की नुबुव्वत[1] उन की उबुव्वत है सब को आम
उम्मुल बशर अ़रूस इन्हीं के पिसर की है

ज़ाहिर[2] में मेरे फूल ह़क़ीक़त में मेरे नख़्ल
उस गुल की याद में येह सदा बुल बशर की है

पहले[3] हो उन की याद कि पाए जिला नमाज़
येह कहती है अज़ान जो पिछले पहर की है

---

1 : उ़-लमा फ़रमाते हैं नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम आ़लम के पि-दरे मा'नवी हैं कि सब कुछ इन्हीं के नूर से पैदा हुवा, इसी लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक ''अबुल अरवाह़'' है तो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अगर्चे सूरत में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाप हैं मगर ह़क़ीक़त में वोह भी हुज़ूर के बेटे हैं तो ''उम्मुल बशर'' या'नी ह़ज़रते ह़व्वा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के पिसर ''आदम'' की अ़रूस हैं। عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

2 : आदम जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद करते तो यूं कहते : ''**يَا ابْنِيْ صُوْرَةً وَّاَبِيْ مَعْنًى**'' ऐ ज़ाहिर में मेरे बेटे और ह़क़ीक़त में मेरे बाप।

3 : दोनों ह़रम शरीफ़ में तहज्जुद के वक़्त से मुअज़्ज़िन मनारों पर जा कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलातो सलाम ब आवाज़े बुलन्द अ़र्ज़ करते रहते हैं तो नमाज़े सुब्ह़ से पहले हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद होती है जिस से नमाज़ जिला पाती है जैसे फ़र्ज़ से पहले सुन्नतें।

दुन्या मज़ार ह़श्र जहां हैं ग़फ़ूर[1] हैं
हर मन्ज़िल अपने चांद की मन्ज़िल ग़फ़्र[2] की है

उन पर दुरूद जिन को ह़जर तक करें सलाम
उन पर सलाम जिन को तह़िय्यत शजर की है

उन पर दुरूद जिन को कसे बे-कसां कहें
उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है

जिन्नो बशर सलाम को ह़ाज़िर हैं अस्सलाम
येह बारगाह मालिके जिन्नो बशर की है

शम्सो क़मर सलाम को ह़ाज़िर हैं अस्सलाम
ख़ूबी इन्ही की जोत से शम्सो क़मर की है

सब बह़रो बर सलाम को ह़ाज़िर हैं अस्सलाम
तम्लीक इन्हीं के नाम तो हर बह़रो बर की है

---

1 : "ग़फ़ूर" भी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक है जिस की त़रफ़ तौरैत में इशारा है।12

2 : चांद की 28 मन्ज़िलों से पन्दरहवीं मन्ज़िल का नाम है।

संगो शजर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
कलिमे से तर ज़बान दरख़्तो हजर की है

अर्ज़ो असर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
मल्जा येह बारगाह दुआ़ओ असर की है

शोरीदा सर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
राहत इन्हीं के क़दमों में शोरीदा सर की है

ख़स्ता जिगर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
मरहम यहीं की ख़ाक तो ख़स्ता जिगर की है

सब ख़ुश्को तर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
येह जल्वा गाह मालिके हर ख़ुश्को तर की है

सब करोंं फ़र सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
टोपी यहीं तो ख़ाक पे हर करोंं फ़र की है

अहले नज़र सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
येह गर्द ही तो सुरमा सब अहले नज़र की है

आंसू बहा कि बह गए काले गुनह के ढेर
हाथी डुबाउ झील यहां चश्मे तर की है

तेरी[1] क़ज़ा ख़लीफ़ए अह़कामे ज़िल जलाल
तेरी रिज़ा ह़लीफ़ क़ज़ा-ओ क़दर की है

येह प्यारी[2] प्यारी क्यारी तेरे ख़ाना बाग़ की
सर्द इस की आबो ताब से आतिश सक़र की है

जन्नत[3] में आ के नार में जाता नहीं कोई
शुक्रे ख़ुदा नवीद नजातो ज़फ़र की है

---

1 : क़ज़ा : हुक्म, ख़लीफ़ा : नाइब, ह़लीफ़ : वोह दोस्त जिन में हमेशा दोस्ती रखने का ह़ल्फ़ हो गया हो।

2 : क़ब्रे अन्वर व मिम्बरे अत़्हर के बीच में जो ज़मीन है उस की निस्बत इर्शाद फ़रमाया कि رَوْضَةٌ مِّنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी है।12

3 : अल्लाह और रसूल के करम पर भरोसा कर के एक मुदल्लल तमन्ना है या'नी सह़ीह़ ह़दीस से साबित है कि येह मक़ाम जन्नत की क्यारी है और अल्लाह व रसूल ने मह़ज़ अपने करम से मोह़ताजों को यहां जगह दी यहां नमाज़ें पढ़नी नसीब कीं तो بِحَمْدِاللهِ تَعَالٰی जन्नत में दाख़िल हुए और जन्नत में जा कर फिर कोई नार में नहीं जाता तो उम्मीद है कि अब हम नार का मुंह न देखेंगे। اِنْ شَآءَ اللهُ تَعَالٰی

मोमिन हूं मोमिनों पे रऊफ़ो रह़ीम हो
साइल हूं साइलों को ख़ुशी [1]لَا نَهَر की है

दामन का वासित़ा मुझे उस धूप से बचा
मुझ को तो शाक़ जाड़ों में इस दो पहर की है

मां दोनों भाई बेटे भतीजे अ़ज़ीज़ दोस्त
सब तुझ को सोंपे मिल्क ही सब तेरे घर की है

जिन जिन मुरादों के लिये अह़बाब ने कहा
पेशे ख़बीर क्या मुझे ह़ाजत ख़बर की है

फ़ज़्ले ख़ुदा से ग़ैब शहादत हुवा इन्हें
इस पर शहादत आयतो वह़्यो[1] असर की है

---

1 : पहले मिस्रए में आयत ''بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ'' की त़रफ़ तल्मीह़ थी, यहां ''وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ'' की त़रफ़ इशारा है या'नी साइल को न झिड़क । ''لَا نَهَر'' के येह मा'ना कि झिड़क्ना नहीं हर कलिमए सलासी ह़ल्क़िय्युल ऐ़न मिस्ल शऊ़र व नह़्र व बस्र व ज़ह़्र तस्कीन व तह़रीके ऐ़न दोनों मुत्त़रिद हैं ।12

2 : वह़्य से मुराद ब दलील मुक़ाबला वह़्ये ग़ैर मतलू अह़ादीसे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और असर अक़्वाले सह़ाबा । رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم

कहना न कहने वाले थे जब से तो इत्तिलाअ़[1]
मौला को क़ौलो क़ाइलो हर ख़ुश्को तर की है

उन पर किताब उतरी بَيَانًا لِّكُلِّ شَىْءٍ[2]
तफ़्सील जिस में मा अ़-बरो[3] मा ग़बर की है

आगे रही अ़ता वोह ब क़दरे त़लब तो क्या
आ़दत यहां उमीद से भी बेश्तर की है

बे मांगे देने वाले की ने'मत में ग़र्क़ हैं
मांगे से जो मिले किसे फ़ह्म उस क़दर की है

---

1 : ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''اِنَّ اللّٰهَ قَدْ رَفَعَ لِیَ الدُّنْیَا فَاَنَا اَنْظُرُ اِلَیْھَا وَاِلٰی مَا ھُوَ کَائِنٌ فِیْھَا اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ کَاَنَّمَا اَنْظُرُ اِلٰی کَفِّیْ ھٰذِہٖ'' बेशक अल्लाह तआ़ला ने मेरे सामने दुन्या उठा ली तो मैं तमाम दुन्या को और जो कुछ इस में क़ियामत तक होने वाला है सब को ऐसा देखता हूं जैसा अपनी इस हथेली को ।12

2 : इशारा ब आयए करीमा ''نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَىْءٍ'' हम ने तुम पर उतारा क़ुरआन हर चीज़ का रोशन बयान ।

3 : ''मा अ़-ब़-र'' जो गुज़र गया, और ''मा ग़-ब-र'' जो बाक़ी रहा, इशारा ब ह़दीस ''فِيْهِ نَبَأٌ مِنْ قَبْلِكُمْ وَخَبَرٌ مَنْ بَعْدِكُمْ'' क़ुरआन में तुम से अगलों और तुम से पिछलों सब के अह़्वाल की ख़बर है ।

अह़बाब इस से बढ़ के तो शायद न पाएं अ़र्ज़
ना कर्दा अ़र्ज़ अ़र्ज़ येह त़र्ज़े दिगर की है

दन्दां का ना'त ख़्वां हूं ना पायाब होगी आब
नद्दी गले गले मेरे आबे गुहर की है

दश्ते ह़रम में रहने दे सय्याद अगर तुझे
मिट्टी अ़ज़ीज़ बुलबुले बे बालो पर की है

या रब रज़ा न अह़मदे पारीना[1] हो के जाए
येह बारगाह तेरे ह़बीबे अबर[2] की है

तौफ़ीक़ दे कि आगे न पैदा हो ख़ूए बद
तब्दील कर जो ख़स्लते बद पेश्तर की है

आ कुछ सुना दे इ़श्क़ के बोलों में ऐ रज़ा
मुश्ताक़ त़ब्अ़ लज़्ज़ते सोज़े जिगर की है

❁❁❁❁❁

---

1 : ''पारीना'' या'नी जैसा साले गुज़श्ता, इशारा ब मिस्रअ़ ''من ہماں احمد پارینہ کہ بودم ہستم۔''

2 : ब फ़-त-ह़तैन व रा-ए मुशद्ददा निकूतर और सब से ज़ियादा एह़सान करने वाला ।12

ह़ाज़िरिये दरगाहे अ-बदी पनाह
वस्ले दुवुम रंगे इश्क़ी 1324 हि.

भीनी सुहानी सुब्ह़ में ठन्डक जिगर की है
कलियां खिलीं दिलों की हवा येह किधर की है

खुबती हुई नज़र में अदा किस सह़र की है
चुभती हुई जिगर में सदा किस गजर की है

डालें हरी हरी हैं तो बालें भरी भरी
किश्ते अमल[1] परी है येह बारिश किधर की है

हम जाएं और क़दम से लिपट कर ह़रम कहे
सोंपा खुदा को येह अ़-ज़मत किस सफ़र की है[2]

---

1 : ''अमल'' ब फ़-त-ह़तैन उम्मीद व आरज़ू, ''परी'' या'नी ख़ूब सूरत व खुशनुमा।12

2 : मदीना पब्लिशिंग कम्पनी कराची के नुस्खे़ में येह मिस्रआ़ यूं लिखा है : ''सोंपा खुदा को तुझ को येह अ़-ज़मत सफ़र की है'' जब कि रज़ा एकेडमी बम्बई, मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर और मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल अज़्हरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के तस्ह़ीह़ शुदा नुस्खे़ में यूं ही लिखा है :
''सोंपा खुदा को येह अ़-ज़मत किस सफ़र की है'' । इ़ल्मिय्या

हम गिर्दे का'बा फिरते थे कल तक और आज वोह
हम पर निसार[1] है येह इरादत किधर की है

कालक जबीं की सज्दए दर से छुड़ाओगे
मुझ को भी ले चलो येह तमन्ना ह़जर की है

डूबा हुवा है शौक़ में ज़मज़म और आंख से
झाले बरस रहे हैं येह ह़सरत किधर की है

बरसा कि जाने वालों पे गौहर करूं निसार
अब्रे करम से अ़र्ज़ येह मीज़ाबे ज़र[2] की है

आग़ोशे शौक़ खोले है जिन के लिये ह़तीम[3]
वोह फिर के देखते नहीं येह धुन किधर की है

---

1 : बारहा साबित हुवा कि का'बए मुअ़ज़्ज़मा ने मक़्बूलाने बारगाहे इ़ज़्ज़त गदायाने सरकारे रिसालत के गिर्द त़वाफ़ किया है, ह़दीस में है मुसल्मानों की हुरमत अल्लाह के नज़्दीक का'बए मुअ़ज़्ज़मा की हुरमत से ज़ियादा है।
2 : का'बए मुअ़ज़्ज़मा की दीवारे शिमाली पर ह़तीम की त़रफ़ जो ख़ालिस सोने का परनाला लगा है उसे मीज़ाबे ज़र कहते हैं।
3 : ज़मानए जाहिलिय्यत में क़ुरैश ने बिनाए का'बए मुअ़ज़्ज़मा की तज्दीद की थी कमिये ख़र्च के बाइ़स =

हां हां रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तो जाग
ओ पाउं रखने वाले येह जा चश्मो सर की है

वारूं क़दम क़दम पे कि हर दम है जाने नौ
येह राहे जां फ़िज़ा मेरे मौला के दर की है

घड़ियां गिनी हैं बरसों की येह शुब घड़ी[1] फिरी
मर मर के फिर येह सिल मेरे सीने से सरकी है

अल्लाहु अक्बर ! अपने क़दम और येह ख़ाके पाक
ह़सरत मलाएका को जहां वज़्ए़ सर की है

मे'राज का समां है कहां पहुंचे ज़ाइरो !
कुरसी से ऊंची कुरसी उसी पाक घर की है

= चन्द गज़ ज़मीन शिमाल की त़रफ़ छोड़ कर दीवारें उठा दीं वोह ज़मीन अस्ल में का'बए मुअ़ज़्ज़मा ही की है उस के गिर्द क़ौसी शक्ल पर कमर तक बुलन्द एक दीवार खींच दी गई है और दोनों त़रफ़ से जाने की राह रखी है इस टुकड़े को ह़त़ीम कहते हैं येह बिल्कुल आग़ोश की शक्ल पर है।

1 : "शुब" ब ज़म्मे सीन व सुकूने बाए मुवह़्ह़दा, ज़बाने हिन्दी में ब मा'ना नेक व सईद, "शुभ घड़ी" साअ़ते सईद।

उ़श्शाके़ रौज़ा[1] सज्दा में सूए ह़रम झुके
अल्लाह जानता है कि निय्यत किधर की है

1 : इस शे'र के दो मा'ना हैं एक ज़ाहिरी या'नी आ़शिक़ाने रौज़ा का अपना जी तो चाहता था कि रौज़ए अत़्हर की त़रफ़ सज्दे का हुक्म हो मगर शर-ए़ मुत़ह्हर ने इस से मन्अ़ फ़रमाया और का'बए मुअ़ज़्ज़मा क़िब्ला क़रार पाया तो ब ता'मीले हुक्म का'बे ही की त़रफ़ सज्दे में झुके मगर दिल की ख़्वाहिश से ख़ुदा को ख़बर है तो इस वक़्त गोया इन की वोह ह़ालत है जो 17 महीने बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ हुक्मे सुजूद होने में मुसल्मानों की ह़ालत थी कि ब ता'मीले हुक्म बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ सज्दा करते और दिल में ख़्वाहिश येही थी कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा क़िब्ला कर दिया जाए, قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی:"فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا इस तक़्दीर पर निय्यत ब मा'ना रग़्बत व ख़्वाहिश है। दूसरे मा'ना दक़ीक़ कि आ़शिक़ाने रौज़ा का सज्दा अगर्चे सू-रतन सूए ह़रम है मगर निय्यत का ह़ाल ख़ुदा जानता है कि वोह किसी वक़्त उस के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जुदा न हुए, वोह जानते हैं कि

का'बा भी है उन्हीं की तजल्ली का एक ज़िल

का'बा भी उन्हीं के नूर से बना उन्हीं के जल्वे ने का'बे को का'बा बना दिया, तो ह़क़ीक़ते का'बा वोह जल्वए मुह़म्मदिय्यह है जो उस में तजल्ली फ़रमा है, वोही रूहे़ क़िब्ला और उसी की त़रफ़ ह़क़ीक़तन सज्दा है। इतना याद रहे कि ह़क़ीक़ते मुह़म्मदिय्यह हमारी शरीअ़त में مسجود اليها है और...... अगली शरीअ़तों में सज्दए ता'ज़ीमी की مسجود لها थी, मलाएका व या'क़ूब व अब्नाए या'क़ूब عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इसी को सज्दा किया, आदम व यूसुफ़ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام क़िब्ला थे।

येह घर[1] येह दर है उस का जो घर दर से पाक है
मुज़्दा हो बे घरो कि सला अच्छे घर की है

महबूबे रब्बे अ़र्श है इस सब्ज़ कुब्बे में
पहलू में जल्वा गाह अ़तीक़ो[2] उ़मर की है

छाए[3] मलाएका हैं लगातार है दुरूद !
बदले हैं पहरे बदली में बारिश दुरर की है

---

1 : या'नी रौज़ए पुरनूर तजल्लिये इलाही का घर अ़ताए इलाही का दरवाज़ा है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िल्ले अव्वल व अतम्म व अक्मल व ख़लीफ़ए मुत्लक़ व क़ासिमे हर ने'मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस में तशरीफ़ फ़रमा हैं।

2 : "अ़तीक़" ब मा'ना आज़ाद व करीम व हसीन नामे सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ।

3 : मज़ारे पुर अन्वार पर सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते हर वक़्त हाज़िर रह कर सलातो सलाम अ़र्ज़ करते रहते हैं, सत्तर हज़ार सुब्ह आते हैं अ़स्र तक रहते हैं, अ़स्र के वक़्त येह बदल दिये जाते हैं, सत्तर हज़ार दूसरे आते हैं वोह सुब्ह तक रहते हैं यूं ही क़ियामत तक बदली होगी और जो एक बार आए दोबारा न आएंगे कि मन्ज़ूर उन सब मलाएका को यहां की हाज़िरी से मुशर्रफ़ फ़रमाना है अगर येह तब्दील न होते तो करोड़ों महरूम रह जाते। बदली यहां ब मा'ना तब्दील है और इस से बतौर ईहाम मा'ना अब्र व सहाब की तरफ़ इशारा किया और इस बदली में दुरर या'नी मोतियों की बारिश बताई जिस से मुराद लगातार दुरूद शरीफ़ है।

सा'दैन[1] का क़िरान है पहलूए माह में
झुरमट किये हैं तारे तजल्ली क़मर की है

सत्तर हज़ार सुब्ह़ हैं सत्तर हज़ार शाम
यूं बन्दगिये ज़ुल्फ़ो रुख़ आठों पहर की है

जो एक बार आए दोबारा न आएंगे
रुख़्सत ही बारगाह से बस इस क़दर की है

तड़पा करें बदल के फिर आना कहां नसीब
बे हुक्म कब मजाल परिन्दे को पर की है

ऐ वाए बे कसिये तमन्ना कि अब उमीद
दिन[2] को न शाम की है न शब को सह़र की है

---

1 : "सा'दैन" दो सय्यारे सईद ज़ुहरा व मुश्तरी और "क़िरान" ब कस्रे क़ाफ़, इन का एक द-रजा दो दक़ीक़ए फ़लक में जम्अ़ होना, यहां सा'दैन से मुराद सिद्दीक़ व फ़ारूक़ हैं رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا और माह व क़मर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और तारे वोही सत्तर हज़ार मलाएका कि मज़ारे अन्वर पर छाए हुए रहते हैं ।12

2 : जो शाम को ह़ाज़िर होने वाले थे उन को दिन भर शाम की उम्मीद लगी थी कि शाम हो और हम ह़ाज़िर हों, जो सुब्ह़ को ह़ाज़िर होने वाले थे उन्हें शब भर सुब्ह़ की आस बंधी हुई थी कि सुब्ह़ हो और हम ह़ाज़िर हों जो एक बार ह़ाज़िर हो चुके हैं उन्हें न दिन को वैसी शाम की उम्मीद है न शब को वैसी सुब्ह़ की, कि दोबारा आना न होगा ।

येह बदलियां न हों तो करोरों की आस जाए
और बारगाह मर-ह़-मते आ़म तर की है

मा'सूमों को है उ़म्र में सिर्फ़ एक बार बार
आ़सी पड़े रहें तो सला उ़म्र भर की है

ज़िन्दा रहें तो ह़ाज़िरिये बारगह नसीब
मर जाएं तो ह़याते अबद ऐ़श घर की है

मुफ़्लिस और ऐसे दर से फिरे बे ग़नी हुए
चांदी हर इक त़रह़ तो यहां गद्या-गर की है

जानां पे तक्या ख़ाक निहाली है दिल निहाल
हां बे नवाओ ख़ूब येह सूरत गुज़र की है

हैं चत्रो तख़्त सायए दीवारो ख़ाके दर
शाहों को कब नसीब येह धज कर्रो फ़र की है

उस पाक कू में ख़ाक ब सर सर ब ख़ाक हैं
समझे हैं कुछ येही जो ह़क़ीक़त बसर[1] की है

---

1 : ''बसर'' ब मा'ना गुज़र, ख़ूब बसर होती है या'नी ख़ूब गुज़रती है।12

क्यूं ताजदारो ! ख़्वाब में देखी कभी येह शै
जो आज झोलियों में गदायाने दर की है

जारू कशों[1] में चेहरे लिखे हैं मुलूक के
वोह भी कहां नसीब फ़क़त़ नाम भर की है

त़यबा[2] में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बन्द
सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

आ़सी भी हैं चहीते येह त़यबा है ज़ाहिदो !
मक्का नहीं कि जांच जहां ख़ै़रो शर की है

शाने जमाल त़य-बए जानां है नफ़्ए़ मह़्ज़ !
वुस्अ़त जलाले मक्का में सूदो ज़रर की है

---

1 : ''जारू कश'' मुख़फ़्फ़फ़ जारूब कश, दोनों सरकारों में सुल्त़ाने रूम أَعَزَّ اللّٰهُ نَصْرَهٗ वग़ैरा सलात़ीने इस्लाम के चेहरे जारूब कशों में लिखे हैं। सरकारों से इस की तन-ख़्वाह पाते हैं इन का नाइब रहता और येह ख़िदमत बजा लाता है।

2 : ह़दीस में फ़रमाया : ''مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا فَاِنِّيْ اَشْفَعُ لِمَنْ يَمُوْتُ بِهَا'' तुम में जिस से हो सके कि मदीने में मरे तो मदीने ही में मरना कि जो इस में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा।12

का'बा है बेशक अन्जुम-आरा दुल्हन मगर
सारी बहार दुल्हनों में ! दूल्हा के घर की है

का'बा दुल्हन है तुरबते अत्हर नई दुल्हन
येह रश्के आफ़्ताब वोह ग़ैरत क़मर की है

दोनों बनीं सजीली अनीली बनी मगर
जो पी के पास है वोह सुहागन कुंवर[1] की है

सर सब्ज़े[2] वस्ल येह है सियह पोशे हिज्र वोह
चमकी दुपट्टों से है जो हालत जिगर की है

मा-ओ शुमा[3] तो क्या कि ख़लीले जलील को
कल देखना कि उन से तमन्ना नज़र की है

---

1 : "कुंवर" ब ज़बाने हिन्दी मा'ना अमीर, सरदार, ख़ूब सूरत हसीन।
2 : रौज़ए अत्हर पर गिलाफ़ सब्ज़ है और का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर सियाह।12
3 : सहीह हदीस में फ़रमाया कि रोज़े क़ियामत तमाम ख़लाइक़ मेरी त़रफ़ नियाज़ मन्द होगी यहां तक कि ख़लीलुल्लाह इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالتَّسْلِيْم।12

अपना शरफ़ दुआ से है बाक़ी रहा क़बूल
येह जानें इन के हाथ में कुन्जी असर की है

जो चाहे उन से मांग कि दोनों जहां की ख़ैर
ज़र ना-ख़रीदा एक कनीज़ उन के घर की है

रूमी ग़ुलाम दिन ह़-बशी बांदियां शबें
गिनती कनीज़ ज़ादों में शामो सह़र की है

इतना अ़जब[1] बुलन्दिये जन्नत पे किस लिये
देखा नहीं कि भीक येह किस ऊंचे घर की है

अ़र्शे बरीं पे क्यूं न हो फ़िरदौस का दिमाग़
उतरी हुई शबीह तेरे बामो दर की है

---

1 : जन्नत सातों आस्मानों से ऊपर है जिस की छत अ़र्शे मुअ़ल्ला है बा'ज़ गदायाने बारगाह अगर तअ़ज्जुब करें कि हम जैसे पस्त व बे मिक़्दार और इतनी बुलन्द अ़ता तो जवाब बताया है कि येह तुम्हारे इस्तिह़क़ाक़ व लियाक़त की बिना पर नहीं बल्कि देने वाले की रह़मत व अ़ता है देखते नहीं कि भीक कैसे ऊंचे घर की है तो इस की इतनी बुलन्दी क्या अ़जब है ।12

वोह ख़ुल्द जिस में उतरेगी अबरार[1] की बरात
अदना निछावर इस मेरे दूल्हा के सर की है

अ़म्बर[2] ज़मीं अ़बीर हवा मुश्के तर गुबार !
अदना सी येह शनाख़्त तेरी रह गुज़र की है

सरकार हम गंवारों में त़र्ज़े अदब कहां
हम को तो बस तमीज़ येही भीक भर की है

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न "ला" है[3] न ह़ाजत "अगर" की है

---

1 : अबरार का मर्तबा मुक़र्रबीन से बहुत कम है यहां तक कि "حَسَنَاتُ الْاَبْرَارِ سَيِّاٰتُ الْمُقَرَّبِيْن" फिर मुक़र्रबीन में भी द-रजात बे शुमार हैं और उन्हें भी आ'ला और आ'ला से आ'ला जो द-रजे मिलेंगे वोह भी सब हुज़ूर ही का तसद्दुक़ है, इसी लिये इसे अदना निछावर कहा वरना जन्नत में कुछ अदना नहीं।12

2 : या'नी जिस राह से हुज़ूर गुज़र फ़रमाएं वहां की ज़मीन अ़म्बर हो जाती है हवा अ़बीर बन जाती है और गुबार मुश्के तर हो जाता है।

3 : साइल को न मिलने की दो सूरतें होती हैं : एक येह कि जिस से मांगा वोह सिरे से इन्कार कर दे येह तो "ला (لا)" हुवा या'नी नहीं, दूसरे येह कि शर्त़ पर टाले कि अगर हमारे पास हुवा तो देंगे या अगर तुम ने फ़ुलां काम किया तो देंगे इन की सरकार में येह दोनों बातें नहीं तो ज़रूर हमें उम्मीद है कि जो हम मांगेंगे पाएंगे।

उफ़ बे ह़याइयां कि येह मुंह और तेरे हुज़ूर
हां तू करीम है तेरी ख़ू दर गुज़र की है

तुझ से छुपाऊं मुंह तो करूं किस के सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ोअ़ नज़र की है

जाऊं कहां पुकारूं किसे किस का मुंह तकूं
क्या पुरसिश और जा भी सगे बे हुनर की है

बाबे अ़ता तो येह है जो बहका इधर उधर
कैसी ख़राबी उस नि-घरे दर बदर की है

आबाद एक दर है तेरा और तेरे[1] सिवा
जो बारगाह देखिये ग़ैरत खंडर की है

लब वा हैं आंखें बन्द हैं फैली हैं झोलियां
कितने मज़े की भीक तेरे पाक दर की है

1 : औलियाए किराम की बारगाहें भी हुज़ूर ही की बारगाह हैं, हुज़ूर ही की कफ़्श बरदारी से वोह औलिया हुए और वासित़ा व वसीला बने ह़त्ता कि अम्बिया भी हुज़ूर ही के तुफ़ैली और अ़ताए फ़ैज़ में हुज़ूर ही के नाइब हैं। عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

घेरा अंधेरियों ने दुहाई है चांद की
तन्हा हूं काली रात है मन्ज़िल ख़त़र की है

क़िस्मत में लाख पेच हों सो बल हज़ार कज
येह सारी गुथ्थी इक तेरी सीधी नज़र की है

ऐसी बंधी नसीब खुले मुश्किलें खुलीं
दोनों जहां में धूम तुम्हारी कमर की है

जन्नत न दें, न दें, तेरी रूयत हो ख़ैर से
इस गुल के आगे किस को हवस बर्गो बर की है

शरबत[1] न दें, न दें, तो करे बात लुत्फ़ से
येह शहद हो तो फिर किसे परवा शकर की है

मैं ख़ानाज़ाद कुहना हूं सूरत लिखी हुई
बन्दों कनीज़ों में मेरे मादर पिदर की है

---

1 : ब ज़ाहिर एक मक्रे इन्सानी की सन्अ़त है जन्नत से गोया बे रग़बती ज़ाहिर की मगर इस शर्त़ पर कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूयत ख़ैर से हो और यक़ीनन मा'लूम है कि जिसे हुज़ूर की रूयत ख़ैर से होगी जन्नत उस के क़दमों से लगी होती है फिर मुहाल है कि उसे जन्नत न दें, इलावा बरीं उ़श्शाक़ हरगिज़ अपने महबूब के सिवा गुल व बुलबुल, शहद व शीर की त़रफ़ तवज्जोह नहीं करते ।12

मंगता का हाथ उठते ही दाता की दैन थी
दूरी क़बूलो अ़र्ज़ में बस हाथ भर की है

सन्की वोह देख बादे शफ़ाअ़त कि दे हवा
येह आबरू रज़ा[1] तेरे दामाने तर की है

रोशनी बख़्श चेहरा

हज़रते सय्यिदुना असीद बिन अबी उनास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मदीने के ताजदार, शहन्शाहे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार मेरे चेहरे और सीने पर अपना दस्ते पुर अन्वार फेर दिया, इस की ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि मैं जब भी किसी अंधेरे घर में दाख़िल होता वोह घर रोशन हो जाता।

(الخصائص الکبری ، ج۲،ص۴۲ و تاریخ دمشق، ج۲۰، ص۲۱)

1 किसी के दामन को खुश्क करने के लिये हवा देते हैं। और तर दामनी इस्तिआ़रा है गुनाह से या'नी तेरे दामने तर को हवा देने के लिये वोह देख शफ़ाअ़त की नसीम चली। وَالْحَمْدُ لِلّٰه

मे 'राज नज़्म नज़्रे गदा ब हुज़ूर सुल्तानुल अम्बिया عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالثَّنَا दर तह्नियत शादिये असरा

वोह सरवरे किश्वरे रिसालत जो अ़र्श पर जल्वा-गर हुए थे
नए निराले त़रब के सामां अ़रब के मेहमान के लिये थे

बहार है शादियां मुबारक चमन को आबादियां मुबारक
मलक फ़लक अपनी अपनी लै में येह घर अ़नादिल का बोलते थे

वहां फ़लक पर यहां ज़मीं में रची थी शादी मची थी धूमें
उधर से अन्वार हंसते आते इधर से नफ़्ह़ात उठ रहे थे

येह छूट पड़ती थी उन के रुख़ की कि अ़र्श तक चांदनी थी छटकी
वोह रात क्या जगमगा रही थी जगह जगह नस्ब आइने थे

नई दुल्हन की फबन में का'बा निखर के संवरा संवर के निखरा
ह़जर के सदक़े कमर के इक तिल में रंग लाखों बनाव के थे

नज़र में दूल्हा के प्यारे जल्वे ह़या से मेह़राब सर झुकाए
सियाह पर्दे के मुंह पर आंचल तजल्लिये ज़ात बहूत से थे

खुशी के बादल उमंड के आए दिलों के ताऊस रंग लाए
वोह नग़मए ना'त का समां था ह़रम को ख़ुद वज्द आ रहे थे

येह झूमा मीज़ाबे ज़र का झूमर कि आ रहा कान पर ढलक कर
फुहार बरसी तो मोती झड़ कर ह़तीम की गोद में भरे थे

दुल्हन की ख़ुश्बू से मस्त कपड़े नसीमे गुस्ताख़ आंचलों से
ग़िलाफ़े मुश्कीं जो उड़ रहा था ग़ज़ाल नाफ़े बसा रहे थे

पहाड़ियों का वोह हुस्ने तज़्ई वोह ऊंची चोटी वोह नाज़ो तम्कीं!
सबा से सब्ज़ा में लहरें आतीं दुपट्टे धानी चुने हुए थे

नहा के नहरों ने वोह चमक्ता लिबास आबे रवां का पहना
कि मौजें छड़ियां थीं धार लचका ह़बाबे ताबां के थल टके थे

पुराना पुरदाग़ मल्गजा था उठा दिया फ़र्श चांदनी का
हुजूमे तारे निगह से कोसों क़दम क़दम फ़र्श बादले थे

गुबार बन कर निसार जाएं कहां अब उस रह गुज़र को पाएं
हमारे दिल ह़ूरियों की आंखें फ़िरिश्तों के पर जहां बिछे थे

ख़ुदा ही दे सब्र जाने पुरग़म दिखाऊं क्यूंकर तुझे वोह आ़लम
जब उन को झुरमट में ले के क़ुदसी जिनां का दूल्हा बना रहे थे

उतार कर उन के रुख़ का सदक़ा येह नूर का बट रहा था बाड़ा
कि चांद सूरज मचल मचल कर जबीं की ख़ैरात मांगते थे

वोही तो अब तक छलक रहा है वोही तो जोबन टपक रहा है
नहाने में जो गिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिये थे

बचा जो तल्वों का उन के धोवन बना वोह जन्नत का रंगो रोग़न
जिन्हों ने दूल्हा की पाई उतरन वोह फूल गुलज़ारे नूर के थे

ख़बर येह तह्वीले मेह्र की थी कि रुत सुहानी घड़ी फिरेगी
वहां की पोशाक ज़ैबे तन की यहां का जोड़ा बढ़ा चुके थे

तजल्लिये ह़क़ का सेहरा सर पर सलातो तस्लीम की निछावर
दो रूया क़ुदसी परे जमा कर खड़े सलामी के वासिते़ थे

जो हम भी वां होते ख़ाके गुलशन लिपट के क़दमों से लेते उतरन
मगर करें क्या नसीब में तो येह ना मुरादी के दिन लिखे थे

अभी न आए थे पुश्ते ज़ीं तक कि सर हुई मग़्फ़िरत की शल्लक
सदा शफ़ाअ़त ने दी मुबारक ! गुनाह मस्ताना झूमते थे

अ़जब न था रख़्श का चमक्ना ग़ज़ाले दम ख़ुर्दा सा भड़क्ना
शुआ़एं बुक्के उड़ा रही थीं तड़पते आंखों पे साइक़े थे

हुजूमे उम्मीद है घटाओ मुरादें दे कर इन्हें हटाओ
अदब की बागें लिये बढ़ाओ मलाएका में येह गुलगुले थे

उठी जो गर्दे रहे मुनव्वर वोह नूर बरसा कि रास्ते भर
घिरे थे बादल भरे थे जल थल उमंड के जंगल उबल रहे थे

सितम किया कैसी मत कटी थी क़मर ! वोह ख़ाक उन के रह गुज़र की
उठा न लाया कि मलते मलते येह दाग़ सब देखता मिटे थे

बुराक़ के नक़्शे सुम के सदक़े वोह गुल खिलाए कि सारे रस्ते
महक्ते गुलबुन लहक्ते गुलशन हरे भरे लह्लहा रहे थे

नमाज़े अक़्सा में था येही सिर्र इ़यां हों मा'निये अव्वल आख़िर
कि दस्त बस्ता हैं पीछे ह़ाज़िर जो सल्त़नत आगे कर गए थे

येह उन की आमद का दब-दबा था निखार हर शै का हो रहा था
नुजूमो अफ़्लाक जामो मीना उजालते थे खंगालते थे

निक़ाब उलटे वोह मेहरे अन्वर जलाले रुख़्सार गर्मियों पर
फ़लक को हैबत से तप चढ़ी थी तपक्ते अन्जुम के आबले थे

येह जोशिशे नूर का असर था कि आबे गौहर कमर कमर था
सफ़ाए रह से फिसल फिसल कर सितारे क़दमों पे लौटते थे

बढ़ा येह लहरा के बह़्रे वह़्दत कि धुल गया नामे रेग कसरत
फ़लक के टीलों की क्या ह़क़ीक़त येह अ़र्शो कुर्सी दो बुलबुले थे

वोह ज़िल्ले रह़्मत वोह रुख़ के जल्वे कि तारे छुपते न खिलने पाते
सुनहरी ज़र बफ़्त ऊदी अत़्लस येह थान सब धूप छाउं के थे

चला वोह सर्वे चमां ख़िरामां न रुक सका सिदरा से भी दामां
पलक झपक्ती रही वोह कब के सब ईनो आं से गुज़र चुके थे

झलक सी इक क़ुदसियों पर आई हवा भी दामन की फिर न पाई
सुवारी दूल्हा की दूर पहुंची बरात में होश ही गए थे

थके थे रूहुल अमीं के बाज़ू छुटा वोह दामन कहां वोह पहलू
रिकाब छूटी उमीद टूटी निगाहे ह़सरत के वल्वले थे

रविश की गरमी को जिस ने सोचा दिमाग़ से इक भबूका फूटा
ख़िरद के जंगल में फूल चमका दहर दहर पेड़ जल रहे थे

जिलौ में जो मुर्ग़े अ़क़्ल उड़े थे अ़जब बुरे ह़ालों गिरते पड़ते
वोह सिदरा ही पर रहे थे थक कर चढ़ा था दम तेवर आ गए थे

क़वी थे मुरग़ाने वह्म के पर उड़े तो उड़ने को और दम भर
उठाई सीने की ऐसी ठोकर कि ख़ूने अन्देशा थूकते थे

सुना येह इतने में अ़र्शे ह़क़ ने कि ले मुबारक हों ताज वाले
वोही क़दम ख़ैर से फिर आए जो पहले ताजे शरफ़ तेरे थे

येह सुन के बे ख़ुद पुकार उठ्ठा निसार जाऊं कहां हैं आक़ा
फिर उन के तल्वों का पाऊं बोसा येह मेरी आंखों के दिन फिरे थे

झुका था मुजरे को अ़र्शे आ'ला गिरे थे सज्दे में बज़्मे बाला
येह आंखें क़दमों से मल रहा था वोह गिर्द क़ुरबान हो रहे थे

ज़ियाएं कुछ अ़र्श पर येह आईं कि सारी क़िन्दीलें झिल-मिलाईं
हुज़ूरे ख़ुरशीद क्या चमक्ते चराग़ मुंह अपना देखते थे

येही समां था कि पैके रह़मत ख़बर येह लाया कि चलिये ह़ज़रत
तुम्हारी ख़ातिर कुशादा हैं जो कलीम पर बन्द रास्ते थे

बढ़ ऐ मुह़म्मद क़रीं हो अह़मद क़रीब आ सरवरे मुमज्जद
निसार जाऊं येह क्या निदा थी येह क्या समां था येह क्या मज़े थे

تَبَارَکَ اللہ शान तेरी तुझी को ज़ैबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वोह जोशे لَنْ تَرَانِی कहीं तक़ाज़े विसाल के थे

ख़िरद से कह दो कि सर झुका ले गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले
पड़े हैं यां खुद जिहत को लाले किसे बताए किधर गए थे

सुरागे ऐनो मता कहां था निशाने कैफ़ो इला कहां था
न कोई राही न कोई साथी न संगे मन्ज़िल न मर्हले थे

उधर से पैहम तक़ाज़े आना इधर था मुश्किल क़दम बढ़ाना
जलालो हैबत का सामना था जमालो रहमत उभारते थे

बढ़े तो लेकिन झिझक्ते डरते हया से झुकते अदब से रुकते
जो कुर्ब उन्हीं की रविश पे रखते तो लाखों मन्ज़िल के फ़ासिले थे

पर इन का बढ़ना तो नाम को था ह़क़ीक़तन फ़े'ल था उधर का
तनज़्ज़ुलों में तरक़्क़ी अफ़्ज़ा दना तदल्ला के सिल्सिले थे

हुवा न आख़िर कि एक बजरा तमव्वुजे बहरे हू में उभरा
दना की गोदी में उन को ले कर फ़ना के लंगर उठा दिये थे

किसे मिले घाट का किनारा किधर से गुज़रा कहां उतारा
भरा जो मिस्ले नज़र त़रारा वोह अपनी आंखों से खुद छुपे थे

उठे जो क़स्रे दना के पर्दे कोई ख़बर दे तो क्या ख़बर दे
वहां तो जा ही नहीं दुई की न कह कि वोह भी न थे अरे थे

वोह बाग़ कुछ ऐसा रंग लाया कि गुन्चओ गुल का फ़र्क़ उठाया
गिरह में कलियों की बाग़ फूले गुलों के तुक्मे लगे हुए थे

मुहीतो मर्कज़ में फ़र्क़ मुश्किल रहे न फ़ासिल ख़ुतूते वासिल
कमानें हैरत में सर झुकाए अजीब चक्कर में दाएरे थे

हिजाब उठने में लाखों पर्दे हर एक पर्दे में लाखों जल्वे
अजब घड़ी थी कि वस्लो फ़ुरक़त जनम के बिछड़े गले मिले थे

ज़बानें सूखी दिखा के मौजें तड़प रही थीं कि पानी पाएं
भंवर को येह ज़ो'फ़े तिश्नगी था कि हल्क़े आंखों में पड़ गए थे

वोही है अव्वल वोही है आख़िर वोही है बातिन वोही है ज़ाहिर
उसी के जल्वे उसी से मिलने उसी से उस की तरफ़ गए थे

कमाने इम्कां के झूटे नुक़्तो तुम अव्वल आख़िर के फेर में हो
मुहीत की चाल से तो पूछो किधर से आए किधर गए थे

इधर से थीं नज़्रे शह नमाज़ें उधर से इन्आमे ख़ुस्रवी में
सलामो रहमत के हार गुंध कर गुलूए पुरनूर में पड़े थे

ज़बान को इन्तिज़ारे गुफ़्तन तो गोश को ह़स्रते शुनीदन
यहां जो कहना था कह लिया था जो बात सुननी थी सुन चुके थे

वोह बुर्जे बत़्ह़ा का माह-पारा बिहिश्त की सैर को सिधारा
चमक पे था ख़ुल्द का सितारा कि उस क़मर के क़दम गए थे

सुरूरे मक़्दम की रोशनी थी कि ताबिशों से महे अ़रब की
जिनां के गुलशन थे झाड़ फ़र्शी जो फूल थे सब कंवल बने थे

त़रब की नाज़िश कि हां लचक्ये अदब वोह बन्दिश कि हिल न सकिये
येह जोशे ज़िद्दैन था कि पौदे कशा कशे अर्रा के तले थे

ख़ुदा की क़ुदरत कि चांद ह़क़ के करोरों मन्ज़िल में जल्वा कर के
अभी न तारों की छाउं बदली कि नूर के तड़के आ लिये थे

नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत! रज़ा पे लिल्लाह हो इ़नायत
इसे भी उन ख़िल्अ़तों से ह़िस्सा जो ख़ास़ रह़मत के वां बटे थे

सनाए सरकार है वज़ीफ़ा क़बूले सरकार है तमन्ना
न शाइ़री की हवस न परवा रवी थी क्या कैसे क़ाफ़िये थे

रुबाइयात

आते रहे अम्बिया كَمَا قِيۡلَ لَهُمۡ
وَالۡخَاتَمُ حَقُّكُمۡ कि ख़ातिम हुए तुम
या'नी जो हुवा दफ़्तरे तन्ज़ील तमाम
आख़िर में हुई मोहर कि اَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ

शब लिह्या व शारिब है रुख़े रोशन दिन
गेसू व शबे क़द्रो बराते मोमिन
मिज़्गां की सफ़ें चार[4] हैं दो[2] अब्रू हैं
وَالۡفَجۡر के पहलू में لَيَالٍ عَشۡرٍ

अल्लाह की सर ता ब क़दम शान हैं येह
इन सा नहीं इन्सान वोह इन्सान हैं येह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान येह कहता है मेरी जान हैं येह

बोसा गहे अस्ह़ाब वोह मेहरे सामी
वोह शानए चप में उस की अ़म्बर फ़ामी
येह तुर्फ़ा कि है का'बए जानो दिल में
संगे अस्वद नसीब रुक्ने शामी

का'बे से अगर तुरबते शह फ़ाज़िल है
क्यूं बाईं त़रफ़ उस के लिये मन्ज़िल है
इस फ़िक्र में जो दिल की त़रफ़ ध्यान गया
समझा कि वोह जिस्म है येह मरक़दे दिल है

तुम जो चाहो तो क़िस्मत की मुसीबत टल जाए
क्यूंकर कहूं साअ़त से क़ियामत टल जाए
लिल्लाह उठा दो रुख़े रोशन से निक़ाब
मौला मेरी आई हुई शामत टल जाए

यां, शुबा शबीह का गुज़रना कैसा !
बे मिस्ल की तिम्साल संवरना कैसा
इन का मु-तअ़ल्लिक़ है तरक़्क़ी पे मुदाम
तस्वीर का फिर कहिये उतरना कैसा

येह शह की तवाज़ोअ़ का तक़ाज़ा ही नहीं
तस्वीर खिंचे उन को गवारा ही नहीं
मा'ना हैं येह मानी कि करम क्या माने
खिंचना तो यहां किसी से ठहरा ही नहीं

ह़दाइक़े बख़्शिश

1325 हि.

ह़िस्सए दुवुम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

اَلَا یٰۤاَیُّھَا السَّاقِیۡ اَدِرۡ کَاۡسًا وَّ نَاوِلۡھَا

اَلَا یٰۤاَیُّھَا السَّاقِیۡ اَدِرۡ کَاۡسًا وَّ نَاوِلۡھَا
کہ بَر یادِ شہِ کوثر بِنا سازَیم مَحفِلہا

بَلا بارِید حُبِّ شَیخِ نجدی بَر وہابِیہ
کہ عشق آساں نمود اوّل ولے اُفتاد مُشکِلہا

وہابی گرچہ اِخفا می کُند بغضِ نبی لیکن
نِہاں کے ماند آں رازے کزُو سازَند مَحفِلہا

توَہُّب گاہ مُلکِ ہند اِقامت رانَمی شاید
جَرَس فریاد می دارَد کہ بَربَندید مَحمِلہا

صَلائے مَجلِسَم در گوش آمد بیں بیا بِشنَو
جَرَس مَستانہ می گُوید کہ بَربَندید مَحمِلہا

مگرداں رُو اَزیں محفل رہِ اَربابِ سنّت رَو
کہ سالِک بے خبر نبوَد زِ راہ و رسمِ منزلہا

دراِیں جلوَت بیا از راہِ خلوَت تا خُدا یابی
مَتٰی مَا تَلْقَ مَنْ تَهْوٰی دَعِ الدُّنْيَا وَ اَمْهِلْهَا

دِلم قُربانَت اے دُودِ چراغِ محفلِ مَوْلِد
زِ تابِ جَعْدِ مُشکینَت چِہ خوں اُفتاد در دِلْہا

غریقِ بحرِ عشقِ احمدیم از فرحتِ مَولِد
کُجا دانند حالِ ما سبکسارانِ سَاحِلْہا

رضاء مستِ جامِ عشق ساغر باز می خواہد
اَلَا یٰۤاَیُّهَا السَّاقِیْ اَدِرْ کَاْسًا وَّ نَاوِلْهَا

सुब्ह त़यबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का

सुब्ह त़यबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का

बाग़े त़यबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्ते बू हैं बुलबुलें पढ़ती हैं कलिमा नूर का

बारहवीं के चांद का मुजरा है सज्दा नूर का
बारह बुर्जों से झुका एक इक सितारा नूर का

उन के क़स्रे क़द्र से ख़ुल्द एक कमरा नूर का
सिदरा पाएं बाग़ में नन्हा सा पौदा नूर का

अ़र्श भी फ़िरदौस भी उस शाहे वाला नूर का
येह मुसम्मन बुर्ज वोह मुश्कूए आ'ला नूर का

आई बिद्अ़त छाई ज़ुल्मत रंग बदला नूर का
माहे सुन्नत मेहरे त़ल्अ़त ले ले बदला नूर का

तेरे ही माथे रहा है ऐ जान सेहरा नूर का
बख़्त जागा नूर का चमका सितारा नूर का

मैं गदा तू बादशाह भर दे पियाला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदक़ा नूर का

तेरी ही जानिब है पांचों वक़्त सज्दा नूर का
रुख़ है क़िब्ला नूर का अब्रू है का'बा नूर का

पुश्त पर ढलका सरे अन्वर से शम्ला नूर का
देखें मूसा तूर से उतरा सहीफ़ा नूर का

ताज वाले देख कर तेरा इमामा नूर का
सर झुकाते हैं इलाही बोलबाला नूर का

बीनिये पुरनूर पर रख़्शां है बुक्का नूर का
है लिवाउल ह़म्द पर उड़ता फरेरा नूर का

मुस्ह़फ़े आ़रिज़ पे है ख़त्ते शफ़ीआ़ नूर का
लो सियह कारो मुबारक हो क़बाला नूर का

आबे ज़र बनता है आ़रिज़ पर पसीना नूर का
मुस्ह़फ़े ए'जाज़ पर चढ़ता है सोना नूर का

पेच करता है फ़िदा होने को लम्आ़ नूर का
गिर्दे सर फिरने को बनता है इमामा नूर का

हैबते आ़रिज़ से थर्राता है शो'ला नूर का
कफ़्शे पा पर गिर के बन जाता है गुफ्फा नूर का

शम्अ़ दिल मिश्कात तन सीना ज़ुजाजा नूर का
तेरी सूरत के लिये आया है सूरह नूर का

मैल से किस दरजे सुथरा है वोह पुतला नूर का
है गले में आज तक कोरा ही कुरता नूर का

तेरे आगे ख़ाक पर झुकता है माथा नूर का
नूर ने पाया तेरे सज्दे से सीमा नूर का

तू है साया नूर का हर उ़ज़्व टुकड़ा नूर का
साए का साया न होता है न साया नूर का

क्या बना नामे ख़ुदा असरा का दूल्हा नूर का
सर पे सेहरा नूर का बर में शहाना नूर का

बज़्मे वह्दत में मज़ा होगा दोबाला नूर का
मिलने शम्ए़ तूर से जाता है इक्का नूर का

वस्फ़े रुख़ में गाती हैं हूरें तराना नूर का
कुदरती बीनों में क्या बजता है लहरा नूर का

येह किताबे कुन में आया तुरफ़ा आया(आयह) नूर का
ग़ैरे क़ाइल कुछ न समझा कोई मा'ना नूर का

देखने वालों ने कुछ देखा न भाला नूर का
مَنْ رَاٰی कैसा येह आईना दिखाया नूर का

सुब्ह़ कर दी कुफ़्र की सच्चा था मुज़्दा नूर का
शाम ही से था शबे तीरह को धड़का नूर का

पड़ती है नूरी भरन उमडा है दरिया नूर का
सर झुका ऐ किश्ते कुफ़्र आता है अहला नूर का

नारियों का दौर था दिल जल रहा था नूर का
तुम को देखा हो गया ठन्डा कलेजा नूर का

नस्ख़े अदियां कर के ख़ुद क़ब्ज़ा बिठाया नूर का
ताजवर ने कर लिया कच्चा अ़लाक़ा नूर का

जो गदा देखो लिये जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या इस में तोड़ा नूर का

भीक ले सरकार से ला जल्द कासा नूर का
माहे नौ त़यबा में बटता है महीना नूर का

देख इन के होते नाज़ेबा है दा'वा नूर का
मेह्र लिख दे यां के ज़र्रों को मुचल्का नूर का

यां भी दाग़े सज्दए त़यबा है तमग़ा नूर का
ऐ क़मर क्या तेरे ही माथे है टीका नूर का

शम्अ़ सां एक एक परवाना है उस बा नूर का
नूरे ह़क़ से लौ लगाए दिल में रिश्ता नूर का

अन्जुमन वाले हैं अन्जुम बज़्म ह़ल्क़ा नूर का
चांद पर तारों के झुरमट से है हाला नूर का

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का
हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

किस के पर्दे ने किया आईना अन्धा नूर का
मांगता फिरता है आंखें हर नगीना नूर का

अब कहां वोह ताबिशें कैसा वोह तड़का नूर का
मेह्र ने छुप कर किया ख़ासा धुंदल्का नूर का

तुम मुक़ाबिल थे तो पहरों चांद बढ़ता नूर का
तुम से छुट कर मुंह निकल आया ज़रा सा नूर का

क़ब्रे अन्वर कहिये या क़स्रे मुअ़ल्ला नूर का
चर्ख़े अत़्लस या कोई सादा सा क़ुब्बा नूर का

आंख मिल सकती नहीं दर पर है पहरा नूर का
ताब है बे हुक्म पर मारे परिन्दा नूर का

नज़्अ़ में लौटेगा ख़ाके दर पे शैदा नूर का
मर के ओढ़ेगी अ़रूसे जां दुपट्टा नूर का

ताबे मेहरे ह़श्र से चौंके न कुश्ता नूर का
बूंदियां रह़मत की देने आईं छींटा नूर का

वज़्ए वाज़ेअ़ में तेरी सूरत है मा'ना नूर का
यूं मजाज़न चाहें जिस को कह दें कलिमा नूर का

अम्बिया अज्ज़ा हैं तू बिल्कुल है जुम्ला नूर का
इस इलाक़े से है उन पर नाम सच्चा नूर का

येह जो मेहरो माह पे है इत्लाक़ आता नूर का
भीक तेरे नाम की है इस्तिआ़रा नूर का

सुर-मगीं आंखें ह़रीमे ह़क़ के वोह मुश्कीं ग़ज़ाल
है फ़ज़ाए ला मकां तक जिन का रमना नूर का

ताबे हुस्ने गर्म से खिल जाएंगे दिल के कंवल
नौ बहारें लाएगा गरमी का झलका नूर का

ज़र्रे मेहरे क़ुद्स तक तेरे तवस्सुत़ से गए
ह़द्दे औसत़ ने किया सुग़रा को कुब्रा नूर का

सब्ज़ए गर्दूं झुका था बहरे पा बोसे बुराक़
फिर न सीधा हो सका खाया वोह कोड़ा नूर का

ताबे सुम से चौंधिया कर चांद उन्हीं क़दमों फिरा
हंस के बिजली ने कहा देखा छलावा नूर का

दीदे नक़्शे सुम को निकली सात पर्दों से निगाह
पुतलियां बोलीं चलो आया तमाशा नूर का

अ़क्से सुम ने चांद सूरज को लगाए चार चांद
पड़ गया सीमो ज़रे गर्दूं पे सिक्का नूर का

चांद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में
क्या ही चलता था इशारों पर खिलोना नूर का

एक सीने तक मुशाबेह इक वहां से पाउं तक
हुस्ने सिब्तै़न इन के जामों में है नीमा नूर का

साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से इ़यां
ख़त्ते़ तौअम में लिखा है येह दो[2] वरक़ा नूर का

کٓ गेसू ہٰ दहन یٰ अब्रू आंखें عٓصٓ
کٓھٰیٰعٓصٓ उन का है चेहरा नूर का

ऐ रज़ा येह अह़मदे नूरी का फ़ैज़े नूर है
हो गई मेरी ग़ज़ल बढ़ कर क़सीदा नूर का

दीवारें रोशन हो जातीं

"शिफ़ा शरीफ़" में है : जब रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराते थे तो दरो दीवार रोशन हो जाते। (اَلشِّفا، ج١،ص ٢١)

اُمّتان و سیاہ کاریہا

اُمّتان و سیاہ کاریہا
شافعِ حشر و غم گُساریہا

دُور از کُوئے صاحب کوثر
چشم دارد چہ اشکباریہا

در فراقِ تو یَا رَسُوْلَ اللّٰه
سینہ دارد چہ بے قراریہا

ظلمت آباد گُور روشن شُد
داغِ دل راسُتَ نور باریہا

چہ کُند نفس پردہ در مولیٰ
چوں توئی گرمِ پردہ داریہا

سگِ کُوئے نبی و یک نگہے
مَن و تا حشر جاں نِثاریہا

سَوْفَ یُعْطِیْکَ رَبُّکَ تَرْضٰی
حق نَمُودَت چہ پاسداریہا

دارَم اے گُل بَیادِ زلف و رخت
سحر و شام آہ و زاریہا

تا زِہ لُطفِ تو بر رضؔا ہر دم
مرہمِ کُہنہ دل فِگاریہا

वस्ले अव्वल फ़ज़ाइले सरकारे ग़ौसिय्यत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

तेरा ज़र्रा महे कामिल है या ग़ौस
तेरा क़तरा यमे साइल है या ग़ौस

कोई सालिक है या वासिल है या ग़ौस
वोह कुछ भी हो तेरा साइल है या ग़ौस

क़दे बे साया ज़िल्ले किब्रिया है
तू उस बे साया ज़िल का ज़िल है या ग़ौस

तेरी जागीर में है शर्क़ ता ग़र्ब
क़लम-रव में ह़रम ता ह़िल है या ग़ौस

दिले इश्क़ो रुख़े हुस्न आईना हैं
और इन दोनों में तेरा ज़िल है या ग़ौस

तेरी शम्अ़ दिलआरा की तबो ताब
गुलो बुलबुल की आबो गिल है या ग़ौस

तेरा मज्नूं तेरा सह़रा तेरा नज्द
तेरी लैला तेरा मह़मिल है या ग़ौस

येह तेरी चम्पई रंगत हुसैनी
ह़सन के चांद सुब्ह़े दिल है या ग़ौस

गुलिस्तां ज़ार तेरी पंखड़ी है
कली सो खुल्द का हासिल है या ग़ौस

उगाल उस का उधार अबरार का हो
जिसे तेरा उलुश हासिल है या ग़ौस

इशारे में किया जिस ने क़मर चाक
तू उस मह का महे कामिल है या ग़ौस

जिसे अर्शे दुवुम कहते हैं अफ़्लाक
वोह तेरी कुरसिये मन्ज़िल है या ग़ौस

तू अपने वक़्त का सिद्दीक़े अक्बर
ग़निय्यो हैदरो आदिल है या ग़ौस

वली क्या मुरसल आएं खुद हुज़ूर आएं
वोह तेरी वा'ज़ की महफ़िल है या ग़ौस

जिसे मांगे न पाएं जाह वाले
वोह बिन मांगे तुझे हासिल है या ग़ौस

फुयूज़े आलमे उम्मी से तुझ पर
इयां माज़ी व मुस्तक़्बिल है या ग़ौस

जो क़रनों सैर में आ़रिफ़ न पाएं
वोह तेरी पहली ही मन्ज़िल है या ग़ौस

मलक मश्ग़ूल हैं उस की सना में
जो तेरा ज़ाकिरो शाग़िल है या ग़ौस

न क्यूं हो तेरी मन्ज़िल अ़र्शे सानी
कि अ़र्शे ह़क़ तेरी मन्ज़िल है या ग़ौस

वहीं से उबले हैं सातों समुन्दर
जो तेरी नह्र का साह़िल है या ग़ौस

मलाइक के बशर के जिन्न के ह़ल्क़े
तेरी ज़ौ माहे हर मन्ज़िल है या ग़ौस

बुख़ारा व इराक़ो चिश्तो अजमेर
तेरी लौ शम्ए़ हर मह़फ़िल है या ग़ौस

जो तेरा नाम ले ज़ाकिर है प्यारे
तसव्वुर जो करे शाग़िल है या ग़ौस

जो सर दे कर तेरा सौदा ख़रीदे
ख़ुदा दे अ़क़्ल वोह आ़क़िल है या ग़ौस

कहा तूने कि जो मांगो मिलेगा
रज़ा तुझ से तेरा साइल है या ग़ौस

वस्ले दुवुम फ़ज़ाइले ग़ुरर ब त़र्ज़े दिगर

जो तेरा तिफ़्ल है कामिल है या ग़ौस
तुफ़ैली का लक़ब वासिल है या ग़ौस

तसव्वुफ़ तेरे मक्तब का सबक़ है
तसर्रुफ़ पर तेरा आ़मिल है या ग़ौस

तेरी सैरे اِلَی اللہ ही है فِی اللہ
कि घर से चलते ही मूसिल है या ग़ौस

तू नूरे अव्वलो आख़िर है मौला
तू ख़ैरे आ़जिलो आजिल है या ग़ौस

मलक के कुछ बशर कुछ जिन्न के हैं पीर
तू शैख़े आ़ली व साफ़िल है या ग़ौस

किताबे हर दिल आसारे तअ़र्रुफ़
तेरे दफ़्तर ही से नाक़िल है या ग़ौस

फ़ुतूहुल ग़ैब अगर रोशन न फ़रमाए
फ़ुतूहातो फ़ुसूस आफ़िल है या ग़ौस

तेरा मन्सूब है मरफ़ूअ़ उस जा
इज़ाफ़त रफ़्अ़ की आ़मिल है या ग़ौस

तेरे कामी मशक़्क़त से बरी हैं
कि बरतर नस्ब से फ़ाइल है या ग़ौस

अह़द से अह़मद और अह़मद से तुझ को
कुन और सब कुन मकुन ह़ासिल है या ग़ौस

तेरी इ़ज़्ज़त तेरी रिफ़्अ़त तेरा फ़ज़्ल
बि फ़द्लिह अफ़्ज़लो फ़ाज़िल है या ग़ौस

तेरे जल्वे के आगे मिन्तक़ा से
महो ख़ुर पर ख़ते बातिल है या ग़ौस

सियाही माइल उस की चांदनी आई
क़मर का यूं फ़लक माइल है या ग़ौस

तिलाए मेह्र हैं टक्साल बाहर
कि ख़ारिज मर्कज़े हामिल है या ग़ौस

तू बरज़ख़ है ब रंगे नूने मिन्नत
दो जानिब मुत्तसिल वासिल है या ग़ौस

नबी से आख़िज़ और उम्मत पे फ़ाइज़
उधर क़ाबिल इधर फ़ाइल है या ग़ौस

नतीजा हद्दे औसत गिर के दे और
यहां जब तक कि तू शामिल है या ग़ौस

اَلَا طُوْبٰى لَكُمْ है वोह कि जिन का
शबाना रोज़ विर्दे दिल है या ग़ौस

अ़जम कैसा अ़रब हिल क्या ह़रम में
जमी हर जा तेरी मह़फ़िल है या ग़ौस

है शर्हे इस्मे अल क़ादिर तेरा नाम
येह शर्ह उस मत्न की ह़ामिल है या ग़ौस

जबीने जुब्बा फ़रसाई का सन्दल
तेरी दीवार की कहगिल है या ग़ौस

बजा लाया वोह अम्रे سَارِعُوْٓا को
तेरी जानिब जो मुस्ता'जिल है या ग़ौस

तेरी क़ुदरत तो फ़ित़रिय्यात से है
कि क़ादिर नाम में दाख़िल है या ग़ौस

तसर्रुफ़ वाले सब मज़्हर हैं तेरे
तू ही उस पर्दे में फ़ाइल है या ग़ौस

रज़ा के काम और रुक जाएं ह़ाशा
तेरा साइल है तू बाज़िल है या ग़ौस

वस्ले सिवुम तफ़्ज़ीले हुज़ूर व रग़्मे हर अ़दुव्वे मक़्हूर

बदल या फ़र्द जो कामिल है या ग़ौस
तेरे ही दर से मुस्तक्मिल है या ग़ौस

जो तेरी याद से ज़ाहिल है या ग़ौस
वोह ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल है या ग़ौस

اَنَا السَّیَّاف से जाहिल है या ग़ौस
जो तेरे फ़ज़्ल पर साइल है या ग़ौस

सुख़न हैं अस्फ़िया तू मग़्ज़े मा'ना
बदन हैं औलिया तू दिल है या ग़ौस

अगर वोह जिस्मे इ़रफ़ां हैं तो तू आंख
अगर वोह आंख हैं तू तिल है या ग़ौस

उलूहिय्यत नुबुव्वत के सिवा तू
तमाम अफ़्ज़ाल का क़ाबिल है या ग़ौस

नबी के क़दमों पर है जुज़ नुबुव्वत
कि ख़त्म इस राह में ह़ाइल है या ग़ौस

उलूहिय्यत ही अह़मद ने न पाई
नुबुव्वत ही से तू आ़तिल है या ग़ौस

सह़ाबिय्यत हुई फिर ताबिइय्यत
बस आगे क़ादिरी मन्ज़िल है या ग़ौस

हज़ारों ताबेई से तू फ़ुज़ूं है
वोह त़ब्क़ा मुज्मलन फ़ाज़िल है या ग़ौस

रहा मैदानो शह्‌रिस्ताने इरफ़ां
तेरा रमना तेरी मह़फ़िल है या ग़ौस

येह चिश्ती सोह्‌र वर्दी नक़्शबन्दी
हर इक तेरी त़रफ़ माइल है या ग़ौस

तेरी चिड़ियां हैं तेरा दाना पानी
तेरा मेला तेरी मह़फ़िल है या ग़ौस

उन्हें तो क़ादिरी बैअ़त है तज्दीद
वोह हां ख़ात़ी जो मुस्तब्दिल है या ग़ौस

क़मर पर जैसे ख़ुर का यूं तेरा क़र्ज़
सब अहले नूर पर फ़ाज़िल है या ग़ौस

ग़लत़ कर दम तू वाहिब है न मुक़्रिज़
तेरी बख़्शिश तेरा नाइल है या ग़ौस

कोई क्या जाने तेरे सर का रुत्बा
कि तल्वा ताजे अहले दिल है या ग़ौस

मशाइख़ में किसी की तुझ पे तफ़्ज़ील
ब हुक्मे औलिया बातिल है या ग़ौस

जहां दुश्वार हो वहमे मुसावात
येह जुरअत किस क़दर हाइल है या ग़ौस

तेरे ख़ुद्दाम के आगे है इक बात
जो और अक़्ताब को मुश्किल है या ग़ौस

उसे इदबार जो मुदबिर है तुझ से
वोह ज़ी इक़्बाल जो मुक़्बिल है या ग़ौस

ख़ुदा के दर से है मतरूदो मख़्ज़ूल
जो तेरा तारिको ख़ाज़िल है या ग़ौस

सितम-कोरी वहाबी राफ़िज़ी की
कि हिन्दू तक तेरा क़ाइल है या ग़ौस

वोह क्या जानेगा फ़ज़्ले मुर्तज़ा को
जो तेरे फ़ज़्ल का जाहिल है या ग़ौस

रज़ा के सामने की ताब किस में
फ़लक-वार इस पे तेरा ज़िल है या ग़ौस

वस्ले चहारुम इस्तिआ़नत अज़ सरकारे ग़ौसिय्यत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

तृलब का मुंह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस
मगर तेरा करम कामिल है या ग़ौस

दुहाई या मुहि़य्युद्दीं दुहाई
बला इस्लाम पर नाज़िल है या ग़ौस

वोह संगीं बिद्अ़तें वोह तेज़िये कुफ़्र
कि सर पर तैग़ दिल पर सिल है या ग़ौस

عَزُوْمًا قَاتِلًا عِنْدَ الْقِتَالِ
मदद को आ दमे बिस्मिल है या ग़ौस

ख़ुदारा नाख़ुदा आ दे सहारा
हवा बिगड़ी भंवर ह़ाइल है या ग़ौस

जिला दे दीं, जला दे कुफ़्रो इल्ह़ाद
कि तू मुह़्यी है तू क़ातिल है या ग़ौस

तेरा वक़्त और पड़े यूं दीन पर वक़्त
न तू आ़जिज़ न तू ग़ाफ़िल है या ग़ौस

रही हां शामते आ'माल येह भी
जो तू चाहे अभी ज़ाइल है या ग़ौस

ग़यूरा ! अपनी ग़ैरत का तसद्दुक़
वोही कर जो तेरे क़ाबिल है या ग़ौस

ख़ुदारा मर्हमे ख़ाके क़दम दे
जिगर ज़ख़्मी है दिल घाइल है या ग़ौस

न देखूं शक्ले मुश्किल तेरे आगे
कोई मुश्किल सी येह मुश्किल है या ग़ौस

वोह घेरा रिश्तए शिर्के ख़फ़ी ने
फंसा ज़ुन्नार में येह दिल है या ग़ौस

किये तरसा व गब्र अक़्ताबो अब्दाल
येह महज़ इस्लाम का साइल है या ग़ौस

तू क़ुव्वत दे मैं तन्हा काम बिस्यार
बदन कमज़ोर दिल काहिल है या ग़ौस

अ़दू बद दीन मज़हब वाले ह़ासिद
तू ही तन्हा का ज़ोरे दिल है या ग़ौस

हसद से इन के सीने पाक कर दे
कि बदतर दिक़ से भी येह सिल है या ग़ौस

ग़िज़ाए दिक़ येही ख़ूं उस्तुख़्वां गोश्त
येह आतिश दीन की आकिल है या ग़ौस

दिया मुझ को उन्हें महरूम छोड़ा
मेरा क्या जुर्म हक़ फ़ासिल है या ग़ौस

खुदा से लें लड़ाई वोह है मुअ़्ती
नबी क़ासिम है तू मूसिल है या ग़ौस

अ़ताएं मुक़्तदिर ग़फ़्फ़ार की हैं
अ़बस बन्दों के दिल में ग़िल है या ग़ौस

तेरे बाबा का फिर तेरा करम है
येह मुंह वरना किसी क़ाबिल है या ग़ौस

भरन वाले तेरा झाला तो झाला
तेरा छींटा मेरा ग़ासिल है या ग़ौस

सना मक़्सूद है अ़र्ज़े ग़रज़ क्या
ग़रज़ का आप तू काफ़िल है या ग़ौस

रज़ा का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा
तेरी रहमत अगर शामिल है या ग़ौस

का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद

का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद (الف)
तयबा के शम्सुद्दुहा तुम पे करोरों दुरूद

शाफ़ेए रोज़े जज़ा तुम पे करोरों दुरूद
दाफ़ेए जुम्ला बला तुम पे करोरों दुरूद

जानो दिले अस्फ़िया तुम पे करोरों दुरूद
आबो गिले अम्बिया तुम पे करोरों दुरूद

लाएं तो येह दूसरा दो सरा जिस को मिला
कूश्के अर्शो दना तुम पे करोरों दुरूद

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

(कोहे कलीम) (कोहे मसीह)
तूर पे जो शम्अ था चांद था साईर का
नय्यिरे फ़ारां हुवा तुम पे करोरों दुरूद

दिल करो ठन्डा मेरा वोह कफ़े पा चांद सा
सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद

ज़ात हुई इन्तिख़ाब वस्फ़ हुए ला जवाब (ب)
नाम हुवा मुस्तफ़ा तुम पे करोरों दुरूद

ग़ा-यतो इ़ल्लत सबब बहरे जहां तुम हो सब
तुम से बना तुम बिना तुम पे करोरों दुरूद

(ت) तुम से जहां की ह़यात तुम से जहां का सबात
अस्ल से है ज़िल बंधा तुम पे करोरों दुरूद

मग़्ज़ हो तुम और पोस्त और हैं बाहर के दोस्त
तुम हो दरूने सरा तुम पे करोरों दुरूद

(ث) क्या हैं जो बेह़द हैं लौस तुम तो हो ग़ैस और ग़ौस
छींटे में होगा भला तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो ह़फ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वोह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद

(ج) वोह शबे मे'राज राज वोह सफ़े मह़शर का ताज
कोई भी ऐसा हुवा तुम पे करोरों दुरूद

(ح) نُحْتَ[1] فَلَاحَ الْفَلَاحُ رُحْتَ فَرَاحَ الْمَرَاحُ
عُدْ لِيَعُوْدَ الْهَنَا तुम पे करोरों दुरूद

---

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्ख़े में "نُحْتَ" है जब कि मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर और मदीना पब्लिशिंग कम्पनी कराची के नुस्ख़े में "لُحْتَ" है। इ़ल्मिय्या

जानो जहाने मसीह़ दाद कि दिल है जरीह़
नब्ज़ें छुटीं दम चला तुम पे करोरों दुरूद

उफ़ वोह रहे संग-लाख़ आह येह पा शाख़ शाख़ (خ)
ऐ मेरे मुश्किल कुशा तुम पे करोरों दुरूद

तुम से खुला बाबे जूद तुम से है सब का वुजूद (د)
तुम से है सब की बक़ा तुम पे करोरों दुरूद

ख़स्ता हूं और तुम मआ़ज़ बस्ता हूं और तुम मलाज़ (ذ)
आगे जो शह की रिज़ा तुम पे करोरों दुरूद

गर्चे हैं बेह़द क़ुसूर तुम हो अ़फ़ुव्वो ग़फ़ूर (ر)
बख़्श दो जुर्मो ख़त़ा तुम पे करोरों दुरूद

मेह्रे ख़ुदा नूर नूर दिल है सियह दिन है दूर
शब में करो चांदना तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो शहीदो बसीर और मैं गुनह पर दिलीर
खोल दो चश्मे ह़या तुम पे करोरों दुरूद

छींट तुम्हारी सह़र छूट तुम्हारी क़मर
दिल में रचा दो ज़िया तुम पे करोरों दुरूद

तुम से खुदा का ज़ुहूर उस से तुम्हारा ज़हूर
لِمْ है येह वोह اِنْ हुवा तुम पे करोरों दुरूद

बे हु–नरो बे तमीज़ किस को हुए हैं अज़ीज़
एक तुम्हारे सिवा तुम पे करोरों दुरूद (ز)

आस है कोई न पास एक तुम्हारी है आस
बस है येही आसरा तुम पे करोरों दुरूद (س)

ता–रमे आ'ला का अ़र्श जिस कफ़े पा का है फ़र्श
आंखों पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद (ش)

कहने को हैं आ़मो ख़ास एक तुम्हीं हो ख़लास
बन्द से कर दो रिहा तुम पे करोरों दुरूद (ص)

तुम हो शिफ़ाए मरज़ ख़ल्के खुदा खुद ग़रज़
ख़ल्क़ की ह़ाजत भी क्या तुम पे करोरों दुरूद (ض)

आह वोह राहे सिरात़ बन्दों की कितनी बिसात़
अल मदद ऐ रहनुमा तुम पे करोरों दुरूद (ط)

बे अ–दबो बद लिहाज़ कर न सका कुछ हिफ़ाज़ (ظ)
अफ़्व पे भूला रहा तुम पे करोरों दुरूद

लो तहे दामन कि शम्अ झोंकों में है रोज़े जम्अ (ع)
आंधियों से ह़श्र उठा तुम पे करोरों दुरूद

सीना कि है दाग़ दाग़ कह दो करे बाग़ बाग़ (غ)
त़यबा से आ कर सबा तुम पे करोरों दुरूद

गेसू–ओ क़द लाम अलिफ़ कर दो बला मुन्सरिफ़ (ف)
ला के तहे तैग़े لا तुम पे करोरों दुरूद

तुम ने ब रंगे फ़लक़ जैबे जहां कर के शक़ (ق)
नूर का तड़का किया तुम पे करोरों दुरूद

नौबते दर हैं फ़लक ख़ादिमे दर हैं मलक (ک)
तुम हो जहां–बादशा तुम पे करोरों दुरूद

ख़ि़ल्क़ तुम्हारी जमील ख़ुल्क़ तुम्हारा जलील (ل)
ख़ल्क़ तुम्हारी गदा तुम पे करोरों दुरूद

त़यबा के माहे तमाम जुम्ला रुसुल के इमाम (م)
नौ शहे मुल्के ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद

तुम से जहां का निज़ाम तुम पे करोरों सलाम
तुम पे करोरों सना तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो जवादो करीम तुम हो रऊफ़ो रहीम
भीक हो दाता अ़ता तुम पे करोरों दुरूद

ख़ल्क़ के ह़ाकिम हो तुम रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद

नाफ़ेओ़ दाफ़ेअ़ हो तुम शाफेओ़ राफ़ेअ़ हो तुम
तुम से बस अफ़्ज़ूं ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद

शाफ़ियो नाफ़ी हो तुम काफ़ियो वाफ़ी हो तुम
दर्द को कर दो दवा तुम पे करोरों दुरूद

जाएं न जब तक गु़लाम ख़ुल्द है सब पर ह़राम
मिल्क तो है आप का तुम पे करोरों दुरूद

मज़्हरे ह़क़ हो तुम्हीं मुज़्हिरे ह़क़ हो तुम्हीं
तुम में है ज़ाहिर ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद (ن)

ज़ोर दिहे ना-रसां तक्या गहे बे-कसां
बाद्शहे मा वरा तुम पे करोरों दुरूद

बरसे करम की भरन फूलें निअ़म के चमन
ऐसी चला दो हवा तुम पे करोरों दुरूद

इक त़रफ़ आ'दाए दीं एक त़रफ़ ह़ासिदीं[1]
बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोरों दुरूद

क्यूं कहूं बेकस हूं मैं क्यूं कहूं बेबस हूं मैं
तुम हो मैं तुम पर फ़िदा तुम पे करोरों दुरूद

गन्दे निकम्मे कमीन महंगे हों कोड़ी के तीन
कौन हमें पालता तुम पे करोरों दुरूद

बाट न दर के कहीं घाट न घर के कहीं
ऐसे तुम्हीं पालना तुम पे करोरों दुरूद

ऐसों को ने'मत खिलाओ दूध के शरबत पिलाओ
ऐसों को ऐसी ग़िज़ा तुम पे करोरों दुरूद

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्खे़ में येह शे'र मौजूद नहीं जब कि मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर और मदीना पब्लिशिंग कम्पनी कराची के नुस्खे़ में मज़्कूर है। इ़ल्मिय्या

गिरने को हूं रोक लो ग़ोता लगे हाथ दो
ऐसों पर ऐसी अ़ता तुम पे करोरों दुरूद

अपने ख़ता़वारों को अपने ही दामन में लो
कौन करे येह भला तुम पे करोरों दुरूद

कर के तुम्हारे गुनाह मांगें तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोरों दुरूद (٥)

कर दो अ़दू को तबाह ह़ासिदों को रू बराह
अहले विला का भला तुम पे करोरों दुरूद

हम ने ख़ता में न की तुम ने अ़ता में न की
कोई कमी सरवरा तुम पे करोरों दुरूद (٦)

काम ग़ज़ब के किये उस पे है सरकार से
बन्दों को चश्मे रिज़ा तुम पे करोरों दुरूद (ے)

आंख अ़ता कीजिये उस में ज़िया दीजिये
जल्वा क़रीब आ गया तुम पे करोरों दुरूद

काम वोह ले लीजिये तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

زِ عکسَت ماہِ تاباں آفرِیدَند

زِ عکست ماہِ تاباں آفرِیدَند
زِ بُوۓ تو گُلستاں آفریدند

نہ از بہرِ تو صرف اِیمانیانَند
کہ خود بہرِ تو ایماں آفریدند

صَبا رامَست از بُوئَیت بہر سو
چُناں اُفتاں وخیزاں آفریدند

برائے جَلوہ ٔ یک گُلبُنِ ناز
ہزاراں باغ و بُستاں آفریدند

زِ مُہرِ تو مِثالے بَر گرِفتَند
و زاں مُہرِ سلیماں آفریدند

چُو اَنگُشتِ تو شُد جَولاں دِہِ بَرق
قمر را بہرِ قرباں آفریدند

زِ لَعلِ نُوش خَندِ جانفَزایَت
زُلالِ آبِ حیواں آفریدند

نہ غیرِ کبریا جان آفرِینے
نہ خود مثلِ تو جاناں آفریدند

پئے نَظّارہ ٔ محبوبِ لاہُوت
جَبِینَت آئنہ ساں آفریدند

بِنا کردَند تا قصرِ رِسالت
تُرا شمعِ شَبستاں آفریدند

زِ مُہر و چَرخ بہرِ خوانِ جُودَت
عجب قُرص و نمکداں آفریدند

زِ حسنَت تا بہارِ تازہ گل کرد
رضایَت را غزل خواں آفریدند

❁❁❁❁❁

وظیفۂ قادریہ

١٣٢١ھ

سَقَانِی الْحُبُّ کَاْسَاتِ الْوِصَالِ
فَقُلْتُ لِخُمْرَتِیْ نَحْوِیْ تَعَالِ

داد عشقم جامِ وصلِ کبریا
پس بگفتم بادہ ام را سُویم آ

اَلصَّلا اے فضلہ خورانِ حضور
شاہ بر جُود ست و صہبا در وُفور
بخش گردن گر نہ عزمِ خسروی ست
آخر ایں نوشیدہ خواندن بہرِ چیست

سَعَتْ وَ مَشَتْ لِنَحْوِیْ فِیْ کُئُوْسٍ
فَهِمْتُ لِسُکْرَتِیْ بَیْنَ الْمَوَالِیْ

شُد دواں در جامہا سُویم رواں
والہِ سُکرم شُدم در سروراں

شکرِ تو از ذکر و فکر اکبر بود
سُکر کو چوں حکم خود بر می رود

سوئے مَے بر بوئے مے مَرداں رَواں
بادَہ خود سُویَت بپائے سَر دَواں

فَقُلْتُ لِسَآئِرِ الْاَقْطَاب لُمُّوْا
بِحَالِیْ وَادْخُلُوْا اَنْتُمْ رِجَالِیْ

گُفتَم اے قُطباں بعونِ شانِ مَن
جُملہ دَرآئید تاں مَردانِ من

جمع خواندِی تا قَوِی دِلہا شَوَند
ہم زِ عَونِ حالِ خود دادِی کَمَند

ورنہ تا بامِ حضورِ تو صُعود
حَاشَ لِلّٰہ تاب و یارائے کہ بُود

وَ ھُمُّوْا وَ اشْرَبُوْا اَنْتُمْ جُنُوْدِیْ
فَسَاقِی الْقَوْمِ بِالْوَافِیْ مَلَالِیْ

ہمّت آرید و خُورید اے لَشکَرم
ساقیم دادَہ لَبالَب از کرم

شکرِ حق جامِ تو لبریز مَے ست
ہر لَبالَب را چکیدَن دَرپَئے سُت

تا بما ہم آیدْ اِنْشَاءَ الْعَظِیْم
آں نصِیبُ الْاَرْض مِنْ کَاسِ الْکَرِیْم

شَرِبْتُمْ فُضْلَتِی مِنْ بَعْدِ سُکْرِیْ
وَ لَا نِلْتُمْ عُلُوِّیْ وَ اتِّصَالِ

مَن شُدَم سَرشار و سُورَم می چشید
رَخت تا قُرب و عُلُوَّم کے کشید

فُضلہ خورانش شہان و مَن گدائے
روئے آنَم گو کہ خواہم قطرہ لائے

یَلّلے جودِ شہم گُفتہ ملائے
مے طلب لا نَشِنَوی ایں جا نہ لائے

مَقَامُکُمْ الْعُلٰی جَمْعًا وَ لٰکِنْ
مَقَامِیْ فَوْقَکُمْ مَازَالَ عَالِیْ

جاے تاں بالا و لے جایم بوَدْ
فوقِ تاں از روزِ اوّل تا ابد

جاث بالاتر زِ وہمِ جائہا
جائہا خود ہست بہرِ پائہا

پائہا چہ بود کہ سرہا زیرِ پاث
پات ہم کے چوں فرود آئی زِ جاث

جات
بالاتر ز وہم
ہم کے چوں فرود آئی ز
صنعت اتصال تربیعی

اَنَا فِیْ حَضْرَۃِ التَّقْرِیْبِ وَحْدِیْ
یُصَرِّفُنِیْ وَ حَسْبِیْ ذُوالْجَلَالِ

یکّہ در قُربم خُدا گرداندم
حال و کافی آں جلیل واحِدم

اَیکِہ می گرداندت آں یک نہ غیر
حالِ ما گرداں زِ شَرہا سوئے خیر

تاجِ قُربش شادماں بر سر بنہ
شَیْءً لِلّٰہ قُربِ خود ما را بِدِہ

اَنَا الْبَازِیُّ اَشْھَبُ کُلِّ شَیْخٍ
وَ مَنْ ذَا فِی الرِّجَال اُعْطِیَ مِثَالِ

بازِ اَشہب ما و شیخاں چوں حَمام
کیُسْت در مَرداں کہ چوں مَن یافت کام

حَبَّذا شہبازِ طَیرستانِ قُدس
اے شکارِ پنجہ اَت مُرغانِ قُدس

شادماں بر قُمری کوتر بزن
گہ نگہ بر خستہ چُغدے ہم فِگن

کَسَانِیْ خِلْعَۃً بِطِرَازِ عَزْمٍ
وَ تَوَّجَنِیْ بِتِیْجَانِ الْکَمَالٖ

خِلعتم با خوش نگارِ عَزم داد
بر سَرم صَد تاجِ دارائی نِہاد

یا رَب ایں خِلعَتِ ہُمایوں تا نُشُور
حُلّہ پُوشا یک نظر بر مُشتِ عُوْر

تاج را از فرقِ خود معراج دِہ
بر سرم از خاکِ راہت تاج نِہ

وَ اَطْلَعَنِیْ عَلٰی سِرٍّ قَدِیْمٍ
وَ قَلَّدَنِیْ وَ اَعْطَانِیْ سُؤَالِیْ

آ گَہَم فرمود بر رازِ قدیم
عُہدہ داد و جُملہ کامَم آں کریم

عہدہ از تو عَہد از تو ما زِ تو
ما بظِلِّ نعمت و ہم نازِ تو

یَلّلے وَخ وَخ زمانِ خُرمی سْت
سوئے ما شُد شَحنہ حالا تَرس کیسْت

وَ وَلَّانِیْ عَلَی الْاَقْطَاب جَمْعًا
فَحُکْمِیْ نَافِذٌ فِیْ کُلِّ حَالٍ

والیم گردَہ برٰ اَقطابِ جہاں
پس بہر حال سْت حکمِ من رَواں

از ثُریا تا ثَرٰے اَمرت امیر
کَج رُوے بے حکم را در حکم گیر

پیش ازاں کافتد سوئے آتش نیاز
نرم نرم از دستِ لُطفت راست ساز

فَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فِیْ بحَارٍ
لَصَارَ الْکُلُّ غَوْرًا فِی الزَّوَالِ

رازِ خود گر اَفگَنم اندر بحار
جملہ گم گردَد فِرو رَفتہ بغار

نفس و شیطاں نَزعِ جاں گور و نُشور
نامہ خواندن بر سرِ خنجر عُبور

ناخدایا ہفت دریا در رَہم
دست گیر اے یم زِ رازَت کم زَنم

وَ لَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فِیْ جبَالٍ
لَدُکَّتْ وَاخْتَفَتْ بَیْنَ الرِّمَالِ

رازم ار جلوہ دِہَم گردَد جِبال
پارہ پارہ گشتہ پنہاں در رِمال

اے زِ رازَت کوہِ کاہ و کاہِ کوہ
کاہِ بے جاں راست سدِّ راہ کوہ

طاعتم کاہ است جرمم کوہ وار
کوہ را کاہ و پرور کاہ زار

وَ لَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فَوْقَ نَارٍ
لَخَمَدَتْ وَ انْطَفَتْ مِنْ سِرِّ حَالِیْ

پرتوِ راز اَفگنم گر بر اثیر
سرد و خامُش گردد از رازم سعیر

نیّرا من نارِ جرم افروختم
ہم دلِ زارم درونش سوختم

زارِ من از زور با خود نوش کن
نارِ من از نور خود خاموش کن

وَ لَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فَوْقَ مَیْتٍ
لَقَامَ بِقُدْرَۃِ الْمَوْلٰی تَعَالٰی

رازِ خود بر مردہ گر اَفگنم
زندہ برخیزد باِذنِ ذُوالکرم

اے نگاہت زندہ ساز مُردہا
چیست پیشت در دلِ افسُردہا

ایں لَبانَت شہد بار جلوہ کن
قُم بفرما مردہ ام را زندہ کن

وَ مَا مِنْهَا شُهُورٌ اَوْ دُهُورٌ
تَمُرُّ وَ تَنْقَضِيْ اِلَّا اَتَالِيْ

نیست شہرے نیست دَہرے را مُرُور
تا نَیاید بر دَرَم پیش از ظُہور

اے درِ تو مرجعِ ہر دَہر و شہر
بَنْدَگانَت را چہ تَرس از دستِ دہر

ہر مہِ عُمرم کُن از مِہرَت بخیر
خیرِ محضا من نہ بِیْنَم ہیچ ضَیر

وَ تُخْبِرُنِيْ بِمَا يَاْتِيْ وَ تَجْرِيْ
وَ تُعْلِمُنِيْ فَاَقْصِرْ عَنْ جِدَالِيْ

جملہ گویَد با من از حال و صفت
از جِدالَم دست کوتہ بایَدَت

اَوْحَشَ اللّٰہ زیبَد ایں شہ را جلال
عرض بیگیِ درِ او ماہ و سال

در جدالش کے کجا یابی اماں
خود کنیز او زمیں بندہ زماں

مُرِیْدِیْ ھِمْ وَ طِبْ وَ اشْطَحْ وَغَنِّ
وَ افْعَلْ مَا تَشَآءُ فَالْاِسْمُ عَالٍ

بندہ ام خوش می سرا بیباک و مست
ہر چہ خواہی کن کہ نسبت برتر است

ایں سخن را بندہ باید بندہ گو
بندہ کن اے بادشاہ بندہ جو

شاد و پا کوباں رود جانم زِ تن
بر مُرِیْدِیْ ھِمْ وَ طِبْ وَ اشْطَحْ وَغَن

مُرِیْدِیْ لَا تَخَفْ اَللّٰهُ رَبِّیْ
عَطَانِیْ رِفْعَةً نِلْتُ الْمَنَالِ

ربِ من حق بندہ از ترسے منال
رِفتم آمد رسیدم تا منال

اے ترا اللہ رب محبوب اَب
طُرفہ مربوبی و محبوبی عجب

رب و اَب پاکت نمود از ریب و عیب
از دِلم برکش شہا ہر عیب و ریب

مُرِیْدِیْ لَاتَخَفْ وَاشِ فَاِنِّیْ
عَزُوْمٌ قَاتِلٌ عِنْدَ الْقِتَالِ

بندہ ام ترسے مدار از بد سگال
سخت عزم و قاتلم وقتِ قتال

شکر حق با بندگاں شہ را سرشت
خانہ زادیم زِ اَبّ و مادرشت

بندہ اَت را دشمناں دانند خس
یَا عَزُوْمًا قَاتِلًا فریاد رس

طَبُوْلِیْ فِی السَّمَاءِ وَالْاَرْض دُقَّتْ
وَ شَاؤُسُ السَّعَادۃِ قَدْ بَدَالِیْ

نوبتم در خضری و غبرا زدند!
شد نقیب موکبم بختِ بلند

یا رب ایں شہ را مبارک دیر باز
تخت و بخت و تاج و باج و ساز و ناز

بادشاہا شکرِ سلطانیِ خویش
یک نگاہے بر گدائے سینہ ریش

بِلَادُ اللّٰہِ مُلْکِیْ تَحْتَ حُکْمِیْ
وَ وَقْتِیْ قَبْلَ قَلْبِیْ قَدْ صَفَالِی

ملکِ حق مُلکم تہِ فرمانِ من
وقتِ من شد صاف پیش از جانِ من

بَارَکَ اللّٰہ وسعتِ سُلطانِ تو
شَرق تا غَرب آنِ تو قربانِ تو

تِیرہ وقتے خِیرہ بختے سینہ رِیش
بر در آمد دِہ زکوٰۃِ وقتِ خویش

نَظَرْتُ اِلٰی بِلَادِ اللّٰہِ جَمْعًا
کَخَرْدَلَۃٍ عَلٰی حُکْمِ اتِّصَال

در نگاہم جملہ مُلکِ ذوالجلال
دانۂ خَردل ساں بَحُکمِ اِتصال

وَہ کہ تو می بینی و ما در گُناہ
آہ آہ از کُوریِ ما آہ آہ

چشم دِہ تا زیں بلاہا وارہیم
رُوئے تو بینیم و بر پا جاں دِہیم

وَ کُلُّ وَلِیٍّ لَّہٗ قَدَمٌ وَّ اِنِّیْ
عَلٰی قَدَمِ النَّبِیِّ بَدْرِ الْکَمَالِ

ہر ولی را یک قدم دادند و ما
بر قدمہائے نبی بدرُ العُلٰے

کام جانہا تو بگامِ مصطفٰے
حَیف بر خُطواتِ دیو آئیم ما

گام بر گام سگے ما را مَبیں
دست دِہ بَرکش سوئے راہ مبیں

دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا
وَ نِلْتُ السَّعْدَ مِنْ مَّوْلَی الْمَوَالِیْ

درس کردم علم تا قُطبے شُدم
گرد مولائے مَوالی اَسعدم

اے سعیدِ بو سعید سعدِ دیں
سعدِ چَرخت بندہ اے سعدِ زمیں

نے ہمیں سَعْدی کہ شاہا سَعد کن
سَعد کن ناسعد ما را سعد کن

رِجَالِیْ فِیْ هَوَاجِرِهِمْ صِیَامٌ
وَ فِیْ ظُلَمِ اللَّیَالِیْ کَالَّلاٰلِ

در تموزِ روز ہیشم روزہ دار
در شبِ تیرہ چو گوہر نور بار

کارِ مَردانَت صیام ست و قیام
کامِ ما در خوردِ بام و خوابِ شام

مَرد کن یا خاکِ راہت کن شتاب
ایں بہائم را چناں گو کن تُراب

اَنَا الْحَسَنِیْ وَ الْمِخْدَعْ مَقَامِیْ
وَ اَقْدَامِیْ عَلٰی عُنُقِ الرِّجَالِ

از حسن نسلِ من و مخدع مقام
پائے من بر گردنِ جملہ کِرام

سَرْوَرا ما ہم بَراہ اُفتادہ ایم
پائمالت را سَرے بنہادہ ایم

گل براہا یک قدم گل کم بداں
حِسْبَۃً لِّلّٰہ مر و دامن کشاں

اَنَا الْجِیْلِیْ مُحیُّ الدِّیْن اِسْمِیْ
وَاعْلَامِیْ عَلٰی رَأسِ الْجِبَالِ

مَولدَم جیلاں و نامَم مُحیِ دیں
رایتم بر قلہائے کوہ بیں

اے ز آیاتِ خدا رایاتِ تو
معجزاتِ مصطفٰے آیاتِ تو

جلوہ دِہ از رایتت ایں آیتت
چوں مَنی مَحشور زیرِ رایتت

وَ عَبْدُ الْقَادِرِ الْمَشْھُوْرُ اِسْمِیْ
وَ جَدِّیْ صَاحِبُ الْعَیْنِ الْکَمَالِ

نام مشہور است عبدالقادرم
عینِ ہر فضل آنکہ جدِّ اکبرم

آنِ جدّت چوں نباشد آنِ تو
وارثی اے جانِ من قربانِ تو

بر رضائے ناقصت افشاں نوال
یک چشیدن آبے از بحرُ الکمال

خفتہ دل تا چند تنگِ زیستن
بر رُخش از بحرِ فضل آبے بزن

تشنہ کامے پا بدامے گردہ غش
بحرِ سائل را بگو خود رو برش

رو برش اُو را برش بیدار ساز
ہوش بخش و نُوش بخش و جاں نواز

جاں نوازا ! جاں فدائے نامِ تو
کامِ جاں دِہ اے جہاں در کامِ تو

ایں دُعا از بندہ آمیں از مَلک
پُوزِش از بغداد اِجابت از فَلک

ترنّم عندلیبِ قلم برشاخسارِ مدحِ اکرم حضور پیرو مرشدِ برحق علیہ رضوان الحق

خوشا دِلے کہ دِہندَش ولائے آلِ رسول
خوشا سَرے کہ کُنِندَش فدائے آلِ رسول

گناہِ بندہ بِبَخْش اے خدائے آلِ رسول
برائے آلِ رسول از برائے آلِ رسول

ہزار دُرجِ سَعادت برآرد از صَدفے
بہائے ہر گہرِ بے بہائے آلِ رسول

سِیَہ سَپید نہ شُد گر رشید مِصرَش داد
سیہ سپید کہ سازَد عطائے آلِ رسول

اِذَا رُءُوْا ذُکِرَ اللہ معائنہ بینی
مَن و خدائے من آنست ادائے آلِ رسول

خبر دِہد ز تگِ لَآ اِلٰہ اِلَّا اللّٰہ
فنائے آلِ رسول و بقائے آلِ رسول

ہزار مہر پَرَد در ہوائے او چو ہَبا
بَرُوزَنے کہ دَرَخشَد ضیائے آلِ رسول

نصیبِ پَست نشیناں بلندیئست ایں جا
تواضع ست دُرِ مُرتقائے آلِ رسول

برآ بہ چرخِ برین و ببیں ستانۂ او
گرا بہ خاک و بیا بر سمائے آلِ رسول

قبائے شہ بگلیمِ سیاہ خود نخرد
سیہ گلیم نباشَد گدائے آلِ رسول

دوائے تلخ مَخور شہد نوش و مژدہ نیوش
بیا مریض بَدارُ الشفائے آلِ رسول

ہمیں نہ از سر افسر کہ ہم زِ سر برخاست
نشست ہر کہ بفرقش ہمائے آلِ رسول

بَسحر و طعنۂ سختی زنَد بعارضِ گل
بَسنگِ صخرہ و ز دگر صَبائے آلِ رسول

دِہد ز باغِ منےٰ غنچہ ہائے زر بہ گرہ
دمِ سوال حیا و غنائے آلِ رسول

ز چرخ کانِ زرِ شرقی، مغربی آرند
بدرد مس بمس کیمیائے آلِ رسول

جَرس بصلصلہ اش آنچہ گفت راہی را
ہماں بسلسلہ آرد ورائے آلِ رسول

رسول داں شوی از نامِ او نمی بینی
دو حرفِ معرفہ در ابتدائے آلِ رسول

بخدمتش نخرد باج و تاج رنگ و فرنگ
سپید بخت سیاہ سرائے آلِ رسول

اگر شب است و خطر سخت و رہ نمی دانی
بِبَند چشم و بیا بر قفائے آلِ رسول

زِ سر نہند کلاہِ غرور مُدَّعِیاں
بجلوۂ مدد اے کفشِ پائے آلِ رسول

ہزار جامۂ سالوس را کتانی دِہ
بتاب اے مہِ جیبِ قبائے آلِ رسول

مَرو بمیکدہ کانجا سیاہ کارانند
بیا بخانقہِ نورزائے آلِ رسول

مَرو بمجلسِ فسق و فجورِ شیّاداں
بیا بانجمنِ اِتقائے آلِ رسول

مَرو بدامگہِ ایں دروغ بافاں ہیچ
بیا بجلوہ گہِ دِلکشائے آلِ رسول

ازاں بانجمنِ پاک سبز پوشاں رفت
کہ سبز بود دراں بزم جائے آلِ رسول

شِکست شیشہ ہجر و پری بشیشہ ہنوز
زِ دل نمی رود آں جلوہ ہائے آلِ رسول

شہیدِ عشق نمیرد کہ جاں بجاناں داد
تو مُردی ایکہ جدائی زِ پائے آلِ رسول

بگو کہ وائے من و وائے مردہ ماندنِ من
مَنال ہَرزہ کہ ہَیہات وائے آلِ رسول

کہ می برد زِ مریضانِ تلخ کام نیاز
بعہد شہد فروشِ بقائے آلِ رسول

صَبا سلامِ اسیرانِ بستہ بال رساں
بطائرانِ ھوا و فضائے آلِ رسول

خطا مکن دلکا؟ پردہ ایست دوری نیست
بگوش می خورد اکنوں صدائے آلِ رسول

مگو کہ دیدہ گری و غبار دیدہ بخند
بکارِ تست کنوں توتیائے آلِ رسول

مَپیچ در غمِ عیّارگانِ ذنب شعار
اگر ادب نکنند از برائے آلِ رسول

ہر آنکہ نِکش کند نکش بہرِ نفسِ وَیست
غنی ست حضرتِ چرخ اِعتلائے آلِ رسول

سپاس کن کہ بپاس و سپاسِ بدمنشاں
نیاز و ناز ندارد ثنائے آلِ رسول

نہ سگ بشور و نہ شپّر بخامُشی کاہد
زِ قدرِ بدر و ضیائے ذُکائے آلِ رسول

تواضعِ شہِ مسکیں نواز را نازم
کہ ہمچو بندہ کند بوس پائے آلِ رسول

منم امیرِ جہانگیر کج کلہ یعنی
کمینہ بندہ و مسکیں گدائے آلِ رسول

اگر مثالِ خلافت دِہد فقیرے را
عجب مَدار زِ فیض و سخائے آلِ رسول

مگیر خُردہ کہ آں کس نہ اہلِ ایں کار اَست
کہ داند اہلِ نمودن عطائے آلِ رسول

''ببیں تفاوتِ رہ از کُجا ست تا بکجا''
تبارکَ اللّٰہ ما و ثنائے آلِ رسول

مَرا زِ نسبتِ مَلکَ اَست اُمید آنکہ بہ حشر
ندا کُنند بیا اے رضائے آلِ رسول

सख़ावते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी साइल के जवाब में ख़्वाह वोह कितनी ही बड़ी चीज़ का सुवाल क्यूं न करे "لَا" (नहीं) का लफ़्ज़ नहीं फ़रमाया। (الشفاء، ج۱،ص۱۱۱)

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

मेहरे चर्खे़ नुबुव्वत पे रोशन दुरूद
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम

शह्र-यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफ़ाअत पे लाखों सलाम

शबे असरा के दूल्हा पे दाइम दुरूद
नौशए बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम

अर्श की ज़ैबो ज़ीनत पे अर्शी दुरूद
फ़र्श की तीबो नुज़्हत पे लाखों सलाम

नूरे ऐने लताफ़त पे अल्तफ़ दुरूद
ज़ैबो ज़ैने नज़ाफ़त पे लाखों सलाम

सर्वे नाज़े क़िदम मग़्ज़े राज़े हिकम
यक्का ताज़े फ़ज़ीलत पे लाखों सलाम

नुक्त़ए सिर्रे वहूदत पे यक्ता दुरूद
मर्कज़े दौरे कसरत पे लाखों सलाम

साहिबे रज्अ़ते शम्सो शक़्क़ुल क़मर
नाइबे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

जिस के ज़ेरे लिवा आदमो मन सिवा
उस सज़ाए सियादत पे लाखों सलाम

अ़र्श ता फ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं
उस की क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

अस्ले हर बूदो बहबूद तुख़्मे वुजूद
क़ासिमे कन्ज़े ने'मत पे लाखों सलाम

फ़त्हे बाबे नुबुव्वत पे बेहद दुरूद
ख़त्मे दौरे रिसालत पे लाखों सलाम

शर्क़े अन्वारे क़ुदरत पे नूरी दुरूद
फ़त्क़े अज़्हारे क़ुरबत पे लाखों सलाम

बे सहीमो क़सीमो अ़दीलो मसील
जौहरे फ़र्दे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम

सिर्रे ग़ैबे हिदायत पे ग़ैबी दुरूद
इत्रे जैबे निहायत पे लाखों सलाम

माहे लाहूते ख़ल्वत पे लाखों दुरूद
शाहे नासूते जल्वत पे लाखों सलाम

कन्ज़े हर बे-कसो बे नवा पर दुरूद
ह़िर्ज़े हर रफ़्ता ताक़त पे लाखों सलाम

पर-तवे इस्मे ज़ाते अह़द पर दुरूद
नुस्ख़ए जामिइय्यत पे लाखों सलाम

मत्लए हर सआ़दत पे अस्अ़द दुरूद
मक़्तए हर सियादत पे लाखों सलाम

ख़ल्क़ के दाद-रस सब के फ़रियाद-रस
कहफ़े रोज़े मुसीबत पे लाखों सलाम

मुझ से बेकस की दौलत पे लाखों दुरूद
मुझ से बेबस की कुव्वत पे लाखों सलाम

शम्ए़ बज़्मे دَنٰی هُو में गुम کُن اَنَا
शर्हे़ मत्ने हुविय्यत पे लाखों सलाम

इन्तिहाए दुई इब्तिदाए यकी
जम्ए़ तफ़्रीक़ो कसरत पे लाखों सलाम

कस्रते बा'दे क़िल्लत पे अक्सर दुरूद
इ़ज़्ज़ते बा'दे ज़िल्लत पे लाखों सलाम

रब्बे आ'ला की ने'मत पे आ'ला दुरूद
ह़क़ तआ़ला की मिन्नत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेह़द दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

फ़रह़ते जाने मोमिन पे बेह़द दुरूद
ग़ैज़े क़ल्बे ज़लालत पे लाखों सलाम

सबबे हर सबब मुन्तहाए त़लब
इ़ल्लते जुम्ला इ़ल्लत पे लाखों सलाम

मस्दरे मज़्हरिय्यत पे अज़्हर दुरूद
मज़्हरे मस्दरिय्यत पे लाखों सलाम

जिस के जल्वे से मुरझाई कलियां खिलें
उस गुले पाक मम्बत पे लाखों सलाम

क़द्दे बे साया के सायए मर्हमत
ज़िल्ले मम्दूदे राफ़त पे लाखों सलाम

ताइराने कुदुस जिस की हैं कुमरियां
उस सही सर्व क़ामत पे लाखों सलाम

वस्फ़ जिस का है आईनए हक़नुमा
उस खुदा साज़ तल्अत पे लाखों सलाम

जिस के आगे सरे सरवरां ख़म रहें
उस सरे ताजे रिफ़्अत पे लाखों सलाम

वोह करम की घटा गेसूए मुश्क-सा
लक्कए अब्रे राफ़त पे लाखों सलाम

لَيْلَةُ الْقَدْر में مَطْلَعِ الْفَجْر हक़
मांग की इस्तिक़ामत पे लाखों सलाम

लख़्त लख़्ते दिले हर जिगर चाक से
शाना करने की हालत पे लाखों सलाम

दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वोह कान
काने ला'ले करामत पे लाखों सलाम

चश्मए मेह्र में मौजे नूरे जलाल
उस रगे हाशिमिय्यत पे लाखों सलाम

जिस के माथे शफ़ाअ़त का सेहरा रहा
उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम

जिन के सज्दे को मेह़राबे का'बा झुकी
उन भवों की लत़ाफ़त पे लाखों सलाम

उन की आंखों पे वोह साया अफ़्गन मुज़ह
ज़ुल्लए क़स्रे रह़मत पे लाखों सलाम

अश्क बारिये मुज़्गां पे बरसे दुरूद
सिल्के दुर्रे शफ़ाअ़त पे लाखों सलाम

मा'निये قَدْ رَاٰی मक़्सदे ما طغٰی
नरगिसे बाग़े क़ुदरत पे लाखों सलाम

जिस त़रफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इ़नायत पे लाखों सलाम

नीची आंखों की शर्मो ह़या पर दुरूद
ऊंची बीनी की रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

जिन के आगे चराग़े क़मर झिल-मिलाए
उन इ़ज़ारों की त़ल्अ़त पे लाखों सलाम

उन के ख़द की सुहूलत पे बेह़द दुरूद
उन के क़द की रशाक़त पे लाखों सलाम

जिस से तारीक दिल जग-मगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

चांद से मुंह पे ताबां दरख़्शां दुरूद
नमक-आगीं सबाह़त पे लाखों सलाम

शबनमे बाग़े ह़क़ या'नी रुख़ का अ़रक़
उस की सच्ची बराक़त पे लाखों सलाम

ख़त़ की गिर्दे दहन वोह दिलआरा फबन
सब्ज़ए नहरे रह़मत पे लाखों सलाम

रीशे ख़ुश मो'तदिल मर्ह़मे रैशे दिल
हालए माहे नुदरत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले कुद्स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

वोह दहन जिस की हर बात वह्ये खुदा
चश्मए इल्मो हिक्मत पे लाखों सलाम

जिस के पानी से शादाब जानो जिनां
उस दहन की त़रावत पे लाखों सलाम

जिस से खारी कूंएं शीरए जां बने
उस ज़ुलाले ह़लावत पे लाखों सलाम

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

उस की प्यारी फ़साह़त पे बेह़द दुरूद
उस की दिलकश बलाग़त पे लाखों सलाम

उस की बातों की लज़्ज़त पे लाखों दुरूद
उस के खुत़्बे की हैबत पे लाखों सलाम

वोह दुआ जिस का जोबन बहारे क़बूल
उस नसीमे इजाबत पे लाखों सलाम

जिन के गुच्छे से लच्छे झड़ें नूर के
उन सितारों की नुज़्हत पे लाखों सलाम

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

जिस में नहरें हैं शीरो शकर की रवां
उस गले की नज़ारत पे लाखों सलाम

दोश बर दोश है जिन से शाने शरफ़
ऐसे शानों की शौकत पे लाखों सलाम

ह़-जरे अस्वदे का'बए जानो दिल
या'नी मोहरे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

रूए आईनए इ़ल्म पुश्ते हुज़ूर
पुश्तिये क़स्रे मिल्लत पे लाखों सलाम

हाथ जिस सम्त उठ्ठा ग़नी कर दिया
मौजे बह़्रे समाह़त पे लाखों सलाम

जिस को बारे दो आ़लम की परवा नहीं
ऐसे बाज़ू की क़ुव्वत पे लाखों सलाम

का'बए दीनो ईमां के दोनों सुतूं
साइदैने रिसालत पे लाखों सलाम

जिस के हर ख़त़ में है मौजे नूरे करम
उस कफ़े बह़रे हिम्मत पे लाखों सलाम

नूर के चश्मे लहराएं दरिया बहें
उंग्लियों की करामत पे लाखों सलाम

ईदे मुश्किल कुशाई के चमके हिलाल
नाख़ुनों की बिशारत पे लाखों सलाम

रफ़्ए ज़िक्रे जलालत पे अरफ़अ़ दुरूद
शर्ह़े सद्रे सदारत पे लाखों सलाम

दिल समझ से वरा है मगर यूं कहूं
ग़ुन्चए राज़े वह़दत पे लाखों सलाम

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

जो कि अ़ज़्मे शफ़ाअ़त पे खिंच कर बंधी
उस कमर की ह़िमायत पे लाखों सलाम

अम्बिया तह करें ज़ानू उन के हुज़ूर
ज़ानूओं की वजाहत पे लाखों सलाम

साके अस्ले क़दम शाखे नख़्ले करम
शम्ए राहे इसाबत पे लाखों सलाम

खाई कुरआं ने खाके गुज़र की क़सम
उस कफ़े पा की हुरमत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चमका तयबा का चांद
उस दिल अफ़रोज़ साअत पे लाखों सलाम

पहले सज्दे पे रोज़े अज़ल से दुरूद
यादगारिये उम्मत पे लाखों सलाम

ज़रए शादाबो हर ज़रए पुर-शीर से
ब-रकाते रज़ाअत पे लाखों सलाम

भाइयों के लिये तर्क पिस्तां करें
दूध पीतों की निस्फ़त पे लाखों सलाम

महदे वाला की क़िस्मत पे सदहा दुरूद
बुर्जे माहे रिसालत पे लाखों सलाम

अल्लाह अल्लाह वोह बचपने की फबन !
उस खुदा भाती सूरत पे लाखों सलाम

उठते बूटों की नश्वो नुमा पर दुरूद
खिलते गुन्चों की नक्हत पे लाखों सलाम

फ़ज़्ले पैदाइशी पर हमेशा दुरूद
खेलने से कराहत पे लाखों सलाम

ए'तिलाए जिबिल्लत पे आ़ली दुरूद
ए'तिदाले त़विय्यत पे लाखों सलाम

बे बनावट अदा पर हज़ारों दुरूद
बे तकल्लुफ़ मलाह़त पे लाखों सलाम

भीनी भीनी महक पर महक्ती दुरूद
प्यारी प्यारी नफ़ासत पे लाखों सलाम

मीठी मीठी इ़बारत पे शीरीं दुरूद
अच्छी अच्छी इशारत पे लाखों सलाम

सीधी सीधी रविश पर करोरों दुरूद
सादी सादी त़बीअ़त पे लाखों सलाम

रोज़े गर्मो शबे ती-रओ तार में
कोहो सहरा की ख़ल्वत पे लाखों सलाम

जिस के घेरे में हैं अम्बियाओ मलक
उस जहांगीर बिअ़सत पे लाखों सलाम

अन्धे शीशे झलाझल दमक्ने लगे
जल्वा रेज़िये दा'वत पे लाखों सलाम

लुत्फ़े बेदारिये शब पे बेहद दुरूद
आ़लमे ख़्वाबे राहत पे लाखों सलाम

ख़न्दए सुब्ह़े इ़शरत पे नूरी दुरूद
गिर्यए अब्रे रह़मत पे लाखों सलाम

नर्मिये ख़ूए लीनत पे दाइम दुरूद
गर्मिये शाने सत्वत पे लाखों सलाम

जिस के आगे खिंची गरदनें झुक गईं
उस ख़ुदादाद शौकत पे लाखों सलाम

किस को देखा येह मूसा से पूछे कोई
आंखों वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

गिर्दे मह दस्ते अन्जुम में रख़्शां हिलाल
बद्र की दफ़्ए ज़ुल्मत पे लाखों सलाम

शोरे तक्बीर से थर-थराती ज़मीं
जुम्बिशे जैशे नुसरत पे लाखों सलाम

ना'रहाए दिलेरां से बन गूंजते
गुर्रिशे कोसे जुरअत पे लाखों सलाम

वोह चक़ाचाक़ ख़न्जर से आती सदा
मुस्तफ़ा तेरी सौलत पे लाखों सलाम

उन के आगे वोह ह़म्ज़ा की जां बाज़ियां
शेरे गुर्राने सत़्वत पे लाखों सलाम

अल ग़रज़ उन के हर मू पे लाखों दुरूद
उन की हर ख़ू व ख़स्लत पे लाखों सलाम

उन के हर नामो निस्बत पे नामी दुरूद
उन के हर वक़्तो ह़ालत पे लाखों सलाम

उन के मौला की उन पर करोरों दुरूद
उन के अस्ह़ाबो इ़तरत पे लाखों सलाम

पारहाए सुहुफ़ गुन्चहाए कुदुस
अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम

आबे तत्हीर से जिस में पौदे जमे
उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम

ख़ूने ख़ैरुर्रुसुल से है जिन का ख़मीर
उन की बे लौस तीनत पे लाखों सलाम

उस बतूले जिगर पारए मुस्तफ़ा
हजला आराए इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

जिस का आंचल न देखा महो मेहर ने
उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

सय्यिदह ज़ाहिरा तय्यिबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

ह-सने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया
राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम

औजे मेहरे हुदा मौजे बहरे नदा
रूह रूहे सख़ावत पे लाखों सलाम

शहद ख़्वारे लुआबे ज़बाने नबी
चाश्नी गीरे इस्मत पे लाखों सलाम

उस शहीदे बला शाहे गुलगूं क़बा
बे-कसे दश्ते गुरबत पे लाखों सलाम

दुर्रे दुर्जे नजफ़ मेहरे बुर्जे शरफ़
रंगे रूए शहादत पे लाखों सलाम

अहले इस्लाम की मा-दराने शफ़ीक़
बानुवाने तहारत पे लाखों सलाम

जिलौ गिय्याने बैतुश्शरफ़ पर दुरूद
परवगिय्याने इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

सिय्यमा पहली मां कहफ़े अम्नो अमां
हक़ गुज़ारे रफ़ाक़त पे लाखों सलाम

अ़र्श से जिस पे तस्लीम नाज़िल हुई
उस सराए सलामत पे लाखों सलाम

مَنْزِلٌ مِنْ قَصَبْ لَا نَصَبْ لَا صَخَبْ
ऐसे कूश्क की ज़ीनत पे लाखों सलाम

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी
उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम

या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह
उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

जिन में रूहुल क़ुदुस बे इजाज़त न जाएं
उन सुरादिक़ की इ़स्मत पे लाखों सलाम

शम्ए़ ताबाने काशानए इज्तिहाद
मुफ़्तिये चार मिल्लत पे लाखों सलाम

जां निसाराने बद्रो उहुद पर दुरूद
ह़क़ गुज़ाराने बैअ़त पे लाखों सलाम

वोह दसों जिन को जन्नत का मुज़्दा मिला
उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

ख़ास उस साबिक़े सैरे क़ुर्बे ख़ुदा
औ-ह़दे कामिलिय्यत पे लाखों सलाम

सायए मुस्त़फ़ा मायए इस्त़फ़ा
इ़ज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

या'नी उस अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ बा'दर्रुसुल
सानि-यस्नैने हिजरत पे लाखों सलाम

अस्दकुस्सादिक़ीं सय्यिदुल मुत्तक़ीं
चश्मो गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

वोह उ़मर जिस के आ'दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त ह़ज़रत पे लाखों सलाम

फ़ारिक़े ह़क़्क़ो बाति़ल इमामुल हुदा
तैगे़ मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

तरजुमाने नबी हम-ज़बाने नबी
जाने शाने अ़दालत पे लाखों सलाम

ज़ाहिदे मस्जिदे अह़मदी पर दुरूद
दौलते जैशे उ़सरत पे लाखों सलाम

दुर्रे मन्सूर क़ुरआं की सिल्के बही
ज़ौजे दो नूर इ़फ़्फ़त पे लाखों सलाम

या'नी उ़स्मान साहि़ब क़मीसे हुदा
हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम

मुर्तज़ा शेरे ह़क़ अश्जउ़ल अश्जई़
साक़िये शीरो शरबत पे लाखों सलाम

अस्ले नस्ले सफ़ा वज्हे वस्ले ख़ुदा
बाबे फ़स्ले विलायत पे लाखों सलाम

अव्वलीं दाफ़ेए़ अहले रफ़्ज़ो ख़ुरूज
चारुमी रुक्ने मिल्लत पे लाखों सलाम

शेरे शमशीर ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
पर-तवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

माहि़ये रफ़्ज़ो तफ़्ज़ी़लो नस्बो ख़ुरूज
ह़ामिये दीनो सुन्नत पे लाखों सलाम

मोमिनीं पेशे फ़त्ह़ो पसे फ़त्ह़ सब
अहले ख़ै़रो अ़दालत पे लाखों सलाम

जिस मुसल्मां ने देखा उन्हें इक नज़र
उस नज़र की बसारत पे लाखों सलाम

जिन के दुश्मन पे ला'नत है अल्लाह की
उन सब अहले मह़ब्बत पे लाखों सलाम

बाक़िये साक़ियाने शराबे तहूर
ज़ैने अहले इबादत पे लाखों सलाम

और जितने हैं शहज़ादे उस शाह के
उन सब अहले मकानत पे लाखों सलाम

उन की बाला शराफ़त पे आ'ला दुरूद
उन की वाला सियादत पे लाखों सलाम

शाफ़ेई मालिक अहमद इमामे हनीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम

कामिलाने तरीक़त पे कामिल दुरूद
हामिलाने शरीअ़त पे लाखों सलाम

ग़ौसे आ'ज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जल्वए शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम

क़ुत्बे अब्दालो इर्शादो रुश्दुर्रशाद
मुह्यिये दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम

मर्दे ख़ैले तरीक़त पे बेहद दुरूद
फ़र्दे अहले हक़ीक़त पे लाखों सलाम

जिस की मिम्बर हुई गरदने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

शाहे ब-रकातो ब-रकाते पेशीनियां
नौ बहारे त़रीक़त पे लाखों सलाम

सय्यिद आले मुह़म्मद इमामुर्रशीद
गुले रौजे़ रियाज़त पे लाखों सलाम

ह़ज़रते ह़म्ज़ा शेरे ख़ुदा व रसूल
ज़ीनते क़ादिरिय्यत पे लाखों सलाम

नामो कामो तनो जानो ह़ालो मक़ाल
सब में अच्छे की सूरत पे लाखों सलाम

नूरे जां इत्ऱ मज्मूअ़ा आले रसूल
मेरे आक़ाए ने'मत पे लाखों सलाम

जै़बे सज्जादा सज्जाद नूरी निहाद
अह़मदे नूर त़ीनत पे लाखों सलाम

बे अ़ज़ाबो इ़ताबो ह़िसाबो किताब
ता अबद अहले सुन्नत पे लाखों सलाम

तेरे इन दोस्तों के तुफ़ैल ऐ ख़ुदा
बन्दए नंगे ख़ल्क़त पे लाखों सलाम

मेरे उस्ताद मां बाप भाई बहन
अहले वुल्दो अ़शीरत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रह़मत में दा'वा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश मह़शर में जब उन की आमद हो और
भेजें सब उन की शौकत पे लाखों सलाम

मुझ से ख़िदमत के क़ुदसी कहें हां रज़ा
मुस्त़फ़ा जाने रह़मत पे लाखों सलाम

اے شافعِ تردامناں وَے چارۂ دردِ نہاں

اے شافعِ تردامناں وَے چارۂ دردِ نہاں
جانِ دل و روحِ رواں یعنی شہِ عرش آستاں

اے مَسنَدَت عرشِ بَریں وَے خادمَت رُوحِ اَمیں
مِہرِ فلک ماہِ زمیں شاہِ جہاں زیبِ جِناں

اے مرہمِ زخمِ جگر یاقوت لب والا گُہر
غیرت دِہِ شمس و قمر رشکِ گُل و جانِ جہاں

اے جانِ مَن جانانِ من ہم دردِ ہم دَرمانِ من
دینِ من و ایمانِ من اَمن و اَمانِ اُمَّتاں

اے مُقتَدا شمعِ ہُدیٰ نورِ خدا ظلمت زِدا
مِہرَت فدا ماہَت گدا نُورَت جدا از اِین و آں

عینِ کرم زینِ حَرَم ماہِ قدم اَنجمِ خَدَم
والا حشَم عالی ہمم زیرِ قدم صَد لامَکاں

آئینہ ہا حیرانِ تو شمس و قمر جُویانِ تو
سَیَّارہا قربانِ تو شمعَت فدا پروانہ ساں

گل مست شُد از بوئے تو بلبل فدائے روئے تو
سُنبُل نِثار موئے تو طوطی بیادَت نغمہ خواں

بادِ صبا جُویانِ تو باغِ خدا از آنِ تو
بالا بَلا گردانِ تو شاخِ چمن سَرْوِ چماں

یعقوب گریانَت شُدہ ایوب حیرانَت شدہ
صالح حُدِی خوانَت شدہ اے یکّہ تازِ لامَکاں

خِضرَست گُویاں اَلْعَطَش موسیٰ بَاَیمَن گشتہ غَش
یعقوب شُد بینائیش دَرْ یادَت اے جانِ جہاں

در ہجرِ تو سوزاں دِلم پارہ جگر از رنج و غم
صد داغ سینہ از اَلم و زِ چشم دریائے رواں

بہرِ خدا مرہم بنہ از کارِ مَن بکُشا گِرہ
فریادرَس دادے بِدہ دَستے بَما اُفتادگاں

مولا زِ پا اُفتادَہ اَم دارَم شہا چشمِ کرم
مِہرِ عرب ماہِ عجم رَحمے بحالِ بندگاں

شکر بِدہ گو یک سخن تلخ اَست بر مَن جانِ من
بارِ نقاب از رُخ فِگَن بہرِ رضائے خستہ جاں

❁❁❁❁❁

شَجَرَةٌ طَيِّبَةٌ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآء

نالۂ دلِ زار بسرکارِ اَبد قرار

صَلَوَاتُ اللّٰہِ وَ سَلَامُہٗ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہِ الْاَطْھَار

یا خدا بہرِ جنابِ مصطفٰے امداد کُن
یا رسول اللہ از بہرِ خدا امداد کُن

یا شفیعَ المُذنِبیں یا رحمۃً لِّلعٰلَمِیں
یا اَمانَ الخائفیں یا ملتجے امداد کُن

حِرْزَ مَنْ لَا حِرْزَ لَہٗ یا کَنْزَ مَنْ لَا کَنْزَ لَہٗ
عِزَّ مَنْ لَا عِزَّ لَہٗ یا مُرتجے امداد کُن

ثَروَتِ بے ثروتاں اے قوتِ بے قُوَّتاں
اے پناہِ بیکساں اے غمزدا امداد کُن

یا مُفِیْضَ الْجُوْدِ یا سِرَّ الْوُجُوْدِ اے تخمِ بُود
اے بہارِ اِبتدا و اِنتہا امداد کُن

اے مُغِیث اے غَوث اے غَیث اے غِیاثِ نشا تیں
اے غَنی اے مُغْنی اے صاحبِ حیا امداد کن

نعمتِ بے مُنْتہیٰ اے مِنَّتِ بے مُنْتہیٰ
رَحمتا بے زَحمتا عینِ عطا امداد کن

نیّرا نُورُ الھُدیٰ بَدْرُ الدُّجیٰ شَمْسُ الضُّحیٰ
اے رُخت آئینۂ ذاتِ خدا امداد کن

اے گدایت جن و اِنس وحور وغِلمان و مَلک
وَے فِدایت عرش وفرش اَرض وسَما امداد کن

اے قریشی ہاشمی طیبی تہامی اَبطحی
عِزِّ بیت اللہ و عَذرا و قُبا امداد کن

یاطَبِیْبَ الرُّوح یا طِیبَ الْفُتُوح اے بےقبوح
مَظْہَرِ سُبُّوح پاک از عَیبہا امداد کن

اے عطا پاش اے خطاپوش اے عَفو کیش اے کریم
اے سراپا رافتِ رَبُّ الْعُلٰی امداد کن

اے سُرورِ جانِ غمگیں اے پئے اُمتِ حَزِیں
اے غمِ تو ضامنِ شادیِ ما امداد کن

اے بہیں عطرے زِ اعلیٰ جُونۂ عَطّارِ قُدس
اے مہیں دُرے زِ دُرجِ اِصطَفا امداد کن

اے کہ عالَم جملہ دادَندَت مگر عیب و قُصور
سَرورِ بے نقص شاہِ بے خطا امداد کن

بندۂ مولیٰ و مولائے تمامی بَندگان
اے زِ عالَم بیش و بیش از تو خدا امداد کن

اے علیم اے عالم اے علّامِ اَعلم اے علم
عِلمِ تو مُغنی زِ عَرضِ مُدَّعا امداد کن

اے بَدَستِ تو عِنانِ کُن مَکن کُن لا تکُن
وَے بحکمَت عرش و ما تحت الثَّریٰ امداد کن

سیّدا قلبُ الہُدیٰ جَلبُ النَدیٰ سَلبُ الرَّدیٰ
غمزِدا غمرالرِّدا اَلحدے[1] امداد کن

---

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्खे़ में येह मिस्रअ़ यूं है : ''غمزِدا غمرالردا الحد.... امدادکن'' जब कि मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर, मदीना पब्लिशिंग कम्पनी कराची और मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल अज़्हरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡقَوِی के तस्ह़ीह़ शुदा नुस्खे़ (मत़्बूआ़ 1369 हि.) में यूं है :
''غمزِدا غمرالردا الحدے امداد کن'' । इल्मिय्या

سَرْوَرا! کہفُ الْوَریٰ تَن را دوا جاں را شِفا
اے نسیمِ دامَنَت عیسیٰ لِقا امداد کن

اے برائے ہر دلِ مَغْشُوش و چَشمِ پُرغبار
خاکِ کُویَت کِیمیا و تُوتیا امداد کن

جانِ جاں جانِ جہاں جانِ جہاں را جانِ جاں
بلکہ جانہا خاکِ نَعْلَیْنَت شہا امداد کن

مَنْ عَلَیْہَا فَانْ آقا آنچہ بَرروئے زمیں سُت
در تو فانی در تو گم بر تو فدا امداد کن

کُلُّ شَیٍ ھَالِكٌ اِلَّا وَجْھَهٗ اے آں کہ خَلْق
در تو مُسْتَہْلِک تو در ذاتِ خدا امداد کن

سَہل کارے باشَدَت تَسْہِیل ہر مُشکل ازآنکہ
ہرچہ خواہی می کُنَد فوراً تُرا امداد کن

دارہاں ازمَن مَرا بےمَن سوئے خودخواں مَرا
مُدَّعا بخشا دِلے بے مدّعا امداد کن

فغانِ جانِ غمگین برآستانِ والاتمکین اسداللہ المرتضٰی

کرَّمَ اللہُ وَجْہَہٗ

مُرتَضیٰ شیرِ خدا مَرحَب کُشا خَیبر کُشا
سَرْوَرا لشکر کُشا مشکل کُشا امداد کن

حَیْدَرَا اَژْدَر دَرا ضِرْغام ہائل مَنظَرا
شہرِ عِرفاں را دَرا روشن دُرا اِمداد کُن

ضَیْغَما غَیظ وَغُما زَیْغ و فِتَن را راغِما
پہلوانِ حق امیرِ لا فَتٰے اِمداد کن

اے خدا را تیغ و اے اَندامِ احمد را سِپَر
یا علی یا بُوالحسن یا بُوالْعُلٰے اِمداد کُن

یا یَدُاللہ یا قوی یا زورِ بازُوے نبی
مَن زِ پا اُفتادَم اے دستِ خدا اِمداد کن

اے نِگارِ راز دارِ قَصْرِ اللہ اِتجِّے
اے بہارِ لالہ زارِ اِنَّمَا امداد کُن

اے تنت را جامہ پُر زر جلوہ باری عبا
اے سرت را تاجِ گوہرِ ھَلْ اَتٰی اِمداد کن

اے رُخت را غازۂ تطہیر و اِذْہابِ نجس
اے لبت را مایۂ فَصْلُ الْقَضَا اِمداد کن

اے بجبات و حریر ایمن زِ شمس و زمہریر
اے تُرا فِردَوس مُشتاقِ لقا اِمداد کن

اے بحضرت روزِ حسرت رُو بحُضرت جاں بسوز
شکرِ ایں نُصرت بیک نظرت مرا امداد کن

یَا طَلِیْقَ الْوَجْہِ فِیْ یَوْمٍ عَبُوْسٍ قَمْطَرِیْر
یَا بَھِیْجَ الْقَلْبِ فِیْ یَوْمِ الْاَسٰی اِمداد کن

اے وَقَاھُمْ رَبُّھُمْ اَمنت زِ شرِّ مُستطیر
مجرمم می جویم از کیفرِ وَقَا امداد کن

اے شَنَت دررَاہِ مولیٰ خاک و جانَت عرشِ پاک
بُو تُراب اے خاکیاں را پیشوا امداد کن

اے شبِ ہجرت بَجائے مصطفیٰ بر رَخْتِ خواب
اے دمِ شِدّت فدائے مصطفیٰ امداد کن

اے عدُوئے کفر و نَصب و رَفض و تفضیل و خُروج
اے علوے سُنّت و دینِ ہُدیٰ امداد کن

شمعِ بَزم و تیغِ رَزم و کُوہِ عَزم و کانِ حَزم
اے کذا و اے فُزوں تر از کذا امداد کن

❁❁❁❁❁

अफ़्वे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं :
रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ात के लिये कभी भी किसी से इन्तिक़ाम नहीं लिया हां अलबत्ता अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम की हुई चीज़ों का अगर कोई मुर-तकिब होता तो ज़रूर उस से मुवा-ख़ज़ा फ़रमाते ।
(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث: ۳۵۶۰، ج۲، ص۴۸۹)

نفیرِ دل تفتگان کرب و بلا بر درِ حسین سیّد الشہداء
عَلٰی جَدِّہٖ وعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالثَّنَاء

یا شہیدِ کربلا یا دافعِ کرب و بلا
گل رُخا شہزادۂ گلگُوں قَبا امداد کن

اے حُسَیْن اے مصطفٰے را راحتِ جاں نورِ عین
راحتِ جاں نورِ عینم دِہ بیا امداد کن

اے ز حسنِ خلق و حسن خلق احمد نسخۂ
سینہ تا پا شکلِ محبوبِ خدا امداد کن

جانِ حُسن ایمانِ حُسن اے کانِ حُسن اے شانِ حُسن
اے جَمالت لُمعِ شمعِ مَنْ رَاٰی امداد کن

جانِ زَہرا و شہیدِ زَہر را زور و ظَہِیر
زہرتِ ازہارِ تسلیم و رضا امداد کُن

اے بَواقعِ بیکسانِ دَہر را زیبا کسے
وَے بظاہر بیکسِ دشتِ جفا امداد کن

اے گلُویَت گہِ لَبانِ مصطفٰے را بوسہ گاہ
گہِ لبِ تیغِ لعیں را خسرتا امداد کن

اے تنِ تو گہِ سوارِ شہسوارِ عرشِ تاز
گہِ چناں پامال خَیلِ اَشقِیا امداد کن

اے دل و جانہا فدائے تِشنہ کامیہائے تو
اے لَبَت شرحِ رَضِینَا بِالْقَضَا امداد کن

اے کہ سُوزَت خان مانِ آب را آتش زدے
گر نہ بُودے گِریَہ اَرض و سَما امداد کن

ہے چہ بحر و تفتگی کوثر لَب و ایں تشنگی
خاک بر فرقِ فُرات از لبِ مَرا امداد کن

اَبر گو ہرگز مَبار و نہر گو ہرگز مَریز
خود لَبَت تَسلیم و فَیضَت حَبَّذا امداد کن

ترزبانیٔ مدح نگار بذکرِ بقیہ ائمہٴ اَطہار و دیگر اَولیائے کِبار تا حضرتِ غوثیّت مَدار

عَلَیْہِمْ رِضْوَانُ الْغَفَّار

باقِیِ اَسیاد یا سجّاد یا شاہِ جواد
خضرِ اِرشاد آدمِ آلِ عَبا امداد کن

اے بقیدِ ظلم و صد قیدی زِ بندِ غم کُشا
اے تہِ بے داد و کانِ دادہا امداد کن

باقرا یا عالمِ سادات یا بَحْرُ الْعُلُوم
از علومِ خود بدفعِ جہلِ ما امداد کن

جعفر صادق بحق ناطِق بحق واثق توئی
بہرِ حق ما را طریقِ حق نُما امداد کن

شانِ حلمًا کانِ علمًا جانِ سلمًا اَلسَّلام
موسیِ کاظمِ جہاں ناظمِ مرا امداد کن

اے تُرا زَین از عبادت و زِ تو زینِ عابداں
بہرِ ایں بے زِینت از زَین و صَفا امداد کن

ضامنِ ثامن رِضا بر مَن نگاہے از رضا
خشم را شایانم و گویم رِضا امداد کن

یا شہِ مَعروف ما را رہ سوئے معروف دِہ
یا سَری اَمن از سَقط در دوسرا امداد کن

یا جنید اے بادشاہِ جُنْدِ عِرفاں المدد
شِبْلِیا اے شِبْلِ شیرِ کبریا امداد کن

شیخ عبدالواحدا راہم سوئے واحد نُما
بے فَرح را بالفرح طَرطوسیا ! امداد کن

بُوالحسن ہکاریا حالَم حَسن کُن بے رِیا
اے علی اے شاہِ عالی مُرتضٰے امداد کن

سرورِ مخزوم سیف اللہ اے خالد بقرب
بو سعیدا اسعدا سعدالورٰی امداد کن

اے تُرا ببرے چو عبدالقادر جیلی مَزید
بَر سَگانِ دَرگہش لُطفے نُما امداد کن

وَہ چہ شیرِ شَرزَہ راہِ تُست از بختِ سعید
دشتِ ضیغم لیث شیر و شیرزا امداد کن

بہ اُمیدِ اِجابَت برخود بالیدَن وزمان
ضراعت برخاک مَلیدَن وبدَرگاہِ
بیکس پناہ غوثیّت نالیدَن

یَلّلے خوش آمدَم در کُوئے بغداد آمدَم
رَقصَم و جُوشَد زِ ہر مُویم ندا امداد کن

طُرفہ تر سازے زَنَم بر لب زَدَہ مُہرِ ادب
خیزَد از ہر تارِ جیبِ مَن صَدا امداد کن

بوسہ گستاخانہ چیدَن خواہَم از پائے سگش
ور نہ بخشَد پیشِ شہ گریم شہا امداد کن

مَطلعِ دوم مشرقِ مہرِ مدحت از اُفقِ سپہرِ قادریّت

آہ یا غوثاہ یا غیثاہ یا امداد کن
یا حیاۃَ الجُودِ یا رُوحَ المُنَا امداد کن

یَا وَلِیَّ الْاَوْلِیَاء اِبْنَ نَبِیِّ الْاَنْبِیَا
اے کہ پایت بر رِقابِ اَولیا امداد کن

دَست بخشِ حضرتِ حماد زیبِ دستِ خود
از تو دَستے خواہد ایں بے دست و پا امداد کن

مجمعِ ہر دو طَریق و مَرجعِ ہر دو فَریق
فاصِلان و واصِلاں را مُقتَدا امداد کن

واشیاں بر بندہ از ہر سُو ہُجوم آوَرْدَہ اَند
یَا عَزُوْمًا قَاتِلًا عِنْدَ الْوَغَا امداد کن

بہرِ " لَا خَوْفٌ عَلَیْھِمْ " نَجِّنَا مِمَّا نَخَافْ
بہرِ "لَا ھُمْ یَحْزَنُوْن" غمہا زِدا امداد کن

اے بانصارِ کرم دو قرن پیشیں دو حرم
تو بمُلکِ اَولیا چوں اِیلِیا امداد کن

عِزُّنَا یَا حِرْزَنَا یَا کَنْزَنَا یَا فَوْزَنَا
لَیْثُنَا یَا غَیْثَنَا یَا غَوْثَنَا امداد کن

شاہِ دیں عمرِ سنن ماہِ زمیں مِہرِ زَمَن
گاہِ کیں بہرِ فتن برقِ فنا امداد کن

طیّب الاخلاق وحق مشتاق و واصل بے فراق
نَیِّرُ الْاَشْرَاق وَ لَمَّاعُ السَّنَا امداد کن

مِہرباں تر بَرمَن اَز مَن از من آگہ تر زِ مَن
چند گویم سَیِّدا جُوْدُ النَّدیٰ امداد کن

تسلیہ خاطر بذکر عاطر بقیہ اکابر تا جناب سحاب برکات ماطر
قدّس القادر اسرارھم الاطاھر

یا ابنَ ھٰذا المُرتجٰی یا عبدَ رزّاقِ الورٰی
تا کہ باشد رزقِ ما عشقِ شما امداد کن

یا ابا صالح صلاحِ دین و اصلاحِ قلوب
فاسدم گلزار و در جوشِ ھوا امداد کن

جانِ نصری یا محی الدّین فانصُر وانتصِر
اے علی اے شہر یارِ مرتضٰی امداد کن

سیّدِ موسٰی! کلیمِ طورِ عرفاں المدد
اے حسن اے تاجدارِ مجتبٰے امداد کن

مُنتقٰی جوہر زِ جیلاں سیّدِ احمد الاماں
بے بہا گوہر بہاؤ الدّیں بہا امداد کن

بندہ را نمرودِ نفس اَنداخت در نارِ ہوا
یا بَراہیم ابرِ آتِش گُل کُنا امداد کن

اے محمد اے بھکاری اے گدائے مصطفٰے
ما گدایانِ دَرَت اے با سخا امداد کن

اَلنَّجا اے زندہٗ جاوید اے قاضی جیا
اے جمالِ اَولیا یُوسف لِقا امداد کن

یا محمد یا علم واخر زِ دستِ غفلتم
اے کہ ہر مُوئے تو در ذکرِ خدا امداد کن

اے بَنامَت شِیرہٗ جاں شُد نباتِ کالپی
احمدا ! نُوشِیں لَبا شِیریں ادا امداد کن

شاہ فضل اللہ یا ذُوالفضل یا فضلِ الٰہ
چشم در فضلِ تو بَسْت ایں بے نَوا امداد کن

سلسلۂ سخن تا شاخ مُعلائی برکاتی رَسیدن و بردرِ آقایانِ خود بہ رَسمِ گدائی علی اللٰہی کشیدن

شاہِ بَرکات اے ابُو البرکات اے سلطانِ جُود
بَارَکَ اللہ اے مبارک بادشا امداد کن

عِشقی اے مقتولِ عشق اے خوں بہایت عینِ ذات
اے زِ جاں بگزشتہ جاناں واصِلا امداد کن

بے خودا و با خدا آلِ محمد مصطفےٰ
سیّدا حق واجِدا یا مُقتَدا امداد کن

اے حَریمِ طیبہٗ توحید را کوہِ اُحد
یا جبل یا حمزہ یا شیرِ خدا امداد کن

اے سراپا چشم گشتہ در شُہُودِ عینِ ہُو
زاں سبب گردَنَدْ نامَتْ عَیْنِیا امداد کن

یا ابوالفضل آلِ احمد حضرتِ اچھے میاں
شاہ شمس الدّیں ضِیاء الاصفِیا امداد کن

وَحی بر جَدِّ تو لَایَاْتَلِ اُولُوالْفَضْل آمدہ است
بندۂ بے بَرگ را فضل و غِنا امداد کن

گو نہ ہجرت کردم از اِثم و غَی اَز زَم بقرب
آخر ایں در رانیم مسکیں گدا امداد کن

اے کہ شمسی و گرامتہائے تو مثلِ نُجوم
اے عَجب ہم مِہر و ہم اَنجم نُما امداد کن

من سَرت کردم دمے دیگر زِ شرقِ خَرق تاب
آفتابا! در شبِ داجم بیا امداد کن

تاجدارِ حضرتِ مارہرہ یا آلِ رسول
اے خدا خواہ و جدا از ماعَدا امداد کن

اے شہِ والا عمیمِ آلا عظیم المرتبۃ
اے پئے اِلّا ذبحِ تیغِ لا امداد کن

نائلِ جُود اَز نَمے زاں یم مَرا سیراب ساز
نوگلِ جود از شَمّے جانم فزا امداد کن

اے عجب غَیبے تُرا مَشہُود از غیبِ شُہود
دِیدَہ از خود بستی و دیدی خدا امداد کن

خلاصۂ فکر وعرض خاص

بَندہ اَم وَالْاَمْرُ اَمْرُکَ آنچہ دانی کُن بمن

مَن نَمی گُویَم مَرا بگُزار یا اِمداد کن

خانہ زادانِ کریماں گر بشِدَّت می زَنَنْد

ایں مَن و اِینک سَرم ورنَے مَرا امداد کن

دَستِ مَن بگِرفتی و برگُشت پاسَش بعد اَزِیں

یا تو دانی یا ہَماں دستِ تو یا امداد کن

گر بدُوزخ می رَوَم آخر ہَمی گُویند خَلق

کاں رسولی می رَوَد غیرت بَرا امداد کن

عار باشَد بر شَبانِ دِہ اگر ضائع شَوَد

یک رَسَن دَر دَشت یا حَامِیَ الْحُمَیّٰ امداد کن

مِسْکُ الْخِتَامْ وَ فَذٰلَکَۃُ الْمَرَامْ وَ رُجُوْعُ الْکَلَامْ اِلَی الْمَلِکِ الْمُنْعَامْ

جَلَّ وَعَلَا

یا الٰہی ذلیلِ ایں شیراں گرفتم بندہ را
از سگانِ شاں شُمارد دائما امداد کن

بے وسائل آمدن سوئے تو منظورِ تو نیست
زاں بہرِ محبوبِ تو گوید رضا امداد کن

مظہرِ عون اند و اینجا مغز حرفی بیش نیست
یعنی اے ربِّ نبی و اولیا امداد کن

نیست عون از غیرِ تو بل غیرِ تو خود ہیچ نیست
یَآ اِلٰہَ الْحَقّ اِلَیْکَ الْمُنْتَہٰی امداد کن

❁❁❁❁❁

मुस्त़फ़ा ख़ैरुल वरा हो

मुस्त़फ़ा ख़ैरुल वरा हो सरवरे हर दो सरा हो

अपने अच्छों का तसद्दुक़ हम बदों को भी निबाहो

किस के फिर हो कर रहें हम गर तुम्हीं हम को न चाहो

बद हंसें तुम उन की ख़ातिर रात भर रोओ कराहो

बद करें हर दम बुराई तुम कहो उन का भला हो

हम वोही ना शुस्ता रू हैं तुम वोही बह्रे अ़त़ा हो

हम वोही शायाने रद हैं तुम वोही शाने सख़ा हो

हम वोही बे शर्मो बद हैं तुम वोही काने ह़या हो

हम वोही नंगे जफ़ा हैं तुम वोही जाने वफ़ा हो

हम वोही क़ाबिल सज़ा के तुम वोही रह़मे ख़ुदा हो

चर्ख़ बदले दह्र बदले तुम बदलने से वरा हो

अब हमें हों सह्व ह़ाशा ऐसी भूलों से जुदा हो

उ़म्र भर तो याद रख्खा वक़्त पर क्या भूलना हो

वक़्ते पैदायिश न भूले	كَيْفَ يَنْسٰى क्यूं क़ज़ा हो
येह भी मौला अ़र्ज़ कर दूं	भूल अगर जाओ तो क्या हो
वोह हो जो तुम पर गिरां है	वोह हो जो हरगिज़ न चाहो
वोह हो जिस का नाम लेते	दुश्मनों का दिल बुरा हो
वोह हो जिस के रद की ख़ातिर	रात दिन वक़्फ़े दुआ़ हो
मर मिटें बरबाद बन्दे	ख़ाना आबाद आग का हो
शाद हो इब्लीस मल्ऊ़ं	ग़म किसे इस क़ह्र का हो
तुम को हो वल्लाह तुम को	जानो दिल तुम पर फ़िदा हो
तुम को ग़म से ह़क़ बचाए	ग़म अ़दू को जां गज़ा हो
तुम से ग़म को क्या तअ़ल्लुक़	बे-कसों के ग़मज़िदा हो
ह़क़ दुरूदें तुम पे भेजे	तुम मुदाम उस को सराहो
वोह अ़ता दे तुम अ़ता लो	वोह वोही चाहे जो चाहो
بر تو او پاشد تو بر ما	ता अबद येह सिल्सिला हो

क्यूं रज़ा मुश्किल से डरिये

जब नबी मुश्किल कुशा हो

मिल्के ख़ासे किब्रिया हो

मिल्के ख़ासे किब्रिया हो — मालिके हर मा सिवा हो

कोई क्या जाने कि क्या हो — अ़क़्ले आ़लम से वरा हो

कन्ज़े मक्तूमे अज़ल में — दुर्रे मक्नूने ख़ुदा हो

सब से अव्वल सब से आख़िर — इब्तिदा हो इन्तिहा हो

थे वसीले सब नबी तुम — अस्ल मक़्सूदे हुदा हो

पाक करने को वुज़ू थे — तुम नमाज़े जां फ़िज़ा हो

सब बिशारत की अज़ां थे — तुम अज़ां का मुद्दआ़ हो

सब तुम्हारी ही ख़बर थे — तुम मुअख़्ख़र मुब्तदा हो

कुर्बे हक़ की मन्ज़िलें थे — तुम सफ़र का मुन्तहा हो

क़ब्ले ज़िक्र इज़्मार क्या जब — रुत्बा साबिक़ आप का हो

तूरे मूसा चर्खे़ ईसा   क्या मुसाविय्ये दना हो
सब जिहत के दाएरे में   शश जिहत से तुम वरा हो
सब मकां तुम ला मकां में   तन हैं तुम जाने सफ़ा हो
सब तुम्हारे दर के रस्ते   एक तुम राहे ख़ुदा हो
सब तुम्हारे आगे शाफ़ेअ़   तुम हुज़ूरे किब्रिया हो
सब की है तुम तक रसाई   बारगह तक तुम रसा हो
वोह कलस रौज़े का चमका   सर झुकाओ कज कुलाहो

वोह दरे दौलत पे आए
झोलियां फैलाओ शाहो

در منقبتِ حضرت مولیٰ علی

كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهٗ

اَلسَّلام اے اَحمدَت صِہر و بَرادر آمدَہ
حمزہ سردارِ شہیداں عَم اَکبر آمدَہ

جعفرے کُو می پَرَد صبح و مَسا با قُدسیاں
با تو ہم مَسکَن بہ بَطنِ پاک مادر آمدَہ

بِنتِ احمد رَونقِ کاشانہ و بانُوے تو
گوشت وخونِ تو بکَحْمَشْ شِیر و شکر آمدَہ

ہر دو رَیحانِ نبی گلہائے تو زاں گل زمیں
بہر گل چِینَت زمینِ باغ برتر آمدَہ

می چَمِیدی گلبُنا در باغِ اسلام و ہَنوز
غُنچہاَت نشگُفت و نَے نخلے دِگر بر آمدَہ

نرم نرم از بزم دامن چیدہ رَفتہ بادِ تُند
"یا علی"چوں بر زبانِ شمعِ مُضطر آمدَہ

ماہِ تاباں گُو مَتاب و مِہرِ رَخشاں گو مَرَخش
باختَر تا خاوَر اِسمَت نور گستر آمدَہ

حل مشکل کُن بَرُوئے مَن درِ رحمت کُشا
اے بَنامِ تو مُسلم فتحِ خیبر آمدہ

مرحبا اے قاتلِ مَرحب امیرالاشجعیں
در ظِلالِ ذُوالفقارَت شورِ محشر آمدہ

سینہ ام را مَشرِقستاں کُن بنورِ معرِفت
اے کہ نامِ سایہ اَت خورشیدِ خاوَر آمدہ

کے رَسَد مَولیٰ بمہرِ تابُناکت نجمِ شام
گو بنورِ صحبتِ اُو صبحِ انور آمدہ

ناصبی را بغضِ تو سوئے جہنّم رہ نمود
رافضی از حُبِّ کاذِب در سقر دَرآمدہ

من زِحق می خواہم اے خورشیدِ حق آں مہرِ تو
کز ضیائش عالَمِ ایماں منور آمدہ

بہرِ اَستر چادرِ مہتاب و ایں زرّیں پَرَند
نا پذیرائے گلیمِ بختِ قنبر آمدہ

تِشنہ کامِ خود رضائے خستہ را ہم جُرعۂ
شکرِ آں نعمت کہ نامت شاہِ کوثر آمدہ

در منقبتِ حضرت اچھے میاں صاحب
رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِ

اے بَدَورِ خود امامِ اہلِ اِیقاں آمدہ
جانِ اِنس و جانِ جانّ و جانِ جاناں آمدہ

قامتِ تو سَرْوِناز جُوئبارِ معرِفت
روئے تو خورشیدِ عالَمْتابِ اِیماں آمدہ

مُوئے زُلفِ عَنبرینَتْ قوّتِ رُوحِ ہُدیٰ
رنگِ رُویَت غازَہَ دینِ مسلماں آمدہ

زنگ از دِلہا زداید خاک بوسیِ دَرَتْ
تابْناک از جلوہ اَت مِرآتِ احساں آمدہ

صد لَطائف می کُشاید یک نگاہِ لطفِ تو
دستِ فَیضانَت کلیدِ بابِ عِرفاں آمدہ

نامَتْ آلِ احمد و احمد شفیعُ المُذنِبیں
زاں دل از دستِ گُنہ پیشِ تو نالاں آمدہ

پُر صدا شُد باغِ قدس از نغمہائے وصفِ تو

تا بہارِ جنّت از گلزارِ جیلاں آمدہ

چوں گلِ آلِ محمد رنگِ حمزہ برفروخت

بوئے آلِ احمد اندر باغِ عرفاں آمدہ

گلبُنِ نَورَستہ اَت را سبزۂ چرخِ کُہن

فرشِ پااَنداز بزمِ رفعتِ شاں آمدہ

تا کشیدَم نالۂ یا آلِ احمد اَلْغِیاث

بے سر و سامانیم را طُرفہ ساماں آمدہ

در پناہِ سایۂ دامانت اے ابرِ کرم

گرمیِ غم گشتۂ با سوزِ اَحزاں آمدہ

دل فگارے آبلہ پائے بشہرِ جُودِ تو

از بیابانِ بلا اُفتاں و خیزاں آمدہ

تازہ فریادے برآورد اے مَسیحا بر دَرَت

کُہنہ رَنجُورے کہ از غم بر لَبَش جاں آمدَہ

زہر نوشِ جامِ غم در حسرتِ فِیْہِ شِفَاء

زِ اَنگبینِ رَحمَتَت یک جُرعہ جُویاں آمدَہ

بہرِ آں رنگیں ادا گل برگ چند آلِ رسول

بَرکش از دل خارِ آلامے کہ در جاں آمدَہ

احمد نوری دریں ظلماتِ رنج و تِشنگی

رہنمائم سوئے تو اے آبِ حیواں آمدَہ

اے زُلالِ چشمۂ کوثر لبِ سیراب تو

بر درِ پاکت رضا با جانِ سوزاں آمدَہ

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये मकीनो मकां तुम्हारे लिये
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिये बने दो जहां तुम्हारे लिये

दहन में ज़बां तुम्हारे लिये बदन में है जां तुम्हारे लिये
हम आए यहां तुम्हारे लिये उठें भी वहां तुम्हारे लिये

फ़िरिश्ते ख़िदम रसूले ह़िशम तमामे उमम गुलामे करम
वुजूदो अ़दम हुदूसो क़िदम जहां में इयां तुम्हारे लिये

कलीमो नजी मसीहो सफ़ी ख़लीलो रज़ी रसूलो नबी
अ़तीक़ो वसी ग़निय्यो अ़ली सना की ज़बां तुम्हारे लिये

इसालते कुल इमामते कुल सियादते कुल इमारते कुल
हुकूमते कुल विलायते कुल खुदा के यहां तुम्हारे लिये

तुम्हारी चमक तुम्हारी दमक तुम्हारी झलक तुम्हारी महक
ज़मीनो फ़लक सिमाको समक में सिक्का निशां तुम्हारे लिये

वोह कन्जे़ निहां येह नूरे फ़शां वोह कुन से इयां येह बज़्मे फ़कां
येह हर तनो जां येह बागे़ जिनां येह सारा समां तुम्हारे लिये

जुहूरे निहां क़ियामे जहां रुकूए़ मिहां सुजूदे शहां
नियाजे़ं यहां नमाजे़ं वहां येह किस लिये हां तुम्हारे लिये

येह शम्सो क़मर येह शामो सह़र येह बर्गो शजर येह बाग़ो समर
येह तैग़ो सिपर येह ताजो कमर येह हुक्मे रवां तुम्हारे लिये

येह फै़ज़ दिये वोह जूद किये कि नाम लिये ज़माना जिये
जहां ने लिये तुम्हारे दिये येह इकरमियां तुम्हारे लिये

सह़ाबे करम रवाना किये कि आबे निअ़म ज़माना पिये
जो रखते थे हम वोह चाक सिये येह सित्रे बदां तुम्हारे लिये

सना का निशां वोह नूर फ़शां कि मेह्र वशां बआं हमा शां
बसा येह कशां मवाकिबे शां येह नामो निशां तुम्हारे लिये

अ़ताए अरब जिलाए करब फ़ुयूज़े अ़जब बिग़ैर त़लब
येह रह़मते रब है किस के सबब ब-रब्बे जहां तुम्हारे लिये

जुनूब फ़ना उ़यूब हबा कुलूब सफ़ा ख़ुतूब रवा
येह ख़ूब अ़ता़ कुरूब जुदा पए दिलो जां तुम्हारे लिये

न जिन्नो बशर कि आठों पहर मलाएका दर पे बस्ता कमर
न जुब्बा व सर कि क़ल्बो जिगर हैं सज्दा कुनां तुम्हारे लिये

न रूहे़ अमीं न अ़र्शे बरीं न लौहे़ मुबीं कोई भी कहीं
ख़बर ही नहीं जो रम्ज़ें खुलीं अज़ल की निहां तुम्हारे लिये

जिनां में चमन, चमन में समन, समन में फबन, फबन में दुल्हन
सज़ाए मिह़न पे ऐसे मिनन येह अम्नो अमां तुम्हारे लिये

कमाले मिहां जलाले शहां जमाले हि़सां में तुम हो इ़यां
कि सारे जहां में रोज़े फ़कां ज़िल आईना सां तुम्हारे लिये

येह तूर कुजा सिपह्‌र तो क्या कि अ़र्शे उ़ला भी दूर रहा
जिहत से वरा विसाल मिला येह रिफ़्अ़ते शां तुम्हारे लिये

ख़लीलो नजी, मसीह़ो सफ़ी सभी से कही कहीं भी बनी
येह बे ख़बरी कि ख़ल्क़ फिरी कहां से कहां तुम्हारे लिये

बफ़ौरे सदा समां येह बंधा येह सिदरा उठा वोह अ़र्श झुका
सुफ़ूफ़े समा ने सज्दा किया हुई जो अज़ां तुम्हारे लिये

येह मर्ह़मतें कि कच्ची मतें न छोड़ें लतें न अपनी गतें
क़ुसूर करें और इन से भरें क़ुसूरे जिनां तुम्हारे लिये

फ़ना ब-दरत बक़ा ब-यरत ज़ि हर दो जिहत ब ग-रदे सरत
है मर्कज़िय्यत तुम्हारी सिफ़त कि दोनों कमां तुम्हारे लिये

इशारे से चांद चीर दिया छुपे हुए ख़ुर को फेर लिया
गए हुए दिन को अ़स्र किया येह ताबो तुवां तुम्हारे लिये

सबा वोह चले कि बाग़ फले वोह फूल खिले कि दिन हों भले
लिवा के तले सना में खुले रज़ा की ज़बां तुम्हारे लिये

नज़र इक चमन से दो चार है

नज़र इक चमन से दो चार है न चमन चमन भी निसार है
अ़जब उस के गुल की बहार है कि बहार बुलबुले ज़ार है

न दिले बशर ही फ़िगार है कि मलक भी उस का शिकार है
येह जहां कि हज़्दा हज़ार है जिसे देखो उस का हज़ार है

नहीं सर कि सज्दा कुनां न हो न ज़बां कि ज़मज़मा ख़्वां न हो
न वोह दिल कि उस पे तपां न हो न वोह सीना जिस को क़रार है

वोह है भीनी भीनी वहां महक कि बसा है अ़र्श से फ़र्श तक
वोह है प्यारी प्यारी वहां चमक कि वहां की शब भी नहार है

कोई और फूल कहां खिले न जगह है जोशिशे हुस्न से
न बहार और पे रुख़ करे कि झपक पलक की तो ख़ार है

येह समन येह सो-सनो यास्मन येह बनफ़्शा सुम्बुलो नस्तरन
गुलो सर्वो लालह भरा चमन वोही एक जल्वा हज़ार है

येह सबा सनक वोह कली चटक येह ज़बां चहक लबे जू छलक
येह महक झलक येह चमक दमक सब उसी के दम की बहार है

वोही जल्वा शह्र ब शह्र है वोही अस्ले आ़लमो दह्र है
वोही बह्र है वोही लह्र है वोही पाट है वोही धार है

वोह न था तो बाग़ में कुछ न था वोह न हो तो बाग़ हो सब फ़ना
वोह है जान, जान से है बक़ा वोही बुन है बुन से ही बार है

येह अदब कि बुलबुले बे नवा कभी खुल के कर न सके नवा
न सबा को तेज़ रविश रवा न छलक्ती नहरों की धार है

ब अदब झुका लो सरे विला कि मैं नाम लूं गुलो बाग़ का
गुले तर मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा चमन उन का पाक दियार है

वोही आंख उन का जो मुंह तके वोही लब कि मह़्व हों ना'त के
वोही सर जो उन के लिये झुके वोही दिल जो उन पे निसार है

येह किसी का हुस्न है जल्वा-गर कि तपां हैं खूबों के दिल जिगर
नहीं चाक जैबे गुलो सह़र कि क़मर भी सीना फ़िगार है

वोही नज़्रे शह में ज़रे निकू जो हो उन के इ़श्क़ में ज़र्द रू
गुले ख़ुल्द उस से हो रंग जू येह ख़ज़ां वोह ताज़ा बहार है

जिसे तेरी सफ़्फ़े निआ़ल से मिले दो निवाले नवाल से
वोह बना कि उस के उगाल से भरी सल्त़नत का उधार है

वोह उठीं चमक के तजल्लियां कि मिटा दीं सब की तअ़ल्लियां
दिलो जां को बख़्शीं तसल्लियां तेरा नूर बारिदो ह़ार है

रुसुलो मलक पे दुरूद हो वोही जाने उन के शुमार को
मगर एक ऐसा दिखा तो दो जो शफ़ीए़ रोज़े शुमार है

न ह़िजाब चर्ख़ो मसीह़ पर न कलीमो त़ूर निहां मगर
जो गया है अ़र्श से भी उधर वोह अ़रब का नाक़ा सुवार है

वोह तेरी तजल्लिये दिलनशीं कि झलक रहे हैं फ़लक ज़मीं
तेरे सदके़ मेरे महे मुबीं मेरी रात क्यूं अभी तार है

मेरी ज़ुल्मतें हैं सितम मगर तेरा मह न मेह्र कि मेह्र-गर
अगर एक छींट पड़े इधर शबे दाज अभी तो नहार है

गु–नहे रज़ा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाखों से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ुव्व तेरे अ़फ़्व का न ह़िसाब है न शुमार है

तेरे दीने पाक की वोह ज़िया कि चमक उठी रहे इस्त़फ़ा
जो न माने आप सक़र गया कहीं नूर है कहीं नार है

कोई जान बस के महक रही किसी दिल में उस से खटक रही
नहीं उस के जल्वे में यक–रही कहीं फूल है कहीं ख़ार है

वोह जिसे वहाबिया ने दिया है लक़ब शहीदो ज़बीह़ का
वोह शहीदे लैलाए नज्द था वोह ज़बीहे़ तैगे़ ख़ियार है

येह है दीं की तक़्वियत उस के घर येह है मुस्तक़ीम सिराते़ शर
जो शक़ी के दिल में है गाउ ख़र तो ज़बां पे चूढ़ा चमार है

वोह ह़बीब प्यारा तो उ़म्र भर करे फ़ैज़ो जूद ही सर बसर
अरे तुझ को खाए तपे सक़र तेरे दिल में किस से बुख़ार है

वोह रज़ा के नेज़े की मार है कि अ़दू के सीने में ग़ार है
किसे चारा जूई का वार है कि येह वार वार से पार है

ईमान है क़ाले मुस्त़फ़ाई

ईमान है क़ाले मुस्त़फ़ाई   क़ुरआन है ह़ाले मुस्त़फ़ाई

अल्लाह की सल्त़नत का दूल्हा   नक़्शे तिम्साले मुस्त़फ़ाई

कुल से बाला रुसुल से आ'ला   इज्लालो जलाले मुस्त़फ़ाई

अस्ह़ाब नुजूमे रहनुमा हैं   कश्ती है आले मुस्त़फ़ाई

इदबार से तू मुझे बचा ले   प्यारे इक़्बाले मुस्त़फ़ाई

मुरसल मुश्ताक़े ह़क़ हैं और ह़क़   मुश्ताक़े विसाले मुस्त़फ़ाई

ख़्वाहाने विसाले किब्रिया हैं   जूयाने जमाले मुस्त़फ़ाई

मह़बूबो मुह़िब की मिल्क है एक   कौनैन हैं माले मुस्त़फ़ाई

अल्लाह न छूटे दस्ते दिल से   दामाने ख़याले मुस्त़फ़ाई

हैं तेरे सिपुर्द सब उमीदें   ऐ जूदो नवाले मुस्त़फ़ाई

रोशन कर क़ब्र बे-कसों की ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
अन्धेर है बे तेरे मेरा घर ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
मुझ को शबे ग़म डरा रही है ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
आंखों में चमक के दिल में आ जा ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
मेरी शबे तार दिन बना दे ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
चमका दे नसीबे बद नसीबां ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
क़ज़्ज़ाक़ हैं सर पे राह गुम है ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
छाया आंखों तले अंधेरा ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
दिल सर्द है अपनी लौ लगा दे ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
घन्घोर घटाएं ग़म की छाईं ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
भटका हूं तू रास्ता बता जा ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
फ़रियाद दबाती है सियाही ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई

मेरे दिले मुर्दा को जिला दे	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
आंखें तेरी राह तक रही हैं	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
दुख में हैं अंधेरी रात वाले	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
तारीक है रात ग़मज़दों की	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
हो दोनों जहां में मुंह उजाला	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
तारीकिये गोर से बचाना	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
पुरनूर है तुझ से बज़्मे आ़लम	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
हम तीरह दिलों पे भी करम कर	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई
लिल्लाह इधर भी कोई फेरा	ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई

तक़्दीर चमक उठ्ठे रज़ा की
ऐ शम्ए़ जमाले मुस्त़फ़ाई

ज़र्रे झड़ कर तेरी पैज़ारों के

ज़र्रे झड़ कर तेरी पैज़ारों के
ताजे सर बनते हैं सय्यारों के

हम से चोरों पे जो फ़रमाएं करम
ख़िल्अ़ते ज़र बनें पुश्तारों के

मेरे आक़ा का वोह दर है जिस पर
माथे घिस जाते हैं सरदारों के

मेरे ईसा तेरे सदक़े जाऊं
त़ौर बे त़ौर हैं बीमारों के

मुजरिमो ! चश्मे तबस्सुम रख्खो
फूल बन जाते हैं अंगारों के

तेरे अब्रू के तसद्दुक़ प्यारे
बन्द कर्रे हैं गिरिफ़्तारों के

जानो दिल तेरे क़दम पर वारे
क्या नसीबे हैं तेरे यारों के

सिद्क़ो अ़दलो करम व हिम्मत में
चार सू शोहरे हैं इन चारों के

बहरे तस्लीमे अ़ली मैदां में
सर झुके रहते हैं तलवारों के

कैसे आक़ाओं का बन्दा हूं रज़ा
बोलबाले मेरी सरकारों के

सर सूए रौज़ा झुका फिर तुझ को क्या

सर सूए रौज़ा झुका फिर तुझ को क्या
दिल था साजिद नज्दिया फिर तुझ को क्या

बैठते उठते मदद के वासिते
या रसूलल्लाह कहा फिर तुझ को क्या

या ग़रज़ से छुट के महूज़ ज़िक्र को
नामे पाक उन का जपा फिर तुझ को क्या

बेखुदी में सज्दए दर या तवाफ़
जो किया अच्छा किया फिर तुझ को क्या

उन को तम्लीके मलीकुल मुल्क से
मालिके आलम कहा फिर तुझ को क्या

उन के नामे पाक पर दिल जानो माल
नज्दिया सब तज दिया फिर तुझ को क्या

या इबादी कह के हम को शाह ने
अपना बन्दा कर लिया फिर तुझ को क्या

देव के बन्दों से कब है येह ख़िताब
तू न उन का है न था फिर तुझ को क्या

لَا يَعُوْدُوْنَ आगे होगा भी नहीं
तू अलग है दाइमा फिर तुझ को क्या

दश्ते गिर्दो पेशे त़यबा का अदब
मक्का सा था या सिवा फिर तुझ को क्या

नज्दी मरता है कि क्यूं ता'ज़ीम की
येह हमारा दीन था फिर तुझ को क्या

देव तुझ से ख़ुश है फिर हम क्या करें
हम से राज़ी है ख़ुदा फिर तुझ को क्या

देव के बन्दों से हम को क्या ग़रज़
हम हैं अ़ब्दे मुस्त़फ़ा फिर तुझ को क्या

तेरी दोज़ख़ से तो कुछ छीना नहीं
ख़ुल्द में पहुंचा रज़ा फिर तुझ को क्या

वोही रब है जिस ने तुझ को हमा-तन करम बनाया

वोही रब है जिस ने तुझ को हमा-तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया
तुझे ह़म्द है खु़दाया

तुम्हीं ह़ाकिमे बराया तुम्हीं क़ासिमे अ़त़ाया
तुम्हीं दाफ़ेए़ बलाया तुम्हीं शाफ़ेए़ ख़त़ाया
कोई तुम सा कौन आया

वोह कुंवारी पाक मरयम वोह نَفَخْتُ فِيْهِ का दम
है अ़जब निशाने आ'ज़म मगर आमिना का जाया
वोही सब से अफ़्ज़ल आया

येही बोले सिदरा वाले च-मने जहां के थाले
सभी मैं ने छान डाले तेरे पाए का न पाया
तुझे यक ने यक बनाया

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ येह मिला है तुम को मन्सब
जो गदा बना चुके अब उठो वक़्ते बख़्शिश आया
करो क़िस्मते अ़त़ाया

وَاِلٰی الْاِلٰہِ فَارْغَبْ करो अर्ज़ सब के मत़लब
कि तुम्हीं को तकते हैं सब करो उन पर अपना साया
बनो शाफ़ेए ख़त़ाया

अरे ऐ ख़ुदा के बन्दो ! कोई मेरे दिल को ढूंडो
मेरे पास था अभी तो अभी क्या हुवा ख़ुदाया
न कोई गया न आया

हमें ऐ रज़ा तेरे दिल का पता चला ब मुश्किल
दरे रौज़ा के मुक़ाबिल वोह हमें नज़र तो आया
येह न पूछ कैसा पाया

कभी ख़न्दा ज़ेरे लब है कभी गिर्या सारी शब है
कभी ग़म कभी त़रब है न सबब समझ में आया
न उसी ने कुछ बताया

कभी ख़ाक पर पड़ा है सरे चर्ख़ ज़ेरे पा है
कभी पेशे दर खड़ा है सरे बन्दगी झुकाया
तो क़दम में अ़र्श पाया

कभी वोह तपक कि आतिश कभी वोह टपक कि बारिश
कभी वोह हुजूमे नालिश कोई जाने अब्र छाया
बड़ी जोशिशों से आया

कभी वोह चहक कि बुलबुल कभी वोह महक कि खुद गुल
कभी वोह लहक कि बिल्कुल च–मने जिनां खिलाया
गुले कुद्स लह–लहाया

कभी ज़िन्दगी के अरमां कभी मर्गे नौ का ख़्वाहां
वोह जिया कि मर्ग कुरबां वोह मुवा कि ज़ीस्त लाया
कहे रूह़ हां जिलाया

कभी गुम कभी इयां है कभी सर्द गह तपां है
कभी ज़ेरे लब फुग़ां है कभी चुप कि दम न था या
रुख़े काम जां दिखाया

येह तसव्वुराते बातिल तेरे आगे क्या हैं मुश्किल
तेरी कुदरतें हैं कामिल इन्हें रास्त कर खुदाया
मैं उन्हें शफ़ीअ़ लाया

بکارِ خویش حیرانم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

بکارِ خویش حیرانم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ
پریشانم پریشانم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

ندارم جز تو ملجائے ندانم جز تو ماوائے
توئی خود ساز و سامانم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

شہا بیکس نوازی کن طبیبا چارہ سازی کن
مریضِ دردِ عصیانم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

زرفتم راہِ بینایاں فتادم در چہِ عصیاں
بیا اے حبلِ رحمانم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

گنہ بر سر بلا بارد دلم دردِ ہوا دارد
کہ داند جز تو درمانم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

اگر رانی و گر خوانی غُلامَم اَنْتَ سُلْطَانِی
دِگر چیزے نَمیدانَم اَغِثْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

بَکہفِ رَحمتَم پَروَر زِ قِطمیرَم مَنِہ کم تر
سگِ درگاہِ سلطانَم اَغِثْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

گُنہ در جانَم آتِش زد قیامت شُعلہ می خیزد
مدد اے آبِ حیوانَم اَغِثْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

چو مَرگَم نَخلِ جاں سُوزَد بہارَم را خزاں سوزد
نہ ریزَد بَرگِ ایمانَم اَغِثْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

چو محشر فتنہ اَنگیزَد بلائے بے اماں خیزَد
بجویم از تو دَرمانَم اَغِثْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

پدَر را نفرتے آیَدْ پسر را وَحشت اَفزایَدْ
تو گیری زیرِ دامانَم اَغِثْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

عزیزاں گشتہ دور از مَن ہمہ یاراں نُفُور از مَن

دَریں وحشت تُرا خوانَم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

گدائے آمد اے سلطاں بامّیدِ کَرم نالاں

تَہی داماں مگرِدانَم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

اگر می رانیم از در بمن بِنُما دَرے دیگر

کُجا نالَم کِرا خوانَم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

گرفتارَم رہائی دِہ مَسیحا مُومیائی دِہ

شِکستَم رنگِ سامانَم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

رضاؔ یَت سائلِ بے پر توئی سلطانِ لَا تَنْہَرْ

شہا بَہرے ازیں خوانَم اَغِثْنِیْ یا رَسُوْلَ اللّٰہ

लह़द में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले

लह़द में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अंधेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

तेरे ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वोह क्या बहक सके जो येह सुराग़ ले के चले

जिनां बनेगी मुह़िब्बाने चार यार की क़ब्र
जो अपने सीने में येह चार बाग़ ले के चले

गए, ज़ियारते दर की, सद आह वापस आए
नज़र के अश्क पुछे दिल का दाग़ ले के चले

मदीना जाने जिनानो जहां है वोह सुन लें
जिन्हें जुनूने जिनां सूए ज़ाग़ ले के चले

तेरे सह़ाबे सुख़न से न नम कि नम से भी कम
बलीग़ बहरे बलाग़त बलाग़ ले के चले

ह़ुज़ूरे त़यबा से भी कोई काम बढ़ कर है
कि झूटे ह़ीलए मक्रो फ़राग़ ले के चले

तुम्हारे वस्फ़े जमालो कमाल में जिब्रील
मुह़ाल है कि मजालो मसाग़ ले के चले

गिला नहीं है मुरीदे रशीदे शैत़ां से
कि उस के वुस्अ़ते इ़ल्मी का लाग़ ले के चले

हर एक अपने बड़े की बड़ाई करता है
हर एक मुग़बचा मुग़ का अयाग़ ले के चले

मगर ख़ुदा पे जो धब्बा दरोग़ का थोपा
येह किस लईं की ग़ुलामी का दाग़ ले के चले

वुक़ूए़ किज़्ब के मा'नी दुरुस्त और क़ुद्दूस
हिये की फूटे अ़जब सब्ज़ बाग़ ले के चले

जहां में कोई भी काफ़िर सा काफ़िर ऐसा है
कि अपने रब पे सफ़ाहत का दाग़ ले के चले

पड़ी है अन्धे को आ़दत कि शोरबे ही से खाए
बटेर हाथ न आई तो ज़ाग़ लेके चले

ख़बीस बहरे ख़बीसा ख़बीसा बहरे ख़बीस
कि साथ जिन्स को बाज़ो कुलाग़ ले के चले

जो दीन कव्वों को दे बैठे उन को यक्सां है
कुलाग़ ले के चले या उलाग़ ले के चले

रज़ा किसी सगे त़यबा के पाउं भी चूमे
तुम और आह कि इतना दिमाग़ ले के चले

ग़ज़ल क़त्अ़ बन्द

अम्बिया को भी अजल आनी है
मगर ऐसी कि फ़क़त़ आनी है

फिर उसी आन के बा'द उन की ह़यात
मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है

रूह़ तो सब की है ज़िन्दा उन का
जिस्मे पुरनूर भी रूह़ानी है

औरों की रूह़ हो कितनी ही लत़ीफ़
उन के अज्साम की कब सानी है

पाउं जिस ख़ाक पे रख दें वोह भी
रूह़ है पाक है नूरानी है

उस की अज़्वाज को जाइज़ है निकाह़
उस का तर्का बटे जो फ़ानी है

येह हैं ह़य्ये अ-बदी उन को रज़ा
सिद्क़े वा'दा की क़ज़ा मानी है

نظمِ معطر

۱۳۰۹ھ

حمد

حَمْدًا لَکَ یَا مُفَضِّلِ عَبْدُالْقَادِرِ　　یَا ذَاالْاُفْضَال

یَا مُنْعِمِ یَا مُجَمِّلِ عَبْدُالْقَادِرِ　　اَنْتَ الْمُتَعَال

مَوْلَائِی بِمَا مَنَنْتَ بِالْجُوْدِ عَلَیْہِ　　مِنْ دُوْنِ سُوَال

اُمْنُنْ وَ اَجِبْ سَائِلِ عَبْدُالْقَادِرِ　　جُدْ بِالْاٰمَال

صلوٰۃ

بارَد زِ خدا بر جَدِّ عبدالقادر　　محمود خدا حامد عبدالقادر

بارانِ درُودے کہ چکیدہ زِ رُخش　　بارَد بسَر سیّد عبدالقادر

تمہید

یاربّ کہ دَمَدْ سَنائے عبدالقادر　　ہر حرف کُنَدْ ثنائے عبدالقادر

ہمزہ بَرَدِیفِ الف آیَدْ یعنی　　خَم گردہ قدش برائے عبدالقادر

ردیف الالف

یَا مَنْ بِسَنَاہُ جَاء عَبْدُالْقَادِر   یَا مَنْ بِشَنَاہُ یَاء عَبْدُالْقَادِر
اِذْ اَنْتَ جَعَلْتَہٗ کَمَا کُنْتَ تَشَاءُ   فَاجْعَلْنِیْ کَیْفَ شَاءَ عَبْدُالْقَادِر

رباعی

ربی اربی الرجَاء عَبْدُالْقَادِر   اِذْ عَودنَا الْعَطَاء عَبْدُالْقَادِر
اَلدَّارُ وَسِیْعَۃٌ وَ ذُوالدَّارِ کَرِیْمٌ   بوءنَا حَیْثُ بَاء عَبْدُالْقَادِر

ردیف الباء

در حشر گہ جنابِ عبدالقادر   چوں نشر کنی کتابِ عبدالقادر
از قادریاں مَجُو جُدا گانہ حساب   مدّے شُمر از حسابِ عبدالقادر

رباعی

اللّٰہ اللّٰہ ربِّ عبدالقادر   دارد واللّٰہ حُبِّ عبدالقادر
از وصفِ خدائے تو نصیبت دادند   طُوبٰی لکَ اے مُحِبِّ عبدالقادر

ردیف التاء

اے عاجزِ تو قدرت عبدالقادر   محتاجِ درت دولت عبدالقادر
از حُرمتِ ایں قدرت و دولت بخشائے   بر عاجز پُر حاجت عبدالقادر

رباعی

تنزیلِ مکمل سُت عبدالقادر　　تکمیلِ منزل سُت عبدالقادر
گس نیست جزاو در دو کنار این سیر　　خود ختم و خود اول سُت عبدالقادر

رباعی

مِمّا[1] لَا تعلمو[2] سُت عبدالقادر　　مستور رستور[3] ہو سُت عبدالقادر
میجو میگو پس آنچہ دانی کہ ورا سُت　　از جستن و گفتن او سُت عبدالقادر

رباعی مستزاد

می گفت دلم کہ جاں سُت عبدالقادر　　گفتم اَحْسَنْت
جاں گفت کہ دینِ مان[4] سُت عبدالقادر　　گفتم آمنت

1: اِسْقَاطُ النُّوْنِ مِنَ الْمُضَارِعِ شَائِعٌ نَظْمًا وَّ نَثْرًا وَ عَلَيْهِ يخرجُ حَدِيْثٌ: "كَمَا تكُوْنُوْا يُوَلّٰى عَلَيْكُمْ" ۔۱۲

2: سَيِّدُنَا رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ فرمود: قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: "وَيَخْلُقُ مَالَا تَعْلَمُوْنَ" اَنَا مِمَّا لَا تَعْلَمُوْنَ۔۱۲

3: هُوَ اِشَارَةٌ بِذَاتِ اَحَدِيَّت جَلَّ شَانُهٗ ۔۱۲

4: "مان" بزیادتِ "ن" بمعنی ماست۔۱۲

دیں گفت حیاتِ من از مَن و گفتم [1] ایں جملہ صِفات
از ذات بگو کہ آں سُتْ عبدالقادر گم شُد مَن وَ اَنت

رباعی

عقل و حصر صفاتِ عبدالقادر شبکُور و نُجوم
وہم و اِدراک ذاتِ عبدالقادر وَہ شارِق و بُوم
عجز آں کہ بکُنہِ قطرہ آبے نَرسید زعم آں کہ رَسَد
تا قَعرِ یمِ وفُراتِ عبدالقادر قدرت مَعلوم

ردیف الثاء

دیں را اَصل حدیث عبدالقادر
اہلِ دیں را مُغیث عبدالقادر
اُو مَا یَنْطِقُ عَنِ الْھَوٰی ایں شَرحش
قرآن احمد، حدیث عبدالقادر

---

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्ख़े में येह मिस्रआ़ यूं है :

دیں گفت حیاتِ من .....گفتم ایں جملہ صفات

जब कि मज़्कूरा तीनों में यूं है :

دیں گفت حیاتِ من از من و گفتم ایں جملہ صفات इ़ल्मिय्या ।

ردیف الجیم

اے رِفعت بخشِ تاجِ عبدالقادر
پُرنور کُن سراجِ عبدالقادر
آں تاج و سراج باز بَرکُن یا رب
بُستاں ز شہاں خِراجِ عبدالقادر

ردیف الحاء

پاک اَست زِ باک طَرح عبدالقادر
وَجْہی سُتُ بَری زِ جَرح عبدالقادر
جَرحش کہ توَاند کہ زِ کلکِ قدرت
احمد مَتن سُتُ و شَرح عبدالقادر

رباعی

اے عام کن صلاح عبدالقادر
انعام کن فلاح عبدالقادر
من سر تا پا جُناح گشتم فریاد
اے سر تا پا نَجاح عبدالقادر

ردیف الخاء

اے ظلِّ الٰہ شیخ عبدالقادر
اے بندہ پناہ شیخ عبدالقادر
محتاج و گدائیم و تو ذُوالتاج و کریم
شَیْئًا لِلّٰہ شیخ عبدالقادر

رباعی

ماہِ عربی اے رُخِ عبدالقادر
نُورے ز َربی اے رُخِ عبدالقادر
اِمروز زِ دی دی زِ پَری خوبتری
بدرے عجمی اے رُخِ عبدالقادر

ردیف الدال

دیں زاد کہ زاد زاد عبدالقادر
دل داد کہ داد داد عبدالقادر
ایں جاں چہ کُنَم نذر سَگش باد و مَرا
جاں باد کہ باد باد عبدالقادر

ردیف الذال

سلطانِ جہاں مَعاذ عبدالقادر
تَن مَلجا و جاں مَلاذ عبدالقادر
صحن آرَد اَمانی و اماں بارد بام
آں را کہ دِہَد عِیاذ عبدالقادر

ردیف الراء

پر آب بود کوثرِ عبدالقادر
خوش تاب بود گوہرِ عبدالقادر
در ظلمتِ ظِمّا آب و تابے دارَم
اے حشر بیا بر درِ عبدالقادر

رباعی

یا ربّ نیم از دَرخورِ عبدالقادر
دل دادَہ مَراں از درِ عبدالقادر
ایں ننگ مُریدے ار نَرفتہ بمراد
رفتن مَدِہ از خاطرِ عبدالقادر

رباعی

اے دافعِ ظلم افسر عبدالقادر
اے دفعِ ظلم خنجر عبدالقادر
دور از تو جہاں بمرگ نزدیک بیا
بَرکَش زِ دَوان کِشوَر عبدالقادر

رباعی

جِس کُن انوارِ بدرِ عبدالقادر
بس کن ز اسرارِ صدرِ عبدالقادر
خود قدرتِ قدر نامقدر ز قدر
جوئی مقدارِ قدر عبدالقادر

ردیف الزاء

اے فضلِ تو برگ و ساز عبدالقادر
فیضِ تو چمن طِراز عبدالقادر
آن کُن کہ رَسَد قُمری بے بال و پرے
در سایۂ سَروِناز عبدالقادر

ردیف السین

درد از درِ مجلسِ عبدالقادر
دور اَست سگ بیکس عبدالقادر
حال ایں و ہوَس آنکہ چو میرَم بِبُرَم
سر در قدمِ اَقدس عبدالقادر

رباعی مستزاد

گُفتم تاجِ رُؤس عبدالقادر سَرخَم گردید
جانا رُوحِ نُفُوس عبدالقادر برخود بالِید
رَزمَا اُو قلبِ فوجِ دیں رادل وجاں گشت زدْ نوبَتِ فتح
بَزمَا بَزمَا عَرُوس عبدالقادر شاداں رَقصِید

ردیف الشین

بالا ست بلند فرش عبدالقادر

بر قدر بلند عرش عبدالقادر
آں[1] بدر عَرِیش بدر مہ پارہ عرش
تابِنْدَہ بَہ بِبیں بفرش عبدالقادر

رباعی

گُسْتَرْدَہ بعَرش فرش عبدالقادر
آوَرْدَہ بفرش عرش عبدالقادر
ایں کرد کہ گرد کرد شاہے کہ فَزود
بالا وَ فُرود عرش عبدالقادر

رباعی

عرشِ شرف سُت فرشِ عبدالقادر
فرشِ شرف سُت عرشِ عبدالقادر

---

[1] ''بدرِ اول'' بمعنی ماہِ شبِ چہاردَہ وُ ''بدرِ دوم'' جائے ہر حَرب کہ اَولین جہادِ اسلام آنجا واقع شُدہ۔ عریش خانہ کہ از نَے بِنا کُنَند، در حدیث اَست سیّدِ عالم صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم روزِ بدر فَرمود: '' مَرا بکارِ موسیٰ روگردانی نیست'' عریشے ہمچو عریشِ موسی سازَند ہمچناں ساختَند وسیّدِ عالم صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم دراو جلوہ ارزانی داشت ۔۱۲

یعنی تا سر بپائے (......) فرش نمود[1]
سَرہا شُدہ فَرش عرش عبدالقادر

ردیف الصاد

فن گر چہ نہ شُد بر نَص عبدالقادر
جاں دارد مُہر از فَص عبدالقادر
گر ناقِصَم ایں نسبتِ کامل چہ خوش اَست
کاں بندہ رضا ناقص عبدالقادر

رباعی

بِالکسر منم مُخلِص عبدالقادر
سر بر قدم خلص عبدالقادر
بر کَسر چو رحم آرَد فتحش چہ عَجب
بِالفتح شَوَم مخلص عبدالقادر

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्खे में येह मिस्रआ यूं है :
تا سر بپائے (......) فرش نمود
जब कि मज़्कूरा तीनों नुस्ख़ों में यूं है : या'नी تا سر بپائے فرش نمود इल्मिय्या ।

ردیف الضاد

تمکینِ گُلے از رِیاضِ عبدالقادر
تلوینِ نَمے از حِیاضِ عبدالقادر
نورِ دلِ عارِفاں کہ شبِ صبح نُما سُت
سَطرے بُوَد از بیاضِ عبدالقادر

ردیف الطاء

اِینجا وجہِ نِشاط عبدالقادر
آنجا شمعِ صِراط عبدالقادر
بکُشادہ دَور دادہ باد بنہادہ بجود[1]
دروازہ صَلا سِماط عبدالقادر

ردیف الظاء

خوباں چو گل بوَعظ عبدالقادر
اَعیان رسل بوعظ عبدالقادر

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्ख़े में येह मिस्रआ यूं है :
بکشادہ .... بنہادہ بجود
जब कि मज़्कूरा तीनों में यूं है : بکشادہ دور دادہ باد بنہادہ بجود । इल्मिय्या

پَروانہ صفت جمع کہ خود جلوہ نما ست
شمع جزو کل بوعظ عبدالقادر

ردیف العین

خُور راتِبہ خور زِ شمع عبدالقادر
مَہ آزقہ بر زِ شمع عبدالقادر
ایں نور و سُرور شیرٔث از صبح ز چیست
دُودیُست مگر ز شمع عبدالقادر

رباعی

اَ ما مگُزور ز شمعِ عبدالقادر
مِہری بِنگر ز شمعِ عبدالقادر
کارِیکہ زِ خور بہ نیم مَہ دِیدی بیں
در نیم نظر زِ شمعِ عبدالقادر

رباعی

بر وحدتِ او رابع عبدالقادر
یک شاہد و دو سابع عبدالقادر

انجامِ وے آغازِ رسالت باشد
اینک گو ہم تابع عبدالقادر

رباعی مستزاد

واحد چو نہم رابع عبدالقادر در دامنِ دال
زائد چو سوم سابع عبدالقادر ہم مسکنِ دال
یعنی بُدلائے ہفت واَوتاد چہار توحید سرا
یک یک بیکے تابع عبدالقادر اندر فنِ دال

ردیف الغین

مے نے نور چراغ عبدالقادر
مے نے نورے زِ باغ عبدالقادر
ہم آبِ رُشد ہَست و ہم مایۂ خُلد
یا رَبّ چہ خوش ست اَیاغ عبدالقادر

ردیف الفاء

عَطْفًا عَطْفًا عَطُوف عبدالقادر
رَأْفًا رَأْفًا رَءُوف عبدالقادر

اے آنکہ بدستِ تست تصریفِ امور

اِصرِف عنّا الصُّرُوف عبدالقادر

ردیف القاف

خیرہ است خرد زِ برقِ عبدالقادر

تیرہ است حضورِ شرقِ عبدالقادر

خورشید بہ پرتوِ سُہا جُستن چیست

اے جُستہ بعقلِ فرقِ عبدالقادر

ردیف الکاف

آخرِ نیم اے مالک عبدالقادر

مملوک و مکین مالک عبدالقادر[1]

مپسند کہ گویند بایں نسبت دبند

کاں بندہ فلاں ہالِک عبدالقادر

---

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्ख़े में येह मिस्रआ़ यूं है :

مملوک و..... مالک عبدالقادر

जब कि मज़्कूरा तीनों में इस त़रह़ है : مملوک ومکین مالک عبدالقادر । इ़ल्मिय्या

ردیف اللام

نامدُ زِ سَلف عَدِیْلِ عبدالقادر
نایَدْ بَخَلف بَدِیْلِ عبدالقادر
مثلش گر زِ اہلِ قُرب جُوئی گُوئی
عبدالقادر مَثِیْلِ عبدالقادر

رباعی

حَشر سُت و توئی کَفیل عبدالقادر
جاہَت بَہ شہِ جلیل عبدالقادر
دَردا دَرِ دارِ عدل آمدُ مجرم
زُودآ زُودآ وکیل عبدالقادر

ردیف المیم

یا ربّ بجمالِ نامِ عبدالقادر
یا ربّ بنوالِ عامِ عبدالقادر
مَنِگر بقُصور و نقصِ ما قادِریاں
بِنِگر بکمالِ تامِ عبدالقادر

رباعی

ہر صبحِ رہَت مَرامِ عبدالقادر
ہر شامِ درت مقامِ عبدالقادر
بگزر زِ سَپید و سِیہ قادریاں!
از حرمتِ صبح و شامِ عبدالقادر

رباعی

عبدالقادر کریم عبدالقادر
عبدالقادر عظیم عبدالقادر
رَحمانَت رَبّ و رحمتِ عالَم اَب
رحمتِ رحمت رحیم عبدالقادر

رباعی

در جود سَمر اے یم عبدالقادر
صد بحر بِبُر اے یم عبدالقادر
دور از تو سگِ تِشنہ لَبے می مِیرَد
یک موجِ دِگر اے یمِ عبدالقادر

رباعی

صدّیق صِفت حلیم عبدالقادر
فاروق نَمَط حکیم عبدالقادر
مانندِ غنی کریم عبدالقادر
در رنگِ علی علیم عبدالقادر

ردیف النون

دَستے زَدم اے ضامن عبدالقادر
در دامنِ جاں بامن عبدالقادر
یا ربّ چو خود ایں دامن گُستَردَہٗ تُست
گُستَردہ مچیں دامن عبدالقادر

رباعی

یا ربّ قُرصے زِ خوانِ عبدالقادر
داریم حقّے بَنانِ عبدالقادر
ایں نِسبت بس کہ عاجزانِ اُوئیم
رَحمے بر عاجزانِ عبدالقادر

رباعی

جُود سُت بارِشِ شانِ عبدالقادر
بُود سُت و بُود ازانِ عبدالقادر
جنّت بگدا دِہَنْدُ و مِنَّت نہ نِہَنْدُ
وَہ سُنّتِ خاندانِ عبدالقادر

ردیف الواو

خوبان خو بَندے چو عبدالقادر
شیریناں قَنْدَے چو عبدالقادر
محبوباں یکدِگر بہ اَفزائشِ حُسن
چند و صد چَنْدَے چو عبدالقادر

رباعی

خواہی کاہی علُوِّ عبدالقادر
نامی سامی سُمُوِّ عبدالقادر
ہُشْدار کہ با خدائے خود می جنگی
مُتْ غَیْظًا اے عَدُوِّ عبدالقادر

رباعی

مَہ فرشِ کتاں در دَوِ عبدالقادر

خُور شپّرہ ساں در جَوِ عبدالقادر

آشُفتہ مَہ و شیفتہ می گردَد مہر

در جلوۂ ماہِ نوِ عبدالقادر

ردیف الہاء

حَمْدًا لکَ اے اِلٰہِ عبدالقادر

اے مالک و بادشاہِ عبدالقادر

اے خاک بَراہِ تو سَرِ جُملہ سَراں

کُن خاک مَرا بَراہِ عبدالقادر

رباعی

بے جان و بجانم شَہ عبدالقادر

کَس جُزِ تو نَدانم شَہ عبدالقادر

بَدْ بُودَم و بَدْ گردَم و بر نیکیِ تو

نیک سُتُ گُمانم شَہ عبدالقادر

رباعی

بہرِ سرِ ہو تجلیہ عبدالقادر
ہم تجلیہ را تخلیہ عبدالقادر
بر متنِ متینِ احدیث احمد
شرح است براں منہیہ عبدالقادر

رباعی

از عارضہ نیست وجہِ عبدالقادر
ذاتی ست ولائے وجہِ عبدالقادر
ہر کس شدہ محبوب بوجہِ صفتے
عبدالقادر بوجہِ عبدالقادر

رباعی

خور نور ستد از رہِ عبدالقادر
ہم اذنِ طلوع از شہِ عبدالقادر
ماہ است گدائے درِ مہر و ایں جا
مہر ست گدائے مہِ عبدالقادر

رباعی مستزاد

بر اَوج ترقی شُدہ عبدالقادر　　تا نامِ خدا
خیمہ مُسْتَنْزَل زَدہ عبدالقادر　　ناس اَندوہدیٰ
بِالجملہ بقرآن رَشاد و اِرشاد　　درُ بدء و خِتام
بِسمِ اللہ و ناس آمدَہ عبدالقادر　　حمد سُت اَبدا

ردیف الیاء

اے قادر و اے خدائے عبدالقادر
قُدرت دِہِ دَسْتْہائے عبدالقادر
بر عاجزیِ ما نظرِ رحمت کُن
رَحم اے قادر برائے عبدالقادر

رباعی

جاں بخش مَرا بَپائے عبدالقادر
جاں بخش تہِ لِوائے عبدالقادر
از صَد چُو رَضا گُزِشتے از بہرِ رضاش
اِینہم بعلم برائے عبدالقادر

رباعی

عین آمدہ اِبتدائے عبدالقادر
اَز رُویَتِ اَمر رائے عبدالقادر
از رُویتِ اُو عَینِ مَرا روشن کُن
روشن کُن عین و رائے عبدالقادر

رباعی

عیدِ یکتا لِقائے عبدالقادر
دُربار درِ عطائے عبدالقادر
عبدا بہ لقائے اُو چو ہمزہ گم شد
تا دَریابی بَپائے عبدالقادر

رباعی

دل حَرف مَزَن سوائے عبدالقادر
حاجت دانَدْ عطائے عبدالقادر
پیشَش ہم اَزُو شفیع اَنگیز و بِگُو
عبدالقادر برائے عبدالقادر

رباعی مستزاد

اُفتادَہ در اول بِدایَت باساں　　اِلصاق طلب
گرویدہ بآخر تجسُّس خنداں　　عین ساں بطرب
یعنی شہِ جیلاں زشہاں بس کہ ہمونست　　در مُصحف قرب
بِسمِ اللّٰہ و ناس را شروع و پایاں　　اَلْحَمْدُ لِرَب

❁❁❁❁❁

पहाड़ों का सलाम करना

हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मैं हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मक्कए मुकर्रमा में एक त़रफ़ को निकला तो मैं ने देखा कि जो दरख़्त और पहाड़ भी सामने आता है उस से ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه'' की आवाज़ आती है और मैं ख़ुद उस आवाज़ को अपने कानों से सुन रहा था।

(سنن الترمذی،الحدیث:٣٦٤٦،ج٥،ص ٣٥٩)

اکسیر اعظم ۱۳۰۲ھ

قصیدۃ مجیدۃ مقبولۃ اِنْ شَاءَ اللہُ تعالٰی فی منقبتِ سیّدنا الغوث الاعظم رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ مطلعِ تشبیب وذکرِ عاشق شُدَنِ حبیب

اَیکہ صد جاں بستہ در ہر گوشۂ داماں توئی
دامن افشانی و جاں بار و چرا بیجاں توئی

آں کدامیں سنگدل عیارۂ خونخوارۂ
کز غمش با جانِ نازک در تپِ ہجراں توئی

سروِناز خویشتن را بر کہ قُمری کردۂ
عندلیبِ کیستی چوں خود گلِ خنداں توئی

ہم رُخاں آئینہ داری ہم لباں شکر شکن
خود بخود در نغمہ آئی باز خود حیراں توئی

جوئے خوں نرگس چہ ریزد گر بچشماں نرگسی

بوئے خوں از گل چہ خیزد گر بہ تن ریحاں توئی

آں حُسینیتی کہ جانِ حُسن می نازد بتو

می ندانم از چہ مرگِ عاشقی جویاں توئی

نو غزالِ کمسنِ من سوئے ویراں می رمی

ہیچ ویرانہ بُوَد جائیکہ در جولاں توئی

سینہ حُسن آباد شد ترسم نُمائی در دِلم

زانکہ از وحشت رسیدہ در دلِ ویراں توئی

سوختم من سوختم اے تاب حُسنتُ شعلہ خیز

آتشتُ در جاں بِبازد خود چرا سوزاں توئی

ایں چنینی اَیکہ ماہت زیرِ ابرِ عاشقی ست

آہ اگر بے پردہ روزے بر سرِ لمعاں توئی

سینہ گر بر سینہ ام مالی غَمَتُ چِینم مَگر
دانَم اِینہم از غرض دانی کہ بس ناداں توئی

ماہِ من مہ بندہ ات مَہ را چہ مانی کاینچنیں
سینہ وقفِ داغ و بے خوابِ سرگرداں توئی

عالَمے کشتہ بَناز اِینجا چہ ماندی در نیاز
کار فرما فتنہ را آخر ہماں فتّاں توئی

دامِ کاکُل بہرِ آں صیَّاد خود ہم می کشا
یا ہمیں مشتِ پرِ ما را بلائے جاں توئی

باغہا گشتم بجانِ تو کہ بے مانا ستی
یارب آں گل خود چہ گل باشد کہ بلبل ساں توئی

منکہ می گِریَم سزائے من کہ رُویَت دیدہ ام
تو کہ آئینہ نہ بینی از چہ رُو گریاں توئی

یا مگر خود را بروئے خویش عاشق کردۂ
یا حسیں تر دیدۂ از خود کہ صیدِ آں توئی

گریز ربط آمیز بسوئے مدح ذوق انگیز

یا ہمانا پرتوے از شمعِ جیلاں بر تُو تافت
کاینچنیں از تابش و تپ ہر دو باساماں توئی

آں شہے کاندرِ پناہش حسن و عشق آسودہ اند
ہر دو را ایما کہ شاہا ملجاء مایاں توئی

حسنِ رنگش عشقِ بویش ہر دو بر رویش نثار
ایں سراید جاں توئی واں نغمہ زن جاناں توئی

عشق در نازش کہ تا جاناں رسانیدم ترا
حسن در بالش کہ خود شاخی ز محبوباں توئی

عشق گفتش سیدا برخیز و رو بر خاک نہ
حسن گفت از عرش بگزر پرتوِ یزداں توئی

اَلْاِلْتِفَاتُ اِلَی الْخِطَابِ مَعَ تَقْرِیْرِ جَامِعِیَّۃِ الْحُسْنِ وَالْعِشْق

سَرو َرا جاں پَرو َرا حیرانم اندر کارِ تو
حیرتم در تو فزوں بادا سرِ پنہاں توئی

سوزی اَفروزی گدازی بزمِ جاں روشن کنی
شب بپا اِستادہ گریاں با دل بریاں توئی

گردِ تو پروانۂ روئے تو یکساں ہر طرف
روشنم شُد کزِ ہمہ رُو شمع اَفروزاں توئی

شہ کریم ست اے رضؔا در مدح سرکن مطلعے
شکرت بخشد اگر طوطیِ مدحت خواں توئی

اوّل مطالع المدح

پیرِ پیراں میرِ میراں اے شہِ جیلاں توئی
اُنسِ جانِ قُدسیان وغوثِ اِنس و جاں توئی

زیبِ مطلع

سَر توئی سَروَر توئی سر را سَر و ساماں توئی
جاں توئی جاناں توئی جاں را قرارِ جاں توئی

ظِلِّ ذاتِ کِبریا و عکسِ حُسنِ مُصطَفےٰ
مصطفےٰ خورشید و آں خورشید را لَمعاں توئی

مَنْ رَاٰنِی قَدْ رَاَی الْحق گر بگوئی می سَزَد
زانکِہ ماہِ طَیبہ را آئینۂ تاباں توئی

بَارَكَ اللّٰه نَوبہارِ لالہ زارِ مصطفےٰ
وَہ چہ رنگ اَست اِینکِہ رنگِ رَوضۂ رِضواں توئی

جُوشَدُ از قدِ تو سَرْوُ و بارَد از رُوئے تو گُل
خوش گُلستانے کہ باشی طُرفہ سَروِستاں توئی

آنکِہ گُویَنْدُ اَولیا را ہَسْتُ قدرت از اِلٰہ
باز گردانَنْدُ تیر از نیم راہ اِیناں توئی

از تو میریم و زییم و عیشِ جاویداں کنیم
جاں سِتاں جاں بخش جاں پَروَر توئی دہاں توئی

کُہنہ جانے دادہ جانے چوں تو دربَر یافتیم
وَہ کہ ماں چنداں گرانیم وچنیں ارزاں توئی

عالمِ اُمّی چہ تعلیمے عجیبت کردہ است
اَوْحَشَ اللہ بر عُلُومَت سِرو غائب داں توئی

فِی ترقیاتہٖ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ

قبلہ گاہِ جان و دل پاکی ز لوثِ آب و گل
رخت بالا بردہ از مقصورۂ ارکاں توئی

شہسوارِ من چہ می تازی کہ در گامِ نخست
پاک بیروں تاختہ زیں ساکن و گرداں توئی

تا پری بخشودۂ از عرش بالا بودۂ!
آں قوی پر بازِ اشہب صاحبِ طیراں توئی

سالہا شُد زیرِ مہمیز ست اسپِ سالکاں
تا عناں در دست گیری آں سوئے امکاں توئی

فی کَوۡنِہٖ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ سِرًّا لَا یُدۡرِکُ

ایں چہ شکل است اینکہ داری تو کہ ظِلّے برتری
صورتے بگرفتہ بر اندازۂ اَکواں توئی

یا مگر آئینہ از غیب ایں سو کردہ روے
عکس می جوشد نمایاں درنظر زِ نَیساں توئی

یا مگر نوعے دگر را ہم بشر نامیدہ اند
یا تعالَی اللہ از انساں گرہمیں انساں توئی

فِی جَامِعِیَّتِہٖ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنۡہُ لِکَمَالَاتِ الظَّاھِرِ وَالۡبَاطِن

شَرع از رُویَت چکَدُ عِرفاں زِ پہلُویَت دَمَد
ہم بہارِ ایں گُل و ہم ابرِ آں باراں توئی

پردہ بَرگیر از رُخَت اے مَہ کہ شرحِ مِلّتی
رُخ بپُوش اِیجاں کہ رَمزِ باطنِ قرآں توئی

ہم توئی قُطبِ جنوب و ہم توئی قطبِ شمال
نے غلط گردَم مُحیطِ عالمِ عِرفاں توئی

ثابِت و سَیّارَہ ہم دَر تُست و عرشِ اَعظمی
اہلِ تمکین اہلِ تلوِیں جملہ را سُلطاں توئی

فِی اِرْثِہٖ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ عَنِ الْاَنْبِیَاءِ وَالْخُلَفَاءِ وَنِیَابَۃً لَّھُمْ

مُصطفٰے سلطانِ عالی جاہ و در سرکارِ اُو
ناظِمِ ذُوالقَدر بالا دست والا شاں توئی

اِقتدارِ کُن مَکُن حق مصطفٰے را دادَہ اَست
زیرِ تختِ مصطفٰے بر کرسیِ دیواں توئی

دَورِ آخر نَشْوِ تو بر قلبِ اِبراہیم شُد
دَورِ اوّل ہم نَشینِ مُوسیِ عِمراں توئی

ہم خلیلِ خوانِ رِفق و ہم ذَبِیحِ تیغِ عِشق!
نوحِ کشتیِ غریباں خضرِ گمراہاں توئی

مُوسیِ طورِ جلال و عیسیِ چَرخِ کمال
یوسفِ مصرِ جَمال اَیوّبِ صَبرِستاں توئی

تاجِ صِدّیقی بَسر شاہِ جہاں آراستی
تیغِ فاروقی بقبضہ داوَرِ گیہاں توئی

ہم دونورِجان وتَن داری و ہم سَیف وعلم
ہم تو ذُوالنُّورَینی وہم حیدرِ دَوراں توئی

۞۞۞۞۞

काश ! पहले मैं दफ़्न हो जाता

दरबारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शाइ़र ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़र्ज़ करते हैं : ऐ मेरे आक़ा ! काश ऐसा होता कि मैं आप से पहले बक़ीउ़ल ग़रक़द में दफ़्न हो जाता काश ! मैं आज के दिन के लिये पैदा ही न हुवा होता, ख़ुदा की क़सम ! जब तक मैं ज़िन्दा रहूंगा अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये रोता और तड़पता रहूंगा । (السیرۃ النبویۃ،شعرحسان بن ثابت فی مرثیتہ،ج٤، ص٥٥٨ ـ ٥٦٢)

فِی تَفْضِیْلِهٖ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ عَلَی الْاَوْلِیَاء

اَولیا را گر گُہر باشد تو بحرِ گوہری
وَرْ بَدَستِ شاں زَرے دادَند زرْ را کاں توئی

واصلاں را در مقامِ قُرب شانے دادَہ اَند
شوکتِ شاں شُد زِ شان وشانِ شانِ شاں توئی

قَصرِ عارف ہر چہ بالاتر بتو محتاج تر
نے ہمیں بنّا کہ ہم بُنیادِ ایں بُنیاں توئی

فَصْلٌ مِنْهُ فِیْ شَیْءٍ مِنَ التَّلْمِیْحَات

آنکہ پایَش بر رِقابِ اَولیائے عالَم اَست
و آنکہ ایں فَرمود حق فرمود بِاللہ آں توئی

اَندَرِیں قول آنچہ تخصِیصاتِ بیجا کَردَہ اَند
از زَلَل یا ازضَلالت پاک ازاں بُہتاں توئی

بہرِ پایَت خواجۂ ہنداں شہِ گیواں جناب
بَلْ عَلٰی عَیْنِیْ وَرَاْسِیْ گُوید آں خاقاں توئی

در تنِ مردانِ غیب آتش زِ وعظت می زنی
باز خود آں کشتِ آتش دیدہ رائیساں توئی

آں کہ از بیتُ المقدس تا درت یک گام داشت
از تو رہ می پرسد و منجیش از نقصاں توئی

رہروانِ قدس اگر آنجا نہ بیندرت رواست
زانکہ اندر حجلۂ قدسی نہ در میداں توئی

سبز خلعت با طرازِ قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَد
آں مکرّم را کہ بخشید ار نہ در ایواں توئی

فَصْلٌ مِنْہُ فِی تَفْضِیلِہٖ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ عَلٰی مَشَائِخِہِ الْکِرَام

گو شیوخت را تواں گفت از رہِ القائے نور
کافتابانند ایشان و مہِ تاباں توئی

لیک سیرِ شاں بود بر مستقر و از کجا
آں ترقیِ منازل کاندراں ہر آں توئی

ماہِ مَنْ لَّا یَنْبَغِیْ لِلشَّمْسِ اِدْرَاکُ الْقَمَر[1]
خاصہ چوں از عَادَ کَالْعُرْجُوْن[2] در اِطْمیناں توئی

گور چشمِ بد چہ می بالی پَری بودی ہلال
دی قَمر گشتی و اِمْشَب بَدر و بہتر زاں توئی

فِیْ تَقْرِیْرِ عَیْشِہٖ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

اَصْفِیا در جُہد و تو شاہانہ عِشرت می کُنی
نُوش بادَت زانکہ خود شایانِ ہر ساماں توئی

بُلبلاں را سوز و ساز و سوزِ اِیشاں کم مَباد
گلرُخاں را زِیب زِیبَد زیبِ ایں بُستاں توئی

خوش خور و خوش پوش و خوش زِی کورِیِ چشمِ عدُوّ
شاہِ اِقلیمِ تَن و سلطانِ مُلکِ جاں توئی

---

1 : لَا الشَّمْسُ یَنْبَغِیْ لَهَا اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ۔ शे'र में इस आयत की त़रफ़ इशारा है। मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर

2 : حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِیْمِ (सूरए यासीन शरीफ़) मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर

کامرانی کُن بکامِ دوستاں اے مَن فِداتْ
چشمِ حاسد کُور بادا نَوشہ ذی شاں توئی

شاد زِی اے نَو عَروسِ شادمانی شاد زِی
چوں بِحَمْدِ اللّٰہ در مُشکُوئے ایں سلطاں توئی

بلکہ لاَ وَاللّٰہ کاینہا ہم نہ از خود کردَہَ
رَفْت فرماں ایں چُنیں و تابعِ فرماں توئی

ترکِ نسبت گُفتم از مَن لفظِ مُحی الدّیں مَخواہ
زانکہ در دینِ رضا ہم دین وہم اِیماں توئی

ہم بِدِقَّت ہم بشُہرت ہم بہ نعتِ اولیا
فارغ از وصفِ فلان و مِدحتِ بَہْماں توئی

تَمْهِیْدُ عَرْضِ الْحَاجَة

بے نوایاں را نوائے ذکرِ عَیشت کردہ اَم
زار نالاں را صَلائے گُوش بر اَفغاں توئی

چارہَ کُن اے عطائے بنِ کریم اِبنُ الکریم
ظرفِ من معلوم و بیحد وافر و جُوشاں توئی

با ہمیں دستِ دوتا و دامنِ کوتاہ و تنگ
اَز چہ رِگیرَم در چہ بنہم بسکہ بے پایاں توئی

کوہ نہ دامن دِہد وقت آنکہ پُر جوش آمدی
دست در بازار نفروشَند بر فیضاں توئی

اَلْمَطْلَعُ الرَّابِعُ فِی الْاِسْتِمْدَاد

رُو مَتاب از ما بداں چوں مایہَ غُفراں توئی
آیہَ رحمت توئی آئینہَ رحماں توئی

بندہ اَت غیرت بُرد گر بر درِ غیرت رَوَد
وَر رَوَد چوں بِنگَرد ہم شاہِ آں اِیواں توئی

سادَگیم بیں کہ می جُویم زِ تو دَرمانِ درد
درد گو دَرماں کُجا ہم ایں توئی ہم آں توئی

اَلْاِسْتِعَانَۃُ لِلْاِسْلَام

دینِ باباۓ خُودَت را از سرِ نو زندہ کُن
سیّدا آخر نہ عمر سیّدُ الاذیاں توئی

کافراں توہینِ اسلام آشکارا می کُنَند
آہ اے عزِّ مسلماناں کُجا پِنہاں توئی

تا بیاید مَہدی اَز اَرواح و عیسٰی از فلک
جلوہَ کُن خود مَسیحا کار و مَہدی شاں توئی

کشتیِ مِلت بمَوجے کَالْجبالْ اُفتادہ اَست
مَن سَرَت گردَم بیا چوں نوحِ ایں طوفاں توئی

باد ریزَد مَوج موج و موج خیزَد فوج فوج
بر سر وقتِ غَریباں رَس چو کشتی باں توئی

اِسْتِمْدَادُ الْعَبْدِ لِنَفْسِہٖ

حَاشَ لِلّٰہ تنگ گردَد جاہَت از ہچوں مَنے
یَا عَمِیْمَ الْجُوْد بس با وُسعتِ داماں توئی

نامہٗ خود گر سِیَہ کردم سِیہ تر کردہ گیر
بلکہ زینساں صد دِگر ہم چوں مہِ رَخشاں توئی

گُم چہ شُد گر ریزہ گشتم نگ بدَستت مومیا
کم چہ شد گر سُوختم خود چشمہٗ حیواں توئی

سخت ناکس مردکے اَم گر نہ رَقصم شاد شاد
چوں شُنیدم ھِمْ طِبْ وَاشْطَحْ وَغَن گویاں توئی

وقت گوہر خوش اگر دَریاش در دل جائے داد
غَرقہ خس را ہم نہ بیند خس مَنم عمّاں توئی

کوہِ مَن کاہست اگر دَستے دِہی وقتِ حساب
کاہِ من کوہست اگر بر پلّہٗ میزاں توئی

اَلْمُبَاھَاتُ الْجَلِیَّۃُ بِاِظْھَارِ نِسْبَۃِ الْعَبْدِیَّۃ

احمد ہندی رضا ابنِ نقی ابنِ رضا
از اَب و جَد بندہ و واقف زِ ہر عُنواں توئی

مادرم باشد کنیز تو پدر باشد غلام
خانہ زادِ کہنہ ام آقائے خان و ماں توئی

من نمک پروردہ ام تا شیرِ مادر خوردہ ام
لِلّٰہِ الْمِنَّۃ شکر بخشِ نمک خوراں توئی

خطِّ آزادی نہ خواہم بندگیت خسروی است
یللّٰے گر بندہ ام خوش مالکِ غلاماں توئی

اِنْتِسَابُ الْمَدَّاحِ اِلٰی کِلَابِ الْبَابِ الْعَالِی

بر سرِ خوانِ کرم محروم نگزارند سگ
من سگ و ابرار مہمانان و صاحبِ خواں توئی

سگ بیاں شوائد و جودت نہ پابندِ بیانست
کامِ سگ دانی و قادر بر عطائے آں توئی

گر بسنگے می زنی خود مالکِ جان و تنی
ور بہ نعمت می نوازی منّتِ منّاں توئی

پارہَ نانے بِفَرما تا سوئے مَن اَفگنند
ہمّتِ سگ ایں قدر دیگر نَوال اَفشاں توئی

من کہ سگ باشَم زِکوئے تو کُجا بیروں رَوَم
چوں یقیں دانَم کہ سگ را نیز وجہِ ناں توئی

دَر کُشادہ خواں نِہادہ سگ گُرسنہ شَہ کریم
چیست حرفِ رَفتن و مختارِ خوان و زاں توئی

دور بنشینَم زمیں بوسَم فتم لابہ کُنَم
چشم در تو بنَدَم و دانَم کہ ذُوالاحساں توئی

لِلّٰہِ الْعِزَّۃ سگِ ہندی و در کوئے تو بار
آرے ابنِ رَحمۃ لِلّعالَمیں اے جاں توئی

ہر سگے را بر درِ فَیْضَتْ چُناں دل می دِہَنْدْ
مرحبا خوش آ وَ بِنْشِیں سگ نہٖ مہماں توئی

گر پریشاں گرد وقتِ خادمانِ عوعوم
خامُش اہلِ درد را مپسند چوں درماں توئی

وائے مَن گر جلوہ فرمائی و مَن مانَد بمن
من زمن بُستاں و جایش در دِلم منشاں توئی

قادری بُودَن رضا را مفت باغِ خُلد داد
مَن نمی گُفتم کہ آقا مایۂ غُفراں توئی

❁❁❁❁❁

सत्तर 70 बरस का जवान

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के हक़ में हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दुआ फ़रमाई : اَفۡلَحَ وَجۡھُکَ اَللّٰھُمَّ بَارِکۡ لَہٗ فِیۡ شَعۡرِہٖ وَبَشَرِہٖ या'नी फ़लाह़ वाला हो जाए तेरा चेहरा, या अल्लाह ! इस के बाल और इस की खाल में ब-र-कत दे। सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सत्तर बरस की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई मगर उन का एक बाल भी सफ़ेद नहीं हुवा था न बदन में झुर्रियां पड़ी थीं, चेहरे पर जवानी की ऐसी रौनक़ थी कि गोया अभी पन्दरह बरस के जवान हैं। (الشفاء،ج۱،ص۳۲۷)

مثنوی ردّ امثالیہ

گریہ کُن بُلبلا از رنج و غم
چاک کن اے گُل گریباں از اَلَم

سُنبُلا از سینہ بَرکَش آہِ سرد
اے قَمر از فَرطِ غم شَو رُوی زَرد

ہاں صَنوبَر خیز و فریادی بِکُن
طوطیا جُز نالہ تَرکِ ہر سُخَن

چہرہ سرخ از اشکِ خونی ہر گُلیسْت
خوں شَو اے غُنچہ زمانِ خَنْدَہ نیسْت

پارہ شو اے سینۂ مَہ ہَمچُو مَن
داغ شو اے لالہٗ خونیں کَفَن

خِرمَنِ عَیشَت بِسُوز اے بَرقِ تیز
اے زمیں بر فَرقِ خود خاکے بِریز

آفتابا آتشِ غم بر فروز
شَب رَسید اے شمع روشن خوش بسوز

ہمچو اَبر اے بحر در گِریَہ بجوش
آسمانا جامۂ ماتَم بپوش

خشک شو اے قُلزُم اَز فَرطِ بُکا
جوش زَن اے چشمۂ چشمِ ذُکا

کُن ظُہور اے مَہدئِ عالی جناب
بر زمین آ عیسیِ گردوں قِباب

آہ آہ از ضُعفِ اسلام آہ آہ
آہ آہ از نفسِ خود کام آہ آہ

مَردُماں شہوات را دیں ساختند
صد ہزاراں رَخنَہا انداختند

ہر کہ نَفسَش رَفت راہے اَز ہَوا
ترکِ دیں گُفت و نَمودَش اِقتِدا

بہرِ کارے ہر کِرا گُفتہ تَعال
سر قدم کردہ نَمودَش اِمتِثال

ہر کِرا گُفت ایں چُنیں کُن اے فلاں
گفت لَبَّیْکْ و پذیرَفتَش بجاں

آں یکے گُویاں محمد آدمی سُتُ
چوں من و در وَحی اُو را بَرتَریُستُ

جُز رِسالت نیُست فَرقے درمیاں
من برادرِ خُورْد باشَم اُو کلاں

ایں نداند از عَمیٰ آں ناسَزا
یا خود سُتُ ایں ثَمرہَ ختمِ خدا

گر بود مَر لعل را فضل و شرف
کے بُوَد ہم سنگِ اُو سنگ وخَزف

آں خَزف اُفتادہ باشَد بر زمیں
بس ذلیل و خوار و ناکارہ مُہیں

لعل باشد زیبِ تاجِ سَروَراں
زینت و خوبیِ گُوشِ دِلبَراں

واں دَمی کز خلقِ مَذبُوحی جَہَد
کے بَفَضلِ مشکِ اَذفر می رَسَد

بوئے او گردَہ پریشاں صَد مَشام
جامَہا ناپاک از مَسّش تمام

او دمِ مسفوح ذمش در نبی[1]
مِدحتِ مشک اَطْیَبُ الطِّیْبُ از نبی

مشکِ اَذفَر رُوح را بخشد سُرور
ہمچو بوئے سُنبُل گیسوئے حور

شامّہ از بوئے اُو رشکِ جناں
ہم مُعَطَّر زُو قُبائے مَہوشاں

مَولوِیِّ مَعدنِ[2] رازِ نہفت
رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہِ خُوش بگفت

''کارِ پاکاں را قِیاس از خود مگیر
گرچہ ماند در نوِشتن شیر و شِیر''

---

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्खे़ में येह शे'र यूं है :

(.....................................)
مدحتِ مشک اطیب الطیب از نبی

और बाक़ी तीनों में यूं :

او دمِ مسفوح ذمش در نبی مدحتِ مشک اطیب الطیب از نبی

2 : मौलाना ह़ज़रत मुह़म्मद जलालदुद्दीन रूमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मक्तबए ह़ामिदिय्या लाहोर

ہے چہ گُفتم ایں چُنیں شِبہِ شنیع
کے بود شایانِ آں قدرِ رَفیع

لعل چہ بود جَوہری یا سرخیئے
مشک چہ بود خونِ نافِ وَحشیئے

مُصطَفٰے نورِ جنابِ اَمرِ کُن
آفتابِ بُرجِ عِلْمِ مِنْ لَّدُنْ

مَعدنِ اَسرارِ علّامُ الْغُیُوب
بَرزَخِ بحرینِ اِمکان و وُجوب

بادشاہِ عَرشِیان و فرشیاں
جلوہ گاہِ آفتابِ کُن فکاں

راحتِ دل قامتِ زیبائے اُو
ہر دوعالم والِہ و شیدائے اُو

جانِ اِسماعیل بر رُویَش فدا
از دُعا گُویاں خلیلِ مجتبےٰ

گَشت موسیٰ دَر طُوٰی جُویانِ اُو
ہَست عیسیٰ از ہَوا خواہانِ اُو

بَندگانَش حور و غِلمان و مَلک
چاکرانَش سبز پوشانِ فلک

مِہر تابانِ عُلومِ لَم یزَل
بَحرِ مَکْنوناتِ اَسرارِ اَزَل

ذرّۂ زاں مِہر بر موسیٰ دَمید
گُفت مَن باشَم بَعِلم اَندر فَرید

رَشْحۂ زاں بَحر بر خِضر اُوفتاد
تا کَلِیْمُ اللّٰه را شُد اُوستاد

پس وَرا زِیں قدر شاہِ اَنبِیا
لیک مَجبورَم زِ فَہمِ اَغْبِیا

وصفِ اُواز قُدرتِ انساں وَراسْتُ
حَاشَ لِلّٰه اِیں ہَمہ تفہیم راسْتُ

لذّتِ دیدار شوخے سیم تن
ماہ رُوئے دلبرِ غُنچہ دَہن

فتنہ آئینے خراماں گُلشَنے
رشک گل شیریں ادا نازک تنے

گر بخواہی فَہمِ اُو مَردی کُنَد
گُو زِعشق و حسن تا آگہ بُوَد

ناکشیدَہ مِنّتِ تیرِ جفا
لَب بفریاد و فغاں ناآشنا

دلِ نہ شُد خوں نابہ در یاد لَبے
بر لَبَش نامَد زِ ہجراں یاربے

مُرغِ عَقلَش بے پر و بالے شَود
جز کہ گوئی چوں شکر شیریں بَوَد

گرچہ خود داند اَسیرِ دِل رُبا
اَز کُجا اِیں لذّت و شُکر کُجا

زِیں مثل تو می شُدی اَز عَیش نُوش
لَیک من بارِ دِگر رَفتم زِ ہوش

تا مَن از تَمثِیلِ می کَردَم طلب
باز رَفتم سوئے تَمثِیل اے عَجَب

زِیں کَرّ و فَرّ در عجب وامانْدَہ اَم
حَیرت اندر حیرت اندر حیرتم

ایں سخن آخر نہ گردد از بیاں
صد ابد پایاں رود او ہمچناں

نیست پایانش الٰی یوم التّناد
ختم کن واللّٰہُ اَعلَمُ بالرّشاد

خامشی شد مہرِ لبہائے بیاں
باز گرداں سوئے آغازش عِناں

ایں چنیں صد بافتن انگیختند
بر سرِ خود خاکِ ذِلّت ریختند

فرقۂ دیگر زِ اسماعیلیاں
بستہ در توہینِ آں سلطاں میاں

در دلِ شاں قصد تا زِہ فتنہا
بر لبِ شاں ایں کلامِ ناسزا

کہ بہ شش طبقاتِ زیرینِ زمیں
حق فرستاد انبیا و مرسلیں

شش چو آدم شش چو موسیٰ شش مسیح
شش خلیلُ اللّٰہ شش نوح و نجیح

ہمدرانہا شش چو ختم الانبیا
مثلِ احمد در صفاتِ اعتِلا

با محمد ہر یکے دارد سرے
در کمالِ ظاہری و باطِنے

پارہ شُد قلب و جگر زِیں گفتگو
اِحْذَرُوْا یَآ اَیُّھَا النَّاسُ احْذَرُوْا

اَلحَذَر اے دل زِ شعلہ زادگاں
پائے از زنجیرِ شَرع آزادگاں

مُصطَفٰے مِہرِیُست تاباں بِالْیَقِیں
مُنْتَشِر نُورَش بہ طبقاتِ زمیں

مُسْتَنِیر از تابشِ یک آفتاب
عالَمے وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

گرچہ یک باشَد خودآں مِہرے سَنی
اَحْوَلانَش ہفت بِینَنْد از کجی

دو ہَمی بِینَنْد یک را اَحْوَلاں
اَلاماں زِیں ہفت بِیناں اَلاماں

چشم کج کردہ چو بینی ماہ را
زِ احول بینی دو آں یکتاہ را

گوئی از حیرت عجب امر یست ایں
خواجہ دو شد ماہ روشن چیست ایں

راست کردی چشم و شد رفع حجاب
یک نمایَد ماہِ تاباں یک جواب

راست کن چشمِ خود از بہرِ خدائے
ہفت بیں کم باش اے ہرزہ درائے

اے برادر دست در احمد بزن
بر کجیِ نفسِ بد دیگر متن

رو تشبُّث کن بذَیلِ مصطفٰے
احوَلی بگذار سوگندِ خدا

پند ہا دادیم و حاصل شد فراغ
مَا عَلَیۡنَا یَا اَخِیۡ اِلَّا الۡبَلَاغۡ

در دو عالم نیست مثلِ آں شاہ را
در فضیلتہا و در قربِ خدا

مَا سِوَی اللہ نیست مِثْلَش اَزْ یکے
برتر اَست اَزْ وَے خدا اے مُہتَدے

اَنبیائے سابِقیں اَے مُحتشم!
شَمعہا بُودَندْ در لَیل و ظلم

درمیانِ ظُلمت و ظلم و غُلو
مُستَنیر از نورِ ہریک قومِ اُو

آفتابِ خاتَمِیَّت شُد بلند
مِہر آمَد شَمعہا خامُش شُدَندْ

نورِ حق از شَرقِ بیمثلی بِتافُت
عالَمی اَز تابِشِ اُو کام یافُت

دَفْعتہً برخاسُت اندر مَدحِ اُو
از زبانہا شُور لَا مِثْلَ لَہٗ

لَیک شَپرہ ناپذیرفُت از عِناد
در جہاں اِیں بے بَصَر یا رَبّ مَباد

چشمہا بُودَند اِیں ربّانیاں
مَزْرَعِ دل بہرہ یاب اَزْ فیضِ شاں

اَبر آمَد کِشتہا سیراب کرد
نخلہائے خشک را شاداب کرد

حق فِرِستاد ایں سَحابِ باصَفا
کے یُطَھِّرَنَا وَ یذھبُ رِجْسنا

بارِشِ اُو رحمتِ ربُّ الْعُلٰی
شُورِ رَعْدَش رَحمۃ مُہداۃ انا

رَحمَتَش عام اَست بہرِ ہمگناں
لیک فَضلَش خاص بہرِ مُومناں

چوں نئی بے مِثلِیش را مُعتَرِف
کے شَوی از بحرِ فیضَش مُغتَرِف

نیست فَضلَش بہرِ قومِ بے ادب
یَخْطَفُ اَبصَارَھُمْ بَرقُ الْغَضَب

چوں ببینند آں سَحاب ایناں زِ دُور
عَارِضٌ مُّمْطِر بگُویند از غُرور

بَلْ ھُوَ مَا اسْتَعْجِلْوا خِزْیٌ عَظِیْم
اُرْسِلَتْ رِیْحٌ بِتَعْذِیبٍ اَلِیْم

فیض شُد با غَیظ گرمِ اِختِلاط
حَبَّذا اَبرے عَجب خوش اِرتِباط

خِرمنے کش سُوخت برقِ غیظِ اُو
گُفت قرآں "اَلسَّقَر" مَثْویٰ لَہٗ

مَزرعے کش آب داد آں بحرِ جُود
حق بتَنزِیل مُبیں وَصْفَش نمود

قُلْ کَزَرْعٍ اَخْرَجَ الشَّطْأَ اِلٰی
آزَرَ فَاسْتَغْلَظَ ثُمَّ اسْتَوٰی

یُعْجِبُ الزُّرَّاع کَالْمَآءِ الْمَعِیْن
کے یَغِیْظُ الْکَافِرِیْنَ الظَّالِمِیْن

ابرِ نیسان سُت ایں ابرِ کرم
دُرِّ رَخشاں آفریں در قعرِ یَم

قطرہَ کز وَے چکید اندر صَدَف
گوہرِ رَخشِندہ شُد با صد شَرَف

بحرِ زاخِر شَرعِ پاکِ مصطفٰے
داں صَدَف عرشِ خلافت اے فتا

قطر ہا آں چار بزم آرائے او
زانکہ او کل بود وشاں اجزائے او

برگہائے آں گلِ زیبا بدند
رنگ و بوئے احمدی می داشتند

قصد کارے کرد آں شاہِ جواد
ہر یکے اِنّی لہٗ گویاں ستاد

جنبشِ ابرو نہ تکلیفِ کلام
خود بود ایں کار آخر والسّلام

آں عتیق اللہ امام المتقیں
بود قلب خاشع سلطانِ دیں

واں عمر حق گو زبانِ آنجناب
یَنْطِقُ الْحَقُّ عَلَیْہِ وَالصَّوَاب

بود عثماں شرمگیں چشمِ نبی
تیغ زن دستِ جوادِ او علی

نیست گر دستِ نبی شیرِ خدا
چوں یدُاللہ نام آمد مر او را

دستِ احمد عَین دستِ ذُوالجلال
آمَد اندر بَیعت و اندر قِتال

سَنگریزہ می زَنَد دستِ جناب
مَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْت آید خطاب

وصفِ اہلِ بیعت آمَد اے رشید
فَوْقَ اَیْدِیْهِمْ یَدُ اللّٰهِ الْمَجِیْد

شرحِ ایں معنی بروں از آگہی سْت
پا نہادَن اندریں رہ بیرَہی سْت

تا اَبد گر شرحِ ایں مُعْضِل کُنَم
جُز تَحَیُّر ہیچ نَبُود حاصِلَم

رَبَّنَا سُبْحَانَكَ لَيْسَ لَنَا
عِلْمُ شَيْءٍ غَيْرَ مَا عَلَّمْتَنَا

گُفتہ گفتہ چوں سخن ایں جا رَسید
خامہ گوہر فَشاں داماں بَچید

مُلْہِمِ غَیبی سُرُوش راز داں
دامَنَم بِگرِفت کای آتش زباں

درخورِ فہمت نباشد ایں سخن
بس کُن و بیہودہ وَش خامی مکُن

اَصفیا ہم اندریں جا خامُشَنْد
از مِی کلت لِسانہ بیہُشَنْد

رازہا بر قلبِ شاں مَستور نیست
لیک اِفشا کَردَنَش دَستور نیست

ہر کُجا گنجے وَدِیعت داشْتَنْد
قُفل بر در بہرِ حِفظَش بستہ اَنْد

در دلِ شاں گنجِ اَسرار اے اَخو
بر لبِ شاں قفلِ امرِ اَنْصِتُوْا

روزِ آخر گَشت و باقی ایں کلام
ختم کُن اِنِّیْ لَہٗ طَرْفُ التَّمَام

نَغْز گُفت آں مَولَوی مُستنَد
رازِ ما را روز کے گنجا بود

اَلْغرض شُد مثل آں عالی جناب
سایہ ساں مَعدوم پیشِ آفتاب

مُتَّفَق بر وَے ہَمہ اِسلامیاں
سُنیاں بر بِدعتیاں مُستہاں

مُمْتَنِعْ بِالْغَیْر داند یک فریق
مُمْتَنِعْ بِالذَّات دیگر اے رفیق

وا دَریغا گردہ ایں قومِ عَنِید
خَرقِ اِجماعے بدیں قولِ جَدید

اَللّٰہ اَللّٰہ اے جَہولانِ غَبی
تا بکے بے دینی و فِتنہ گری

مصطفٰے و ایں چُنیں سُوء الادب
ایں قدر اَیمنِ شدید از اَخذِ رب

سابِعِ سَبعہ مگُوئید از عِناد
اِنْتَھُوْا خَیْرًا لَّکُمْ یَوْمَ التَّنَاد

روزِ محشر چوں خطاب آید زِ عرش
اے نِطِّیقانِ فلک سُکّانِ فرش

ہیچ می بینید در اَرض و سَما
مثل و شِبہ بندہَ ما مصطفٰے

یک زباں گویند نے نے اے کریم
کس عدیلش نیست باللّٰہِ العَظِیم

آنچناں کاندر ازل زِ ارواحِ ما
از اَلَستے خاسْت بے پایاں بَلے

لاجَرم آنرُوز زِیں قولِ وَخِیم
توبہ ہا ظاہر کُنَنْد از تَرس وبِیم

مُعترِف آیَنْد بر جرم و خطا
مَعذرت آرَند پیشِ کِبریا

کا یخُدا از فضلِ اُو غافِل بدیم
شمس پیشِ چشمِ ما جاہل بُدیم

رَبَّنَا اِنَّا ظَلَمْنَا رحم کُن
جاہلانہ گفتہ بُودیم ایں سخن

پردہا بر چشمِ ما اُفتادَہ بُود
رحم کن بر جاہلاں رحم اے وَدُود

نفسِ ما اَنداخت ما را در بَلا
وائے بر ما وَ بَنادانیِ ما

عذرہا در حشر باشد نا پذیر
قاریا! بَرخواں اَلَمْ یَاْتِ النَّذِیر

سخت روزے باشد آں روز اَلاماں
باختہ ہوش و حواسِ قُدسیاں

واحدِ قہّار باشد در غضب
یَجْعَلُ الْوِلْدَانُ شِیْبًا فِی التَّعَب

زہرہا دَرباختہ اَفلاکیاں
رنگ از چہرہ پَریدہ خاکیاں

دو گروہ باشند مَسعود و لَئِیم
کُلُّ فِرْقٍ کَانَ کَالطَّوْدِ الْعَظِیْم

رَبِّ سَلِّم اِلتجائے اَنبیا
شورِ نفسی بر زبانِ اولیا

بر لب آمد نامِ آں رُوزِ سیاہ
مُوی بر تَن خاستم یا رب پناہ

اِعترافِ جُرم و توبہ اے اَرِیب
در چُنیں روزِ سِیَہ نایَد عجیب

کیں جھولاں را زطعن و دور باد[1]
ہم بدُنیا گیک در موزہ فتاد

شاں بیک جائے زمانِ گیر و دار
ہمچو پائے سُوختہ نامد قرار

تاجِ مثلیّت گہے بر سر نہند
گہ خطابِ خاتمیّت می دِہند

گاہ بالذّات سُتُ آں ختم اے ہُمام
گاہ بالعرض آمد و تخُییل خام

نَو نیازانِ کتابِ اضطِراب
ایں چنیں کردند صدہا انقِلاب

اَندریں فن ہر کہ اُوستادی بوَد
کے بچَندیں قلُبہا قانع شوَد

---

1 : रज़ा एकेडमी बम्बई वाले नुस्ख़े में येह मिस्रआ़ यूं है :

"کیں جھولاں رازطعن(   )"

और मज़्कूरा तीनों में यूं : "کیں جھولاں رازطعن و دور باد" । इ़ल्मिय्या

می رَسَد از وے بہرِ فرضے نبی
شُقَّہٗ مَعزولی از پیغمبری

گہ قَناعت کن گزشتہ از طمع
بر ہدایت حسبِ عَزَّ مَنْ قَنَعَ

اَز نبوت و زِ نُزولِ جبرئیل
قصدِ ما بودسُت اِرشادُ السَّبیل

معنیِ شمس اَست برگِ نَسْتَرن
موج عمّان شرح نَسرِین وسَمن

آہُوے چین ست مقصود از سَما
مَرحبا تاویلِ اَطہر مرحبا

اَلغرض سیماب وَش در اِضطِراب
صد تپِیدَن کردَہ ایں قومِ عُجاب

چند در کوئے جبل بِشتافتند
لیک راہِ مَخلِصی کم یافتند

من فدائے علمِ آں یکتا شَوَم
حَبَّذا دانائے رازِ مُکتتم

حَبَّذا سِرّ و عِیاں دانائے من
حبّذا ربِ من و مولائے من

گرد اِیمائے بریں فِتنہ گری
قَرنہا پیش از وُجودَش در نبی

احمدا بِنگر کہ اِیناں چوں زَدَند
بہرِ تو اَمثال از کُفر نَشَند

اُوفتادَند از ضلالت در چہے
پے نبردَند از عَمیٰ سوئے رہے

تا بکے گوئی دِلا از اِین و آں
بر دُعا کُن اِختتامِ ایں بیاں

نالہٗ کن بہرِ دفعِ ایں فساد
از تہ دل دُوْنَہٗ خَرْطُ الْقَتَاد

اے خدا اے مہرباں مولائے من
اے انیسِ خلوتِ شبہائے من

اے کریم و کار سازِ بے نیاز
دائم الاحساں شہِ بندہ نواز

اے بَیادَت نالہٗ مُرغِ سحر
اے کہ ذِکرَت مرہمِ زخمِ جگر

اے کہ نامَت راحت جان و دِلم
اے کہ فضلِ تو کفیلِ مُشکِلم

ہر دو عالم بندہٗ اِکرامِ تو
صد چوں جانِ من فدائے نامِ تو

ما خطا آریم و تو بخشِش کُنی
نعرہٗ "اِنّیْ غَفُوْرٌ" می زَنی

اللّٰہ اللّٰہ زیں طرف جرم و خطا
اللّٰہ اللّٰہ زاں طرف رحم و عطا

زَہر ما خواہیم و تو شکر دِہی
خیر را دانیم شر از گُمرہی

تو فِرِستادی بَما روشن کتاب
می کُنی با ما باحکامَت خطاب

از طفیلِ آں صِراطِ مستقیم
قُوَّتے اسلام را دِہ اے کریم

بہرِ اسلامے ہزاراں فِتنَہا
یک مَہ و صَد داغ فریاد اے خدا

اے خدا بہرِ جنابِ مصطفٰے
چار یارِ پاک و آلِ باصَفا

بہرِ مردانِ رہت اے بے نیاز
مَردُماں در خواب اِیشاں در نماز

بہرِ آبِ گریۂ تَرداماں
بہرِ شُورِ خندۂ طاعت گُناں

بہرِ اشکِ گرمِ دوراں از نِگار
بہر آہِ سرد مہجوراں زِ یار

بہرِ جیبِ چاکِ عشقِ نامراد
بہرِ خونِ پاکِ مَردانِ جہاد

پُر کن از مقصد تہی دامانِ ما
از تو پذرفتن زِ ما کردن دعا

ہیچ می آید ز دستِ عاجزاں
جز دُعائے نیم شب ای مُستعاں

بلکہ کارِ تُست اِجابَت اے صَمَد
وِیں دُعا ہم مَحض تَوفِیقت بَوَد

ما کہ بُودیم و دعائے ما چہ بُود
فضلِ تو دل داد اے ربِّ وَدُود

ذرّہ بر رُوئے خاک اُفتادہ بُود
آفتابے آمد و روشن نمود

تکیہ بر رب گرد عبدِ مُستہاں
اُوستُ بس ما را مَلاذ و مُستعاں

کیستُ مولائے بہ از ربِ جلیل
حَسْبُنَا اللّٰه رَبَّنَا نِعْمَ الْوَكِيْل

چوں بدیں پایہ رَسانُدم مثنوی
بہ تمامَش بر کلامِ مَولَوی

تا خِتَامُہٗ مِسْکٌ گویند اہلِ دیں
زانکہِ مُشک سُتُ آں کلامِ مستبیں

چوں فتاد از رَوزَنِ دل آفتاب
ختم شُد وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये दुन्या को उठा कर इस त़रह़ मेरे सामने कर दिया कि मैं तमाम दुन्या को और इस में क़ियामत तक जो कुछ भी होने वाला है उन सब को इस त़रह़ देख रहा हूं जिस त़रह़ मैं अपनी हथेली को देख रहा हूं। (حلية الاولياء،الحديث:٧٩٧٩،ج٦،ص١٠٧)

रुबाइयाते ना'तिया

पेशा मेरा शाइ़री न दा'वा मुझ को
हां शर-अ़ का अलबत्ता है जुम्बा मुझ को
मौला की सना में हुक्मे मौला का ख़िलाफ़
लोज़ीना में सीर तो न भाया मुझ को

दीगर

हूं अपने कलाम से निहायत मह़ज़ूज़
बीजा से है اَلْمِنَّةُ لِلّٰہ मह़फ़ूज़
कुरआन से मैं ने ना'त गोई सीखी
या'नी रहे अह़कामे शरीअ़त मल्ह़ूज़

दीगर

मह़सूर जहांदानी व आ़ली में है
क्या शुबा रज़ा की बे मिसाली में है
हर शख़्स को इक वस्फ़ में होता है कमाल
बन्दे को कमाल बे कमाली में है

दीगर

किस मुंह से कहूं रश्के अ़नादिल हूं मैं
शाइ़र हूं फ़सीह़ बे मुमासिल हूं मैं
ह़क़्क़ा कोई सन्अ़त नहीं आती मुझ को
हां येह है कि नुक़्सान में कामिल हूं मैं

दीगर

तोशा में ग़मो अश्क का सामां बस है
अफ़्ग़ाने दिले ज़ार हुदी ख़्वां बस है
रहबर की रहे ना'त में गर ह़ाजत हो
नक़्शे क़दमे ह़ज़रते ह़स्सां बस है

दीगर

हर जा है बुलन्दिये फ़लक का मज़्कूर
शायद अभी देखे नहीं त़यबा के क़ुसूर
इन्सान को इन्साफ़ का भी पास रहे
गो दूर के ढोल हैं सुहाने मश्हूर

दीगर

किस दरजा है रोशन तने महबूबे इलाह
जामा से इयां रंगे बदन है वल्लाह
कपड़े येह नहीं मैले हैं उस गुल के रज़ा
फ़रियाद को आई है सियाहिये गुनाह

दीगर

है जल्वा गहे नूरे इलाही वोह रू
क़ौसैन की मानिन्द हैं दोनों अब्रू
आंखें येह नहीं सब्ज़ए मुज़्गां के क़रीब
चरते हैं फ़ज़ाए ला मकां में आहू

दीगर

मा'दूम न था सायए शाहे स-क़लैन
उस नूर की जल्वा गह थी ज़ाते ह-सनैन
तम्सील ने उस साया के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने हैं आधे से हुसैन

दीगर

दुन्या में हर आफ़त से बचाना मौला
उ़क़्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला
बैठूं जो दरे पाक पयम्बर के हुज़ूर
ईमान पर उस वक़्त उठाना मौला

दीगर

ख़ालिक़ के कमाल हैं तजद्दुद से बरी
मख़्लूक़ ने मह़दूद त़बीअ़त पाई
बिल-जुम्ला वुजूद में है इक ज़ाते रसूल
जिस की है हमेशा रोज़ अफ़्ज़ूं ख़ूबी

दीगर

हूं कर दो तो गर्दूं की बिना गिर जाए
अब्रू जो खिचे तैग़े क़ज़ा फिर जाए
ऐ साह़िबे कौसैन बस अब रद न करे
सहमे हुओं से तीरे बला फिर जाए

दीगर

नुक़्सान न देगा तुझे इस्यां मेरा
गुफ़्रान में कुछ ख़र्च न होगा तेरा
जिस से तुझे नुक़्सान नहीं कर दे मुआ़फ़
जिस में तेरा कुछ ख़र्च नहीं दे मौला

क़त़्आ़[1]

نہ مَرا نُوش زِ تحسیں نہ مَرا نیش زِ طعن
نہ مَرا گُوش بمدحے نہ مَرا ہوش ذَمے
مَنَم و کُنجِ خُمولی کہ نگنجد در وَے
جُز مَن و چند کتابے و دوات و قلمے

❁❁❁❁❁

1 : येह क़त़्अ़ए मुबा–रका आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ की मुकम्मल सवानेह़े उ़म्री है जो ख़ुद आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ ने तह़रीर फ़रमाया है।

हदाइके बख़्शिश

के पहले और दूसरे हिस्से के इलावा

इज़ाफ़ी कलाम

फ़ेहरिस

इस ना'त शरीफ़ में येह सन्अ़त रखी है कि पढ़ने में दोनों होंट नहीं मिलते

सय्यिदे कौनैन सुल्त़ाने जहां
ज़िल्ले यज़्दां शाहे दीं अ़र्श आस्तां

कुल से आ'ला कुल से औला कुल की जां
कुल के आक़ा कुल के हादी कुल की शां

दिलकुशा दिलकश दिलआरा दिलसितां
काने जानो जाने जानो शाने शां

हर ह़िकायत हर किनायत हर अदा
हर इशारत दिल नशीनो दिलनिशां

दिल दे दिल को जान जां को नूर दे
ऐ जहाने जानो ऐ जाने जहां

आंख दे और आंख को दीदारे नूर
रूह़ दे और रूह़ को राहे जिनां

अल्लाह अल्लाह यास और ऐसी आस से
और येह ह़ज़्रत येह दर येह आस्तां

तू सना को है सना तेरे लिये
है सना तेरी ही दीगर दास्तां

तू न था तो कुछ न था गर तू न हो
कुछ न हो तू ही तो है जाने जहां

तू हो दाता और औरों से रजा
तू हो आक़ा और यादे दी-गरां

इल्तिजा इस शिर्को शर से दूर रख
हो रज़ा तेरा ही ग़ैर अज़ ईनो आं

जिस त़रह़ होंट इस ग़ज़ल से दूर हैं
दिल से यूं ही दूर हो हर ज़न्नो ज़ां

क़सीदए मुबा-रका दर मन्क़बत ह़ज़रत नूरुल आ़रिफ़ीनिल किराम सला-सतिल वासिलीनिल इज़ाम सय्यिदुना व मौलाना सय्यिद शाह अबुल ह़ुसैन नूरी मियां साह़िब क़िब्ला ताजदारे मस्नदे मारह्रा मुत़ह्हरा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मुसम्मा बि इस्मे तारीख़ी मश्रिक़िस्ताने क़ुदुस

माहे सीमा है अह़मदे नूरी
मेहरे जल्वा है अह़मदे नूरी
नूर वाला है अह़मदे नूरी
नोर वाला है अह़मदे नूरी

न खुला क्या है अह़मदे नूरी
राज़ बस्ता है अह़मदे नूरी
दूर पहुंचा है अह़मदे नूरी
बहुत ऊंचा है अह़मदे नूरी

नूरे सीना है अह़मदे नूरी
त़ूरे सीना है अह़मदे नूरी
वस्फ़े अज्ला है अह़मदे नूरी
कश्फ़े अख़्फ़ा है अह़मदे नूरी

अ़हदे औफ़ा है अह़मदे नूरी
शहदे अस्फ़ा है अह़मदे नूरी

जल्बे तक़्वा है अह़मदे नूरी
सल्बे त़ग़्वा है अह़मदे नूरी

नज्म से माह मह से मेह्र हुवा
घड़ियों बढ़ता है अह़मदे नूरी

मेह्र से माह मह से नज्म हुवा
अभी नीचा है अह़मदे नूरी

उस के मुदरक हैं फ़ौक़े त़बीआ़त
इ़ल्मे आ'ला है अह़मदे नूरी

ब-रकाती जहां जमी हो बरात
उस में दूल्हा है अह़मदे नूरी

शम्से दीं की शुआ़ओं का तेरे
सर पे सेहरा है अह़मदे नूरी

तारे अन्ज़ारे मर्हमत से बुना
तेरा जामा है अह़मदे नूरी

रुश्दो इर्शाद का तेरे सर पर
आज तुर्रा है अह़मदे नूरी

क़ादिरिय्यत है चिश्तियत से बहम
नग दो पलका है अह़मदे नूरी

रफ़्अ़ क़ौमा में वज़्अ़ सज्दे में ق
لَا व اِلَّا है अह़मदे नूरी

ज़िक्र ऐसा कि कलिमा की उंगली
ख़ुद सरापा है अह़मदे नूरी

क़ौमा सीधा रुकूअ़ दोहरा है ق
اَلِف व اِلَّا है अह़मदे नूरी

मह़्ज़ इस्बात का मक़ामे बुलन्द
यूं दिखाता है अह़मदे नूरी

मेरा मुर्शिद है मुस्ह़फ़े नात़िक़
नूरी आया(आयह) है अह़मदे नूरी

महबिते फ़ज़्ल शैख़ ता ब-रकात
पन्जसूरा है अह़मदे नूरी

ह़-रमैन इस के पैरव आ'ला पीर
बैते अक़्सा है अह़मदे नूरी

इस्मे अस्मा तेरा اللّٰه تَعَالٰی
बा मुसम्मा है अह़मदे नूरी

आस्मां से उतरते हैं अस्मा
नाम कैसा है अह़मदे नूरी

नाम भी नूर हुस्ने ताम भी नूर
नूर दूना है अह़मदे नूरी

नूरे सरकारे ज़ात दूना है ق
दिन सवाया है अह़मदे नूरी

कीजिये अ़क्से मिस्ल कि नाशिआ का
नूरे इन्शा[1] है अह़मदे नूरी

कुर्ब उस आ'ला से है तुझे जिस का
क़स्र اَوْ اَدْنٰی है अह़मदे नूरी

ला वलद रहते हैं तमाम अब्दाल
फ़र्दो तन्हा है अह़मदे नूरी

पि-सरो न-ब-सओ नबीरए नूर
नूर आया है अह़मदे नूरी

इस की सी मां जहान में किस की
इब्ने ज़हरा है अह़मदे नूरी

शक्ल देखो तो नूर की तस्वीर
नूरी पुतला है अह़मदे नूरी

नाम पूछो तो नूर की तन्वीर
नूर मा'ना है अह़मदे नूरी

1 : इन्शा ब मा'ना बालन्दा तर।

अन्जुमन हो रही मशरिके़ नूर
जल्वा फ़रमा है अह़मदे नूरी

बामो दर की ज़िया से रोशन है
नूर बाला है अह़मदे नूरी

त़ालिबाने ह़रीमे ह़क़ के लिये
रास्त क़िब्ला है अह़मदे नूरी

डोर गन्डे पे चार उ़न्सर के
तेरा गन्डा है अह़मदे नूरी

बन्दे ता'वीज़ से कशाइश ने
क़ौल बांधा है अह़मदे नूरी

नक़्शे जमते हैं तेरी हिम्मत से
नक़्श परवा है अह़मदे नूरी

अच्छे प्यारे के दिल का टुकड़ा है
अच्छा अच्छा है अह़मदे नूरी

भोली सूरत है नूर की मूरत
प्यारा प्यारा है अह़मदे नूरी

गुले बग़दाद की महक में बसा
भीना भीना है अह़मदे नूरी

अब्रे ब-रकात की टपक में धुला
उजला उजला है अह़मदे नूरी

है मुसफ़्फ़ा अ़सल लबों से रवां
मीठा मीठा है अह़मदे नूरी

वोह अ़वारिफ़ का नूरबार सिराज
जग उजाला है अह़मदे नूरी

उस के इर्शाद में दलीले यक़ीन
शक मिटाता है अह़मदे नूरी

उस के लब हैं कलीदे कश्फ़े कुलूब
फ़त्ह़े दौल्हा है अह़मदे नूरी

गौहरे बे बहाए नूरो बहा
तेरा शजरा है अह़मदे नूरी

सय्यिदुल अम्बिया रसूलुल्लाह
तेरा बाबा है अह़मदे नूरी

मर-जउ़ल औलिया अ़लिय्ये वली
तेरा दादा है अह़मदे नूरी

वोह हुसैनी रची हुई रंगत
गुल से ज़ैबा है अह़मदे नूरी

ज़ीनते ज़ैने आ़बिदीं से तेरा
हुस्न निखरा है अह़मदे नूरी

अ़म्मे आ'ज़म हैं ह़ज़रते बाक़िर
तू भतीजा है अह़मदे नूरी

सादिक़े रफ़्ज़ सोज़ का परतव
तुझ पे सच्चा है अह़मदे नूरी

शाने काज़िम दिखा कि मा'दिने इल्म
तेरा मन्शा है अह़मदे नूरी

ऐ रज़ा के रज़ी रज़ा के रज़ा
तुझ से जोया है अह़मदे नूरी

फ़ैज़े मा'रूफ़ से तेरा मा'रूफ़
शहरे शोहरा है अह़मदे नूरी

सिर में सारी है सिर्रे पाक तेरे
सिर पे सारा है अह़मदे नूरी

सय्यिदुत्ताइफ़ा का त़ाइफ़ है
हम को का'बा है अह़मदे नूरी

शिब्ले शिब्लिय्ये क़ौमे शरज़ा पर
शेरे शरज़ा है अह़मदे नूरी

अ़ब्दे वाह़िद के बह़्रे वह़्दत से
दुर्रे यक्ता है अह़मदे नूरी

बुल फ़रह़ के लिये फ़रह़ दे दे
ग़म ने घेरा है अह़मदे नूरी

ह़-सने बुल ह़सन पे तेरा ह़सन
क्या निराला है अह़मदे नूरी

बू सईदी सईद कितना सा'द
तेरा तारा है अह़मदे नूरी

ग़ौसे कौनैन की गुलामी से
जगत आक़ा है अह़मदे नूरी

अ़ब्दे रज़्ज़ाक़ हैं वसीलए रिज़्क़
तू सहारा है अह़मदे नूरी

नस्रो बू नस्र इस के नस्रे नसीर
नासिर अपना है अह़मदे नूरी

ताज़ी कोपल अ़ली की डाली में
तेरा बाला है अह़मदे नूरी

शाहे मूसा के गोरे हाथों का
यदे बैज़ा है अह़मदे नूरी

ह़-सनी अह़मदी ह़ुसैनो ह़मीद
ख़ुश सितूदा है अह़मदे नूरी

देख लो जल्वए बहाउद्दीन
आईना सा है अह़मदे नूरी

गुले ख़न्दाने बाग़े इब्राहीम
तेरा चेहरा है अह़मदे नूरी

ख़ुद भिकारी के दर का साइल है
हम को दाता है अह़मदे नूरी

नूरे क़ाज़ी ज़िया के परतव से
नूरे अज़्वा है अह़मदे नूरी

ऐ जमाले जमील शाने जमाल
तुझ में जुम्ला है अह़मदे नूरी

हम्द के दोनों पाक नामों का
फ़ैज़ो लम्आ है अहमदे नूरी

शाने अन्वारे फ़ज़्ले फ़ज़्लुल्लाह
तुझ से पैदा है अहमदे नूरी

ब-रकाती चमन का बूटा है
ब-र-कत ज़ा है अहमदे नूरी

बागे आले मुहम्मदी है निहाल
सुथरा पौदा है अहमदे नूरी

रहे हम्ज़ा का मै-कदा जिस की
मध का माता है अहमदे नूरी

आले अहमद हैं मुस्तफ़ा के चांद
माहे प्यारा है अहमदे नूरी

खुस्रवे औलिया हैं आले रसूल
शाहज़ादा है अहमदे नूरी

मेरे आक़ा का लाडला बेटा
नाज़ों पाला है अह़मदे नूरी

शबे बिद्अ़त से कहिये हो काफ़ूर
नूर अफ़्ज़ा है अह़मदे नूरी

रफ़्ज़ो तफ़्ज़ील व नदवा का क़ातिल
सुन्नत-आरा है अह़मदे नूरी

सीधा सादा है लेकिन उलटों से
बांका तिरछा है अह़मदे नूरी

देखेभाले हैं शह्र दह्र के शैख़
सब से औला है अह़मदे नूरी

खु-लफ़ाए सलासा का है गुलाम
जब तो मौला है अह़मदे नूरी

ज़ाएक़ा उन का ता ज़बां ही नहीं
दिल से शैदा है अह़मदे नूरी

बे तक़िय्या बना करें अ़य्यार
मर्गे शीआ़ है अह़मदे नूरी

बे मह़ासिन हैं पीर चोटी के
मर्द ह़क़ का है अह़मदे नूरी

यां नहीं कुफ़्र पे चमर तौह़ीद
ख़ास बन्दा है अह़मदे नूरी

खो के सुधबुध बने सनीचर पीर
ह़क़ का जुम्आ़ है अह़मदे नूरी

बद मज़ाक़ों को तेरा शहद है तल्ख़
उन को सफ़रा है अह़मदे नूरी

जलते हैं तेरे गर्म चरचे से
उन को सौदा है अह़मदे नूरी

ऐ अ़लम ता'ज़ियों के मुजरे से दूर
तुझ को मुजरा है अह़मदे नूरी

शबे बातिल का अब सवेरा है
हक़ का तड़का है अहमदे नूरी

ज़ुल्मते ग़म तो और मुझ को दिया
मेरा मावा है अहमदे नूरी

तेरी रहमत पे तेरी ने'मत पर
मेरा दा'वा है अहमदे नूरी

जिस का मैं ख़ानाज़ाद उस का तू
प्यारा बेटा है अहमदे नूरी

मेरे आक़ा का तुझ पे और तेरा
मुझ पे साया है अहमदे नूरी

तीरह बख़्ती ने कर दिया अन्धेर
देर अब क्या है अहमदे नूरी

नूरे अहमद मुझे भी चमका दे
नाम तेरा है अहमदे नूरी

लाख अपना बनाएं ग़ैर उसे
फिर हमारा है अहमदे नूरी

दूध का दूध पानी का पानी
करने वाला है अह़मदे नूरी

दर्द खो दे कि ख़्वाहिशों ने बहुत
दिल दुखाया है अह़मदे नूरी

तू हंसा दे कि नफ़्से बद ने सितम
ख़ूं रुलाया है अह़मदे नूरी

ख़ाक हम ने उड़ाई यूहीं सही
तू तो दरिया है अह़मदे नूरी

ख़ानदानी करम क़दीमी जूद
तेरा ह़िस्सा है अह़मदे नूरी

पोतड़ों का करीम इब्ने करीम
करम आमा है अह़मदे नूरी

मेरे ह़क़ में मुख़ालिफ़ों की न सुन
ह़क़ येह मेरा है अह़मदे नूरी

इतना कह दे रज़ा हमारा है
पार बेड़ा है अह़मदे नूरी

हैं रज़ा क्यूं मलूल होते हो
हां तुम्हारा है अह़मदे नूरी

☆☆☆

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की थेली

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَالِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक्दस में कुछ खजूरें ले कर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَالِہٖ وَسَلَّم ! इन खजूरों में ब-र-कत की दुआ़ फ़रमा दीजिये । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَالِہٖ وَسَلَّم ने उन खजूरों को इकठ्ठा कर के दुआ़ए ब-र-कत फ़रमा दी और इर्शाद फ़रमाया कि तुम इन को अपने तोशादान में रख लो और तुम जब चाहो हाथ डाल कर इस में से निकालते रहो लेकिन कभी तोशादान झाड़ कर बिल्कुल ख़ाली न कर देना । चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तीस बरस तक उन खजूरों को खाते और खिलाते रहे बल्कि कई मन उस में से ख़ैरात भी कर चुके मगर वोह ख़त्म न हुई ।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی ہریرۃ، الحدیث: ٣٨٦٥، ج٥، ص٤٥٤)

क़सीदए मदहि़या दर शाने अफ़्ज़लुल उ़-लमा अक्मलुल कु-मला बक़िय्यतुस्सलफ़ हु़ज्जतुल ख़लफ़ ताजुल फ़ुहूल मुहि़ब्बे रसूल ह़ज़रत मौलाना मौलवी ह़ाफ़िज़ ह़ाजी मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर साहि़ब क़ादिरी उ़स्मानी बदायूनी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुसम्मा बि इस्मे तारीख़ी

चरागे़ अनस

1315 हि.

ऐ इमामुल हुदा मुहि़ब्बे रसूल
दीन के मुक़्तदा मुहि़ब्बे रसूल

नाइबे मुस्त़फ़ा मुहि़ब्बे रसूल
साहि़बे इस्त़फ़ा मुहि़ब्बे रसूल

ख़ादिमे मुर्तज़ा मुहि़ब्बे रसूल
मज़्हरे इर्तज़ा मुहि़ब्बे रसूल

ऐ़न ह़क़ का बना मुहि़ब्बे रसूल
ऐ़न ह़क़ का बना मुहि़ब्बे रसूल

ज़ुब्दतुल अत्क़िया मुहिब्बे रसूल
उ़म्दतुल अज़्किया मुहिब्बे रसूल

गु–रबा पर फ़िदा मुहिब्बे रसूल
उ–मरा से जुदा मुहिब्बे रसूल

ऐ सलफ़ इक्तिदा मुहिब्बे रसूल
ऐ ख़लफ़ पेश्वा मुहिब्बे रसूल

सुक़्मे दिल की शिफ़ा मुहिब्बे रसूल
चश्मे दीं की सफ़ा मुहिब्बे रसूल

शर्क़े शाने वफ़ा मुहिब्बे रसूल
बर्क़े जाने जफ़ा मुहिब्बे रसूल

ऐ करम की घटा मुहिब्बे रसूल
अपनी बारिश बढ़ा मुहिब्बे रसूल

क्यूं न हो चांद सा मुहिब्बे रसूल
नूर का जब्हा[1] सा मुहिब्बे रसूल

---

1 : अज़ अस्माए इलाहिय्यह व अस्माए हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰہ عَلَيْهِ وَسَلَّم

ह़-रमैनो ह़िमा में बस के गया
न-जफ़ो करबला मुह़िब्बे रसूल

तू कलामे ख़ुदा का ह़ाफ़िज़ है
तेरा ह़ाफ़िज़ ख़ुदा मुह़िब्बे रसूल

अ़ब्दे क़ादिर न क्यूं हो नाम कि है
ज़िल्ले ग़ौसुल वरा मुह़िब्बे रसूल

मश्अ़ले राहे दीनो सुन्नत है
तेरे रुख़ की ज़िया मुह़िब्बे रसूल

अच्छे[1] प्यारे की ख़ानाज़ादी है
अच्छा प्यारा बना मुह़िब्बे रसूल

शर्म वाले ग़नी[2] का बेटा है
काने जूदो ह़या मुह़िब्बे रसूल

आज क़ाइम है दम क़दम से तेरे
दीने ह़क़ की बिना मुह़िब्बे रसूल

1 : हुज़ूर अबुल फ़ज़्ल शम्सुद्दीन आले अह़मद अच्छे मियां मारहरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ।
2 : हुज़ूर अमीरुल मुअमिनीन ज़िन्नूरैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ।

ठीक मे'यारे सुन्नियत है आज
तेरी हुब्बो विला मुहि़ब्बे रसूल

सुन्नियत से फिरा हुदा से फिरा
अब जो तुझ से फिरा मुहि़ब्बे रसूल

मुस्त़फ़ा का हुवा ख़ुदा का हुवा
अब जो तेरा हुवा मुहि़ब्बे रसूल

मुज़्निबे बद मज़ाक़ रा ज़ह्रस्त
शह्द साफ़े शुमा मुहि़ब्बे रसूल

आ़सिये रू सियाह दुश्मने तुस्त
रंगे रू शुद गवा मुहि़ब्बे रसूल

ख़ारज़ारों[1] के वासित़े है समूम
गुलबुनों[2] को सबा मुहि़ब्बे रसूल

हद्मे बुन्याने नज्द का तुर्रा
तेरे सर पर सजा मुहि़ब्बे रसूल

1 : बिदआ़त 2 : सुनन

हज़्मे अह़ज़ाबे नदवा का सेहरा
तेरे माथे रहा मुह़िब्बे रसूल

रफ़्ज़ो तफ़्ज़ीलो नज्दियत का गला
तेरे हाथों कटा मुह़िब्बे रसूल

तूने अब्नाए बद मज़ाक़ी को
पै पिदर कर दिया मुह़िब्बे रसूल

मातमी हैं ज़नाने नज्द कि हाए
बेवा तूने किया मुह़िब्बे रसूल

जलते हैं नदविया कि सद्र की क़द्र
सर्द की तूने या मुह़िब्बे रसूल

सर मुंडाते ही पड़ गए ओले
तुझ से पाला पड़ा मुह़िब्बे रसूल

बख़्त खुल जाता तख़्त मिल जाता
तूने बन्दी रखा मुह़िब्बे रसूल

مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ و عند الله
مَكْرُهُمْ و الجزا मुहिब्बे रसूल

कोह अफ़्गन था उन का मक्र मगर
मक्रे[1] हक़ था बड़ा मुहिब्बे रसूल

पहले भी मक्रदारे नदवा को
हक़ ने दी थी सज़ा मुहिब्बे रसूल

बा'द तेरह सदी के फिर उछला
अब वोह तुझ से दबा मुहिब्बे रसूल

उन की जो रूएदाद थी कर दी
तूने दम में हबा मुहिब्बे रसूल

ज़र के मुफ़्ती[2] बना करें मुख़्ती
तू है मुफ़्ती बजा मुहिब्बे रसूल

नाज़िमे फ़ितना लाख हों तू है
नाज़िमे इहतिदा मुहिब्बे रसूल

1 : ख़ुफ़्या तदबीर 2 : इशारा बदरुल अख़्ताए नदविया ١٢منه

झूटे हक़्क़ानी बनते हैं गुमराह
सच्चे हक़्क़ानी आ मुहि़ब्बे रसूल

कुछ मुदाहिन हमीर मीर बने
मीर उन को सुना मुहि़ब्बे रसूल

यूं न समझें तो सर उड़ा या आप
तू दिल उन का उड़ा मुहि़ब्बे रसूल

नदवी झुंझलाते हैं वोही तो हैं
असद अह़मद रज़ा मुहि़ब्बे रसूल

ग़ाफ़िल इस से कि एक सुन्नी है
फ़ौजे ह़क़ में हूं या मुहि़ब्बे रसूल

गल्लए बुज़ को एक शीर बहुत
वोह भी لا سِيَّما मुहि़ब्बे रसूल

हम ब जामेअ़ रमा रमद अज़ शेर
लुत़्फ़ देह जुम्आ़ रा मुहि़ब्बे रसूल

मेरे सत्तर[70] सुवाल का क़र्ज़ा
न अदा हो सका मुहिब्बे रसूल

न अदा हो अगर्चे महशर तक
ढील उन्हें दे क़ज़ा मुहिब्बे रसूल

बीसों ए'लानों पर भी हट न सका
घूंघट उन मुखड़ों का मुहिब्बे रसूल

शर्मे नौ ख़ास्तन रही हाइल
नदवे को हस्रता मुहिब्बे रसूल

हाल مُسْتَنْفِرَه का قَسْوَرَه से
सब ने देखा सुना मुहिब्बे रसूल

मेरे ख़न्जर की ताब ला न सके
ख़ाक पहुंचेंगे ता मुहिब्बे रसूल

गालियां दीं जवाब के बदले
لَنَا هَنِيًّا ذَا मुहिब्बे रसूल

शो'ला ख़ूयों को छेड़ कर सुनना
यां है इस का मज़ा मुहि़ब्बे रसूल

तल्ख़ जै़बद लब श-करेख़ा रा
ख़्वाजा फ़रमा चुका मुहि़ब्बे रसूल

हां न इन दो का तीसरा देखा
आंखें खुलतीं ज़रा मुहि़ब्बे रसूल

तीसरा कौन औ़ने ह़क़ जिस का
मैं फ़क़ीर और गदा मुहि़ब्बे रसूल

तीसरा कौन बदरे ह़क़ जिस का
शर्क़ मैं और समा मुहि़ब्बे रसूल

तीसरा कौन मेहरे ह़क़ जिस का
नुक्ता़ मैं मिन्तक़ा मुहि़ब्बे रसूल

साया इन दो पे कैसे दो का है
जिन का सालिस ख़ुदा मुहि़ब्बे रसूल

ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَار

मैं निसार और फ़िदा मुहि़ब्बे रसूल

बल्कि दो अह्‌वली से कहते हैं

मैं हूं तुझ में फ़ना मुहि़ब्बे रसूल

न तू मुझ से जुदा न मैं तुझ से

मैं तेरा तू मेरा मुहि़ब्बे रसूल

ग़-लत़ी की तेरा मेरा कैसा !

तू मनो मन तू या मुहि़ब्बे रसूल

येह भी तेरे करम से है वरना

मन कुजा व कुजा मुहि़ब्बे रसूल

मैं कहां और कहां تَعَالٰی الله

तेरी मदह़ो सना मुहि़ब्बे रसूल

तेरी ने'मत का शुक्र क्या कीजे

तुझ से क्या क्या मिला मुहि़ब्बे रसूल

और तो और शैख़ तुझ से मिला
इस से बढ़ कर है क्या मुहिब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि जिस के दर की ख़ाक
चश्मे जां की जिला मुहिब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि इक झलक में करे
शब को शम्सुद्दुहा मुहिब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि जिस की एक निगाह
दो जहां का भला मुहिब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि जिस के मुजराई
औलिया अस्फ़िया मुहिब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि फ़ितनों की है क़ज़ा
जिस की एक एक अदा मुहिब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि जिस के नाम का विर्द
दर्दे दिल की दवा मुहिब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि जिस के इ़श्क़ की आग
नार से है नजा मुहि़ब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि ह़क़ के फूल खिलाए
जिस के दम की हवा मुहि़ब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि जिस का आबे वुज़ू
बाग़े दीं की बहा मुहि़ब्बे रसूल

शैख़ भी वोह कि ख़ाके पा से करे
मस्से जां को ति़ला मुहि़ब्बे रसूल

शैख़ भी कौन ह़ज़रत आले रसूल
ख़ा-तमुल औलिया मुहि़ब्बे रसूल

उस के दर तक रसाई तुझ से मिली
तू हुवा रहनुमा मुहि़ब्बे रसूल

मुझ पे वाजिब है तेरा शुक्रे निअ़म
मुझ पे लाज़िम दुआ़ मुहि़ब्बे रसूल

जग-मगाते चराग़ सुन्नत के
ता अबद जगमगा मुहि़ब्बे रसूल

न कभी बादे ह़ादिसा पास आए
न कभी झिलमिला मुहि़ब्बे रसूल

दाइमा तेरी नस्ले रोशन में
शम्अ़ हो शम्अ़ ज़ा मुहि़ब्बे रसूल

रहे ता रोज़े نُورُهُمْ يَسْعٰى
रोज़ अफ़्ज़ूं ज़िया मुहि़ब्बे रसूल

मुक़्तदिर तेरे नौ बरों को करे
तुझ से भी कुछ सिवा मुहि़ब्बे रसूल

तेरे साए में लह-लहाएं खिलें
तेरे गुल गुलबुना मुहि़ब्बे रसूल

मूरिसे मज्दो फ़ज़्ले आबा हो
वारिसुल अम्बिया मुहि़ब्बे रसूल

ख़ारे दर चश्मो ख़्वार दर चश्मां
दुश्मनत दाइमा मुहि़ब्बे रसूल

तुझ पे फ़ज़्ले रसूल का साया
मुझ पे साया तेरा मुहि़ब्बे रसूल

मेरा शाफ़ेअ़ हु़ज़ूरे ग़ौस में हूं
मद्ह़ का दे सिला मुहि़ब्बे रसूल

मुद्दई से मुझे बचा लें ग़ौस
दिल का दें मुद्दआ़ मुहि़ब्बे रसूल

मेरे सब काम इन से बनवा दे
ज़ाहिरा बाति़ना मुहि़ब्बे रसूल

मुझे कर दे रिज़ाए अह़मद वोह
जिस ने तुझ को किया मुहि़ब्बे रसूल

आह सद आह मैं हूं بِئْسَ الْعَبْد
मदद ऐ حَبَّذَا मुहि़ब्बे रसूल

بِئْسَ को نِعْمَ से बदलवा दे
अपने मौला से या मुहि़ब्बे रसूल

कौन मौला वोह सय्यिदुल अफ़राद
ग़ौसे हर दो सरा मुहि़ब्बे रसूल

मैं भी देखूं जो तूने देखा है
रोज़े सअ्ये सफ़ा मुहि़ब्बे रसूल

हां येह सच है कि यां वोह आंख कहां
आंख पहले दिला मुहि़ब्बे रसूल

तीनों भाई न कोई ग़म देखें
इ़श्क़े शह के सिवा मुहि़ब्बे रसूल

मेरे बेटों भतीजों को भी हो
इ़ल्मे नाफ़ेअ़ अ़ता़ मुहि़ब्बे रसूल

दीनो दुन्या की इ़ज़्ज़तें पाएं
रद रहे हर बला मुहि़ब्बे रसूल

ख़ातिमा सब का दीने ह़क़ पे करे
कल्मए त़य्यिबा मुहि़ब्बे रसूल

ख़ुल्द में ज़ेरे ज़िल्ले ग़ौसे करीम
रहें यक-जा रज़ा मुहि़ब्बे रसूल

☆☆☆

सच्ची बात सिखाते येह हैं

सच्ची बात सिखाते येह हैं सीधी राह दिखाते येह हैं

डूबी नावें तिराते येह हैं हिलती नीवें जमाते येह हैं

टूटी आसें बंधाते येह हैं छूटी नब्ज़ें चलाते येह हैं

जलती जानें बुझाते येह हैं रोती आंखें हंसाते येह हैं

क़स्रे दना तक किस की रसाई जाते येह हैं आते येह हैं

उस के नाइब इन के साहिब ह़क़ से ख़ल्क़ मिलाते येह हैं

शाफ़ेअ़ नाफ़ेअ़ राफ़ेअ़ दाफ़ेअ़ क्या क्या रह़मत लाते येह हैं

शाफ़ेए़ उम्मत नाफ़ेए़ ख़ल्क़त राफ़ेअ़ रुत्बे बढ़ाते येह हैं

दाफ़ेअ़ या'नी ह़ाफ़िज़ो ह़ामी दफ़्ए़ बला फ़रमाते येह हैं

फ़ैज़े जलील ख़लील से पूछो आग में बाग़ खिलाते येह हैं

उन के नाम के सदक़े जिस से जीते हम हैं जिलाते येह हैं

उस की बख़्शिश इन का सदक़ा देता वोह है दिलाते येह हैं

इन का हुक्म जहां में नाफ़िज़ क़ब्ज़ा कुल पे रखाते येह हैं
क़ादिरे कुल के नाइबे अक्बर कुन का रंग दिखाते येह हैं
इन के हाथ में हर कुन्जी है मालिके कुल कहलाते येह हैं
اِنَّآ اَعۡطَیۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ सारी कसरत पाते येह हैं
रब है मो'ती येह हैं क़ासिम रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं
मातम-घर में एक नज़र में शादी शादी रचाते येह हैं
अपनी बनी हम आप बिगाड़ें कौन बनाए बनाते येह हैं
लाखों बलाएं करोड़ों दुश्मन कौन बचाए बचाते येह हैं
बन्दे करते हैं काम ग़ज़ब के मुज़्दा रिज़ा का सुनाते येह हैं
नज़्ए रूह में आसानी दें कलिमा याद दिलाते येह हैं
मरक़द में बन्दों को थपक कर मीठी नींद सुलाते येह हैं
बाप जहां बेटे से भागे लुत्फ़ वहां फ़रमाते येह हैं
मां जब इक्लौते को छोड़े आ आ कह के बुलाते येह हैं
संखों बेकस रोने वाले कौन चुपाए चुपाते येह हैं

खु़द सज्दे में गिर कर अपनी	गिरती उम्मत उठाते येह हैं
नंगों बे नंगों का पर्दा	दामन ढक के छुपाते येह हैं
अपने भरम से हम हलकों का	पल्ला भारी बनाते येह हैं
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा	पीते हम हैं पिलाते येह हैं
सल्लिम सल्लिम की ढारस से	पुल पर हम को चलाते येह हैं
जिस को कोई न खुलवा सकता	वोह ज़न्जीर हिलाते येह हैं
जिन के छप्पर तक नहीं उन के	मोती मह़ल सजवाते येह हैं
टोपी जिन के न जूती उन को	ताजो बुराक़ दिलाते येह हैं
कह दो रज़ा से खु़श हो खु़श रह	मुज़्दा रिज़ा का सुनाते येह हैं

मुज़्दए रह़मते ह़क़ हम को सुनाने वाले

मुज़्दए रह़मते ह़क़ हम को सुनाने वाले
मरह़बा आतिशे दोज़ख़ से बचाने वाले

जितने अल्लाह ने भेजे हैं नबी दुन्या में
तेरी आमद की ख़बर सब हैं सुनाने वाले

मुझ से नाशाद को पहुंचा दे दरे अह़मद तक
मेरे ख़ालिक़ मेरे बिछड़ों के मिलाने वाले

दिले वीरानए आ़शिक़ को भी कीजे आबाद
मेरे मह़बूब मदीने के बसाने वाले

कोई पहुंचा न नबी रुत्बए आ़ली को तेरे
मरह़बा खुल्द की ज़न्जीर हिलाने वाले

बा'दे मुर्दन मुझे दिखलाएंगे जल्वा अपना
क़ब्रे तीरह में मेरे शम्अ़ दिखाने वाले

क़ब्र में आप को देखा तो रज़ा ने येह कहा
देखिये ! आए वोह मुर्दों को जिलाने वाले